वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

4.3

13 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

सुजुसा फर्ग,
मैल्विन कोहन

XVIII आई.एस.ए. का विश्व सम्मेलन

मार्गेट अब्राहम,
व्लादिमीर इलिन,
माइकल बुरावे

बाहरी स्रोतों से सेवाएं प्राप्त करती हुई निजता

अरली हॉकचाइल्ड का
साक्षात्कार मेडेलेना डी'
ओलिविएरा–मार्टिस द्वारा
अमृता पांडे और
डिट्टे मारिया बर्ग

आज का फ्रेंच समाजशास्त्र

ब्रूनो कजिन और दिदियर देमाजेयरे,
क्रिस्टिन मुसेलिन,
फ्रेडरिख लेबरान,
फ्रेररिख नेयरत और
रोमेन पुडल

- समाजशास्त्र एवं पर्यावरणीय परिवर्तन
- पेरु में खनन और देशज समुदाय
- अन्तर्राष्ट्रीयकरण के दौरान चेक समाजशास्त्र
- चेक गणतन्त्र में अस्थिर समाजशास्त्र
- वैश्विक संवाद का अरबी दल

सूचना पत्र

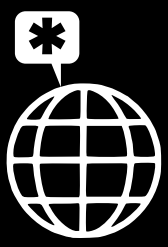

GD
अंक 4 / क्रमांक 3 / सितम्बर 2014
http://isa-global-dialogue.net

International Sociological Association

> सम्पादकीय

आई.एस.ए. मजबूती से अधिक मजबूती की ओर

इस वर्ष गर्मी में अन्तराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ की 18वीं विश्व कांग्रेस योकोहामा (जुलाई 13–19) हुई। आई.एस.ए. सचिवालय के सहयोग से जापानी स्थानीय आयोजन समिति ने इसे बड़ी कुशलता से आयोजित किया। संघ के इतिहास में सबसे बडे आयोजन में 6087 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 1100 भिन्न सत्रों के साथ कांग्रेस के व्यापक स्वरुप ने कुछ लोगों के मन में ख्याल उत्पन्न किया कि आई.एस.ए. शायद बहुत अधिक बडी हो रही है। इस मुद्धे को रुसी समाजशास्त्री व्लादामिर इलिन ने वैश्विक संवाद के लिए लिखी रिपोर्ट में विशेष रुप से उजागर किया है। योकोहामा में मार्गेट अब्राहम के नेतृत्व में नई कार्यकारिणी का निर्वाचन हुआ। वैश्विक संवाद के इस अंक में, वे सामाजिक न्याय, जो लैगिक हिंसा पर विशेष रुप से केन्द्रित है, के प्रति समाजशास्त्रीय योगदानों को उजागर करने के अपने एजेण्डा का अनावरण करती हैं।

इस अंक में हम फ्रेंच समाजशास्त्र की स्थिति पर पाँच लेख प्रकाशित कर रहे हैं। वे सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में इसकी निरन्तर उपस्थिति को रेखांकित करते हैं। उसी समय, लेखक शोध के विशेषीकरण और लालफीताशाहीकरण, सहकर्मी समीक्षा के विस्तार के द्वारा व्यवसायीकरण, अंग्रेजी में प्रकाशन करने हेतु बढ़ते दबाव के साथ स्थिर रोजगार की कमी पर भी चर्चा करते हैं। अगले दो लेखों में चेक समाजशास्त्र की तुलना में फ्रांस रोचक अन्तर प्रदान करता है। इनमें अंर्तराष्ट्रीयकरण पर दबाव और पश्चिमी समाजशाश्त्र के प्रति अभिमुखन, स्थानीय मुद्धों के प्रति जबाबदेही के विपरीत–दबावों के साथ मुठभेड़ करते हैं। यह तनाव अर्ध–छोरीय देशों, जिनसे अनुसंधान के महानगरीय केन्द्रों के प्रति अभिमुखन की अपेक्षा की जाती है, में तीव्र रुप से महसूस किया जाता है।

वैश्विक संवाद के इस अंक की शुरुआत ''एक पेशे के रुप में समाजशास्त्र'' पर दो प्रख्यात समाजशास्त्रीयों के लेखों से होती है जो अपने स्वंय के कैरियर के संदर्भ में यह लेख लिखते हैं। सुजुसा फर्ग राज्य समाजवाद की हंगरी शासन पद्धति और फिर उसकी जगह आने वाली नई शासन पद्धति का निर्धन एवं सीमान्तीकरण के संदर्भों में संघर्ष के अपने इतिहास पर चिन्तन करती है जबकि मेल्विन कोहन व्यक्तित्व एवं सामाजिक संरचना के अपने पथप्रर्दशक पार–देशीय अनुसंधान के इतिहास का वर्णन करते हैं। हम एक अन्य पथप्रर्दशक, अर्ली हॉकचाइल्ड के साथ एक साक्षात्कार भी प्रस्तुत करते हैं जो भावनात्मक श्रम और भावनाओं के वस्तुकरण से जुड़ा है और इसी थीम को आगे लेते हुए अमृता पाँड़े और डिट्टे ब्योर्ग, भारत में पाँडे के शोध विषय सेरोगेसी के नाटकीय मंचन का वर्णन करते हैं। बहुत ख्याति के साथ पूरे यूरोप में मंचित, यह सार्वजनिक समाजशास्त्र का वास्तव में नवीन प्रकार है।

मैं इस सम्पादकीय को स्वीडन, जहाँ नोर्डिक समाजशास्त्रीय संघ अपनी द्वि–वार्षिक बैठक आयोजित कर रहा है, से लिख रहा हूँ। लुंड में बड़ी संख्या में युवा समाजशास्त्री स्केण्डेनेवियन कल्याण राज्य का ह्रास, ओर प्रवास की लगातार लहरों से आने वाली चुनौतियों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श करने के लिए एकत्रित हुए हैं। स्केण्डिनेविया, विशेष रुप में स्वीडन ने, विश्व के युद्ध क्षेत्रों से भागे हुए कई लोगों को स्वीकार किया है। परन्तु जैसा शोध बतलाता है, कल्याण और नौकरियों तक पहुँच में भेदभाव से उनका सम्मिलन कुंठित हुआ है। मानवतावादी मिशन के अपने नकारात्मक पहलू हैं जिसे दर्शाने में समाजशास्त्र अग्रणी है।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 13 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

*प्रतिष्ठित हंगेरियन नीति विश्लेषण कर्ता और आलोचक, **सुजुसा फर्ग** बता रही हैं, किस प्रकार वह अर्थशास्त्र, जो कि असमानता और गरीबी के प्रश्नों का जबाब दे पाने में असमर्थ था, के परित्याग से समाजशास्त्र मे आई।*

***मैल्विन कोहन**, विशिष्ट अमेरीकी समाजशास्त्री सामाजिक संरचना और व्यक्तित्व की अपनी खोज जिसने उन्हें पार राष्ट्रीय सहयोगकर्ता के रुप में स्थापित किया, का वर्णन करते हुए।*

***मार्ग्रेट अब्राहम**, आई.एस.ए. की नई चुनी हुई अध्यक्ष, सामाजिक न्याय विशेष रुप से लैंगिक हिंसा के प्रति समाजशास्त्र की प्रतिबद्धता को मजबूती देने की अपनी योजनाओं को बता रही हैं।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Ritu Saraswat, Nidhi Bansal, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Najmeh Taheri, Saghar Bozorgi, Hamidreza Rafatnejad, AbdolKarim Bastani, Tara Asgari Laleh, Faezeh Khajezadeh.

Poland:
Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Kamil Lipiński, Przemysław Marcowski, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Adam Müller, Patrycja Pendrakowska, Zofia Penza.

Romania:
Cosima Rughiniş, Ileana-Cinziana Surdu, Telegdy Balazs, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Miriam Cihodariu, Mihai Bogdan Marian, Alina Stan, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereş.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Yonca Odabas, Günnur Ertong Attar, İlker Urlu, Zeynep Tekin Babuç, Hüseyin Odabaş.

Media Consultants: Gustavo Taniguti, José Reguera.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: आई.एस.ए. मजबूती से अधिक मजबूती की ओर **2**

समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में – परित्याग से समाजशास्त्री
सुजुसा फर्ग, हंगरी **4**

समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में – पार राष्ट्रीय सहयोगी के रूप में जीवन
मैल्विन एल कोहन, यू.एस.ए. **6**

> 18वीं आई.एस.ए. कांग्रेस

सामाजिक न्याय के प्रति समाजशास्त्र की प्रतिबद्धता को मजबूती
मार्ग्रेट अब्राहम, यू.एस.ए. **9**

योकोहामा पर एक वैचारिक दृष्टि
व्लादिमीर इलिन, रूस **12**

इमेन्युएल वालरस्टाइन को आई.एस.ए. का उत्कृष्टता पुरस्कार
माइकल बुरावे, यू.एस.ए. **15**

> बाहरी स्रोतों से

विश्व में व्याप्त भावनात्मक श्रम : अरली हॉकचाइल्ड के साथ एक साक्षात्कार
मेडेलेना ड'ओलिविरा–मार्टिन्स, स्पेन **16**

भारत में निर्मित : एक शिशु खेत से रेखाचित्र
अमृता पांडे, दक्षिणी अफ्रीका एवं **डिट्टे मारिया ब्योर्ग, डेनमार्क** **19**

> आज का फ्रेंच समाजशास्त्र

इक्कीसवीं शताब्दी के मोड़ पर फ्रेंच समाजशास्त्र
ब्रूनो कजिन एवं **दिदियर देमाजेयरे, फ्रांस** **22**

लुप्त होते अकादमिक कैरियर
क्रिस्टिन मुसेलिन, फ्रांस **24**

समाजशास्त्रीय अनुसंधान का मूल्यांकन
फ्रेडरिख लेबरान, फ्रांस **26**

बदलता समाजशास्त्र का पेशा
फ्रेडरिख नेयरत, फ्रांस **28**

'मानव विषय प्रोटोकोल' क्यों नहीं है?
रोमेन पुडल, फ्रांस **30**

> पर्यावरण को काबू में रखना

समाजशास्त्र कहाँ है? वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन एवं समाजविज्ञान
स्टुवर्ट लॉकी, आस्ट्रेलिया **32**

ताँबा, जल और भूमि : पेरू के पीड्रा आल्टा में खनन कार्य
सैंड्रा पोंटोकेरिरो, पेरू **35**

> चेक समाजशास्त्र के समक्ष चुनौतियाँ

अंतरराष्ट्रीयकरण एवं अंकेक्षण संस्कृति : चेक समाजशास्त्र का प्रकरण
मार्टिन हेजेक, चेक गणराज्य **37**

समाजशास्त्र के खतरे : चेक भूमि से टिप्पणियां
फिलिप वोस्टल, चेक रिपब्लिक **39**

वैश्विक संवाद का अरबी दल
मुनीर सैयदानी, ट्यूनीशिया **41**

> परित्याग के कारण समाजशास्त्री

सुजुसा फर्ग, इयोट्वॉस लॉरेण्ड विश्वविद्यालय, हंगरी

सुजुसा फर्ग

50 से अधिक वर्षों से सुजुसा फर्ग हंगरी के समाजशास्त्रियों एवं सांख्यिकि विशेषज्ञों के मध्य अग्रणी स्थान बनाये हुए है। चाहे राज्य समाजवाद या पुँजीवाद का दौर रहा हो, फर्ग ने सदैव असमानता, निर्धनता एवं सीमान्तता के स्वरुपों पर शोध प्रयासों से स्वयं को सम्बद्ध रखा। फर्ग ने पन्द्रह से अधिक पुस्तकें तथा सैंकडों लेख लिखे हैं। हंगरी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिक्षाविदों में से एक सुजुसा फर्ग एक कटु आलोंचक रही हैं और सामाजिक नीतियों की प्रतिबद्ध समर्थक रही हैं। इन्होने 1989 में इयोट्वॉस लॉरेण्ड विश्वविद्यालय (ईएलटीई) बुडापेस्ट में सामाजिक नीतियों का पहला विभाग खोला। जब तक इसे सन् 2011 में समाप्त नहीं कर दिया, इन्होने शोध करने वाले और साथ ही हंगेरियन अकादमी ऑफ साईन्स में ज्ञिथत बाल निर्धनता के विरुद्धबनी राष्ट्रीय नीति के स्थानीय क्रियान्वन में नेतृत्वकारी भुमिका का निवार्ह किया। हंगरी एवं उसके परे फर्ग को अनेंक मैडल्स, पुरुस्कारों एवं मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है।

1950 के दशक के प्रारम्भ में अर्थशास्त्र का पढाई करते हुए जीविका उपार्जन हेतु मैंने सामाजिक सांख्यिकीविद के रुप में कार्य प्रारम्भ किया। मुझे गष्हस्थियों के बजट सम्बन्धी सांख्यिकी आंकडों पर कार्य करने का अवसर मिला। इस नौकरी में मुझे समूचे देश के परिवारों के पास जाने का अवसर मिला तथा उनके मासिक आय–व्यय के आंकडों की प्रक्रिया के परिक्षण का कार्य करना पडा। उन परिवारों की क्या आय है, आय के साधन क्या हैं, वे क्या खाते हैं, अपनी संतानों के लिए वे क्या खरीदते हैं जैसे सवालों के तथ्यों को मुझे संग्रहित करना पडा। मेरा यह अनुभव अर्थशास्त्र के अध्ययन चाहे मार्क्सवादी हो या अन्य कोई, की तुलना में कहीं अधिक रुचिकर था। अतः मैने अर्थशास्त्र का परित्याग किया और उस पक्ष से जुडी जो लोगों एवं समाज के साथ घनिष्ठ रुप से जुडा था।

मैंने गृहस्थियों के आंकडों का विशलेषण प्रारम्भ किया और जल्दी ही यह पाया कि ये आकडें जनता को गैर–विचारधारायी (अ–राजनितिक) तरीकों से यह बता पानें में सहायक होंगे कि समानता की सरकारी विचारधारा एवं दैनिक जीवन की वास्तविकता के मध्य अन्तःविरोध व विरोधाभस को बताने में सहायक होगें। हंगरी के सांख्यिकी कार्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष अत्यन्त लचीले थे साथ ही स्वतन्त्र प्रकृति के थे – यद्यपि आज इस पर विश्वास करना कठिन है। उन्होंने 1956 के बाद ''सामाजिक स्तरीकरण'' के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण (20,000 गृहस्थियों का) की अनुमति दी (शब्दों का तब राजनीति में व्यापक एवं प्रतीकात्मक महत्व था। जबकि ''सामाजिक वर्ग'' को केवल आधिकारिक अमान्य विचारधारा के अलावा स्वीकृति नहीं थी। हम निम्न आय के लोगों का अध्ययन तो कर सकते थे पर निर्धनता का उल्लेख नहीं कर सकते थे। सामाजिक सांख्यिकी को वैध रूप में स्वीकृति मिली थी पर 1960 के दशक तक समाजशास्त्र स्वीकार्य नहीं था।)

सामाजिक स्तरीकरण पर प्रतिवेदन विभिन्न ''सामाजिक–आर्थिक'' समूहों की विशेषताओं को इंगित करता है तथा ''निम्न आय'' के लोगों की स्थिति को विवेचित करता है। इस में अन्तिर्निहित सिद्धान्त यह दर्शाता है कि शक्ति, ज्ञान एवं स्वामित्व (इसी क्रम से) के असमान वितरण की सम्बद्धता संरचना की दृष्टि से महत्वपूर्ण समूहों को आधार प्रदान करती है।

> >

तब से जो मैने किया उसमें सामाजिक असमानताएं हमेशा केन्द्र में होती हैं। एक सीमा तक सांख्यिकीय प्रदत्तों को स्वरूप देने के बाद अनेक प्रश्न उभरे। प्रारम्भ में मेरे सम्मुख यह केन्द्रीय प्रश्न था कि जन्म से शिशु के भविष्य को सुनिश्चित करने वाली असमानता को किस प्रकार कम किया जाऐ? हंगेरियन विज्ञान अकादमी के समाजशास्त्र संस्थान, जिसकी स्थापना सन् 1963 में हुई, में हमने विद्यालय का एक ऐसी सम्भावित प्रणाली के रुप में अध्ययन किया जो बच्चों के लिए अवसरों की समानता को स्थापित करता है। ये अध्ययन, यद्यपि हमारे पूर्ववर्ती अनुसंधानों से घनिष्ठ रूप से जुड़े थे, उस दौर की ''युग चेतना'' से गहन रूप में प्रभावित थे विशेषतः बोर्दियू के विचारों से । समूचे यूरोप में समाज वैज्ञानिकों को आशा थी कि शिक्षा असमानता को कम करने में सहायक हो सकती है। अतः 1960 के दशक के अन्त से प्रारम्भ हो प्राथमिक, माध्यमिक एवं व्यावसायिक (वोकेशनल) विद्यालयों, विद्यालयों के परीक्षणा परीणाम एवं बच्चों के विद्यालयी करियर के साथ ही शिक्षकों की स्थिति एवं उनके दृष्टिकोण से सम्बद्ध अनेक अध्ययन हमने किये। लेकिन ये सभी आशायें पूर्णतया गलत सिद्ध हुई। हमारे अध्ययनों ने दर्शाया कि यद्यपि विद्यालयी संरचना बदली है पर विद्यालय शक्तिहीनता एवं निर्धनता के सामाजिक हस्तान्तरण को वैधता प्रदान करने के प्रमुख साधन बने हुए हैं।

हमारे प्रश्न इसी क्रम में जारी रहे। क्या कोई ऐसा अभिकरण है जो सामाजिकीय प्रवृत्तियों को परिवर्तित कर सके? स्वाभाविक है कि अनुसंधान का अगला विषय राज्य या अधिक सटीकता से कहें तो राज्य की क्रियाएं जो संरचनात्मक असमानताओं को प्रभावित करती हैं। इसमें सामाजिक नीतियों व केन्द्रित पुनर्वितरण को भी सम्मिलित किया गया था। अतः 1970 के दशक के प्रारम्भ से हमने हंगरी की सामाजिक नीति का अन्वेषण प्रारम्भ किया। सौभाग्यवश 1966 में मुझे समाजशास्त्र के विश्व सम्मेलन में सहभागिता करने का अवसर मिला जहाँ मुझे हरबर्ट जेन्स, पीटर टाउनसेण्ड, हैनिंग फिरिस, एस एम मिलर एवं अन्य समाज वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर मिला। ये सब बाद में निर्धनता, समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति की आइ एस ए की शोध समिति के संस्थापक बने। इस मित्रता ने मेरे लिए रिचार्ड टिटमस के योगदानों, निर्धनता अनुसंधान की दुनियां एवं सामाजिक नीतियों के अध्ययनों के द्वार खोल दिये।

हमने आनुभाविक एवं ऐतिहासिक संदर्भों के साथ संरचनात्मक परिवर्तनों एवं निर्धनता पर अपने अध्ययन जारी रखे और हमने हंगरी की सामाजिक नीति का परीक्षण करना प्रारम्भ किया। हमने सामाजिक संरचना से सम्बद्ध समाजशास्त्रीय उपागम एवं (ब्रितानी) सामाजिक नीति से सम्बद्ध समाजशास्त्रीय उपागम का समन्वय किया और हम शीघ्र ही सामाजिकीय नीति की अवधारणा पर पहुंच सके जिसने सामाजिक नीति के अध्ययन को संरचनात्मक परिवर्तन के वृहद विश्लेषण से जोड़ा। 1985 में इटाबास लारेण्ड विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के सहयोग से हमने सामाजिक नीति का स्नातक कार्यक्रम प्रारम्भ किया–यद्यपि इसे ''ऐतिहासिक समाजशास्त्र'' कहा गया क्योंकि सामाजिक नीति को अभी तक ''विद्वता'' की वस्तु के रुप में बराबर मान्यता नहीं थी।

1989 में हंगरी में हुए व्यवस्थात्मक परिवर्तन के अवसर पर सामाजिक नीति एवं सामाजिक कार्य विभाग की स्थापना हुई। नवीन पूंजीवाद में वे ही शक्तियाँ सामाजिक संरचना को आकार देती है पर, जैसा कि मैं आगे स्पष्ट करूंगी, उन शक्तियों के महत्व का क्रम बदल गया है। स्वामित्व एवं शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हुई है, ज्ञान की भूमिका में एक सीमा तक ह्रास हुआ है तथा श्रम बाजार से जुड़े सम्बन्ध (रोजगार तक पहुंच, रोजगार की स्थिरता एवं अस्थिरता) पूर्व में उल्लेखित तीन संरचनात्मक शक्तियों के समान ही महत्व पूर्ण बन गये हैं। मैंने कोशिश की कि बोर्दियू की ''सामाजिक पूंजी'' एवं ''हेबिटास'' की अवधारणाओं एवं अभिकरणों की सक्रियता को संरचनात्मक परिवर्तन के अवधारणातमक प्रारूप में सम्मिलित कर सकूं पर इसमें मुझे आंशिक सफलता ही मिली। लेकिन सामाजिक एवं व्यक्तिगत/निजी सम्बद्धताओं के महत्व में वृद्धि हो रही है, शायद यह केवल वर्तमान हंगरी में ही नहीं हो रहा है। ये सम्बद्ध ताएं अन्य पूंजियों की रचना में एवं वितरण के क्षेत्र के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है। 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद हंगरी में असमानता, निर्धनता, विशेषतः बाल निर्धनता एवं विशिष्ट रूप से गहन बाल निर्धनता में वृद्धि हुई है।

सेवानिवृत्ति के उपरान्त बाल निर्धनता पर मेरा कार्य जारी रहा। मैंने अपने सहयोगियों के समूह के साथ एक राष्ट्रीय कार्यक्रम Combat Child Poverty 2007–2032 प्रारम्भ किया। 2008 के मध्य में हंगरी की संसद ने इस कार्ययोजना को स्वीकृति दी और निध र्न सूक्ष्म क्षेत्रों में इस कार्य योजना के क्रियान्वयन से कुछ सफलता भी मिली। 2011 में इस समूह को भंग कर दिया गया। राष्ट्रीय कार्य योजना का एक हल्का सा प्रारूप आज भी अस्तित्व में है पर हंगरी की नीतियों सम्बन्धी बहस में इसकी अब उपेक्षा की जाती है। 2010 से सरकारी नीतियों में इरादतन गरीब विरोधी एवं मध्य वर्ग के पक्ष के राजनीतिक आग्रह स्पष्ट दिखाई देते हैं जिसमें बाल–विरोधी विशेषताएं सम्मिलित हैं। प्रगतिशील कर प्रणाली के स्थान पर समतल कर प्रणाली को स्थापित किया गया है, सामाजिक सहायता को कम कर दिया गया है और धीरे धीरे इसे परिस्थितिजन्य बनाया जा रहा है, अपराधियों के दायित्व की आयु न्यूनतम आयु को 14 वर्ष से घटा कर 12 वर्ष कर दिया गया है, विद्यालयों में अनिवार्य उपस्थिति की आयु को 18 वर्ष से घटा कर 16 वर्ष कर दिया गया है। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

अतः यद्यपि मैं एक असमानतामूलक राज्य समाजवाद की सामाजिक आलोचक थी (आप अपनी समझ के आधार पर इस व्यवस्था को, ''साम्यवाद'' के अलावा कुछ भी कह सकते हैं क्योंकि वह पूर्णरूपेण हालांकि व्यापक रूप में फैला हुआ एक गलत शब्द है,) आज भी मैं वर्तमान की साहसी नई दुनियां की आलोचक के रुप में बौद्धिक जागरण की त्रिमूति के प्रति उन्हीं मूल्यों के अनुसार चल रही हूं। पूर्ववर्ती व्यवस्था की समाप्ति के उपरान्त मुझे यह पूर्ण रूपेण अहसास हुआ कि असमानताओं के अध्ययन के साथ साथ हमें युद्ध–पूर्व की असमानताओं के कम होने की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना चाहिए। आय, धन और कुछ हद तक ज्ञान की असमानताओं को प्रभावी रूप से कम कारने की सीमा, कीमत और लघु एवं दीर्घकालीन परिणाम क्या थे? इन प्रश्नों पर विचार आवश्यक है। इन प्रश्नों का उत्तर दिये बिना यह बताना कठिन है कि राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तनों के बाद क्या कुछ घट रहा है (अभी यहां इसे अनुत्तरित छोड़ते हैं)

हाल के दशकों में मैंने अनुंसधान, अध्यापन एवं क्षेत्रीय अध्ययन को परस्पर एक दूसरे से मिलाया है। साथ ही ''नागरिकीय समाज'' में मेरी सहभागिता बढ़ी है। मेरी यह वैचारिक स्थापना धीरे धीरे मजबूत हो रही है कि एक शक्तिशाली नागरिकीय समाज के बिना राज्य एवं बाजार दोनों भटक जायेंगे। वर्तमान वास्तविकताओं ने मेरी इस वैचारिक स्थापना को मजबूती से समर्थन दिया है एवं उसकी पुष्टि की है पर हंगरी का नागरिकीय समाज अभी काफी कमजोर है और बड़ी शक्तियों के सम्मुख अपनी उपस्थिति को व्यक्त नहीं कर पा रहा हैं। ■

सभी पत्राचार सुजुसा फर्ग <fergesp@t-online.hu> को प्रेषित करें।

> पार राष्ट्रीय-सहयोगी के रूप में जीवन

मैल्विन एल कोहन, जॉन हापकिन्स विश्वविद्यालय, अमेरिका एवं आई. एस. ए. की कार्यकारी परिषद (1982–1990) के सदस्य

मैल्विन कोहन

मैल्विन कोहन सामाजिक संरचना एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित अध्ययनों के क्षेत्र में अग्रणी हैं। उनकी ख्याति मुख्यतः उनकी क्लासिक पुस्तक 'क्लास एण्ड कन्फर्मिटी' (1969 एवं 1977 में इसका विस्तार) के कारण हैं जो कि वर्ग एवं व्यक्तित्व के मध्य घनिष्ठ संबंधों को प्रस्तुत करती है। सर्वेक्षण प्रदत्तों की सारगर्भित विश्लेषणात्मक शैली के आधार पर कोहन का मत है कि कार्य में स्वायत्तता (निगरानी, निर्देशन, कार्यों की जटिलता एवं कार्य के विभिन्न रूपों से स्वतन्त्रता) एवं आन्तरिक निर्देशन के स्तरों के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। इसके विपरीत रूटीन श्रमसाध्य एवं नीरस कार्य को समाहित करने वाले पेशे, व्यक्तियों के व्यवहार में संरूपता उत्पन्न करते हैं। एक व्यापक सामूहिक विश्लेषण में कोहन बताते हैं कि किस प्रकार यह सम्बन्ध दो उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अन्तः निर्देशित व्यक्तित्व वाले लोग कार्यों, जो कि बहुआयामी प्रकृति के होते हैं, का सफल सम्पादन करते है साथ ही उनका व्यक्तित्व भी ऐसे कार्यों से आकार प्राप्त करता है। वे बताते हैं कि व्यक्तित्व किस प्रकार जीवन के बहुत से पहलुओं को प्रभावित करता है। माता पिता की भूमिकाओं के स्वरूप एवं व्यवहारों का अन्तःपीढ़ी हस्तान्तरण के पक्ष ही केवल इससे प्रभावित नहीं होते। यह खोजने के लिए कि ये सम्बन्ध कितने मजबूत हैं, कोहन पार–राष्ट्रीय तुलनाओं, विशेषतः पूंजीवादी एवं समाजवादी देशों के मध्य, और फिर नाटकीय सामाजिक परिवर्तन से गुजरने वाले देशों की तुलना करने वाले पक्के व्यवहारिक बन गये। उनकी अनेक पुस्तकों एवं लेखों में इस अनुसंधान परियोजना का अनुकरण एवं विस्तार देखने को मिलता है। कोहन को अपने अनुसंधान के लिए अनेक रूपों में सम्मानित किया गया है। उन्हें अमेरिकन अकादमी ऑफ आर्ट्स एण्ड साइंसेज के लिए निर्वाचित किया गया उन्हें अमेरिकन समाजशास्त्र एसोशियेशन का अध्यक्ष चुना गया। वे आई एस ए के उत्साही समर्थक बने तथा इसकी कार्यकारी परिषद (1982–1990) के सदस्य रहे और उन्होंने अपने प्रभाव का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सामूहिक शोध प्रयासों के लिए किया।

> >

एक आनुभविक समाजशास्त्री के रूप में छः दशकों से भी अधिक अवधि के पश्चात, मेरे विचार में गहन एवं विस्तृत प्रकृति सहित सहयोगात्मक शोध मे सहभागिता मुझे अपने अन्य सहकर्मियों से सैद्धान्तिक रुप से भिन्नता प्रदान करती है। विशेष रुप से उन चार दशकों में जब मैं विशुद्ध तौर पर पार राष्ट्रीय रहा हूँ। व्याख्या बहुत सरल है। मेरी सैद्धान्तिक समस्याओं के बारे में अनुभवजन्य प्रश्न पूछने में विषेश रूचि है। ऐसा विशेष तौर पर पार राष्ट्रीय सामान्यताओं के साथ होता है। क्या अमेरीका में सामाजिक संरचना एवं व्यक्तित्व के मध्य सम्बन्धों के बारे में हमारे दिलचस्प निष्कर्ष पश्चिमी यूरोप के लोकतन्त्रों के लिए समान रूप से सच हैं? यदि हाँ तो पूर्वी यूरोपीय साम्यवादी देशों के विषय में इन निष्कर्षों की क्या स्थिति है? यदि ये निष्कर्ष सोवियत संघ के लिए सच हैं तो चीन के विषय में इनकी क्या स्थिति है? एक और देश, एक और भाषा, एक और संस्कृति। लेकिन मैं केवल अंग्रेजी भाषा में समझ रखता हूं, थोड़ी बहुत जर्मन भाषा आती है। तो फिर इसका समाधान क्या है? समाधान है द्विभाषायी सहयोगात्मक संयुक्त अध्ययन।

यह सब किसी घटनावश हुआ। मैरीलैण्ड में खण्डित मनोविदलता विषय पर पोस्ट डाक्टरल अध्ययन को वाशिंगटन डी सी में सामाजिक संरचना एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी अध्ययन तक विस्तार दिया गया। इस विषय पर एक अप्रत्याशित आलेख ने मेरे साथी, कार्मी स्कूलर को प्रेरित किया कि हम अपने अध्ययन के निष्कर्षों/दावों को अमेरिका के विभिन्न भागों में नागरिकीय व्यवसायों में कार्यरत लोगों पर एक अध्ययन कर क्यों न परखें। यह वास्तव में पारस्परिक सहयोग मूलक संयुक्त अनुसंधान का मेरा पहला अनुभव था। यह अध्ययन मेरे लिए अत्यन्त उत्तेजनामूलक सिद्ध हुआ। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि दो दिमाग एक दूसरे के लिए इतने पूरक होंगे।

परन्तु यह अध्ययन अभी भी पार राष्ट्रीय नहीं था। पार राष्ट्रीय (क्रास नेशनल) सहयोग के साथ जुड़ा मेरा प्रथम अध्ययन टोरिनो, इटली के लियोनार्ड पीयरलिन के सहयोग के साथ हुआ जिन्होंने वाशिंगटन डी. सी. पर हुए मेरे अध्ययन के निष्कर्षों की तुलना की व उनका विस्तार किया। पर यह अध्ययन भी पूर्ण रूपेण संयुक्त/सहयोगमूलक नहीं था क्योंकि इसमें मेरे निष्कर्ष का एक महत्व पूर्ण भाग, जो अभिभावकों के सामाजिक वर्ग (जो मोटे रूप में मापित की गयी थी) का स्वनिर्देशन के अभिभावकीय मूल्यांकन के सतत सम्बन्धों से जुड़ा था, ही इसमें तुलना व विस्तार का भाग बना था। पर यह अध्ययन वास्तव में पार राष्ट्रीय (क्रास नेशनल) प्रकृति का था।

इसके उपरान्त हमें एक निर्णायक अवसर मिला। पोलेण्ड के प्रसिद्ध मार्क्सवादी समाजशास्त्री व्लोदिमर्ज वैसोलास्की ने मुझे कुछ व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया। मैं वहां प्रसन्नता के साथ पहुंचा और एक सप्ताह के प्रवास का मैंने भरपूर आनन्द लिया और तब वैसोलास्की (कार्ल मार्क्स की एक तस्वीर के नीचे) ने मेरे सम्मुख एक प्रस्ताव रखा कि मैं अपने अमेरिकन अध्ययन के समान यहां भी अध्ययन करूं। पोलेण्ड का अध्ययन उनका रहेगा, वे मुझे इसका पारिश्रमिक देंगें; उनके पास आंकडों का दायित्व होगा; वे निर्णय करेंगें। उनके साथी कैजीमिराज (मेसिक) स्लोमसेन्स्की इस अध्ययन का संचालन करेंगे और मैं इसमें ''तकनीकी सलाहकार'' के रूप में सहयोग करूंगा।

यह प्रस्ताव अन्यन्त सम्मोहक था। मेसिक ने और मैंने पार सांस्कृतिक विश्लेषण हेतु पद्धति को विकसित करने के लिए अवधारणाओं के अर्थ एवं मापन पर गहन रुप से काम किया। ये अवधानरणाऐं अभी तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ही काम में ली गई थी। अब हमें दोनों पूंजीवादी और समाजवादी देश में सामाजिक वर्ग और सामाजिक स्तरीकरण को मापने के लिए समान पद्धतियों को अपनाना होगा। ऐसा हमने अपने पोलिश सहकर्मियों की मदद से किया। इन्होने अपना अधिकांश समय ऐसी पद्धति को विकसित करने में लगाया और वे अपने प्रयासों की सराहना से काफी खुश थे।

दो पुस्तकें एवं अनेक लेखों के बाद हमने अनेक साक्ष्यों के आधार पर यह बताया कि अमेरिका एवं पोलैण्ड के मध्य सामाजिक संरचना एवं व्यक्तित्व के पक्ष महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हैं पर इसके अनेक हिस्से न केवल समान हैं अपितु परस्पर सम्बन्धित भी हैं। दोनों देशों में अधिक विकसित सामाजिक वर्ग एवं लोग उच्च सामाजिक प्रस्थिति को व्यक्त करते हैं एवं बौद्धिक लचीलेपन के उच्च स्तर का प्रदर्शन करते हैं। उनमें स्व–निर्देशनता का आधिक्य एवं सुखद जीवन का एक मजबूत भाव पाया जाता है। ज्यादा विकसित/सुविधा सम्पन्न लोग जटिल कार्यों में ज्यादा रूचि लेते हैं उनकी निगरानी कम रखी जाती हैं तथा नियमित प्रकृति के रूटीन कार्य वे कम सुविधा सम्पन्न लोगों की तुलना में कम करते हैं।

इस बीच में सौभाग्यवश केन इचि टोमिंगा एव अतसुशी नाओई ने इस अध्ययन में जापान को सम्मिलित कर दिया और अंततः हमें अमेरिका, पोलैण्ड एवं जापान के मध्य तुलना करने का अवसर मिला। सामाजिक वर्ग एवं स्तरीकरण को लेकर इन देशों के मध्य विभेद थे लेकिन इन देशों के मध्य समानताएं भी आश्चर्यजनक प्रकृति की थी। हालांकि अमेरिका एवं पोलैण्ड के शारीरिक श्रम वाले श्रमिकों के मध्य तनाव के स्तरों को लेकर विभेद बहुत था। इस विभेद के मध्य में जापान का स्थान आता था।

लेकिन जैसे मैसिक और मैंने पोलैण्ड के नागरिकों को निरंकुश शासन को चुनौती देते हुए देखा, हमने उनसे एक नया प्रश्न पूछाः रेडीकल सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया–जैसे कि पोलैण्ड एक लोकतान्त्रिक एवं निर्णायक रूप से कैथोलिक देश बन गया– किस प्रकार हमारे तुलनात्मक तथ्यों को परिवर्तित करगी? हमारे तीन प्रतिबद्ध पॉलिश सहयोगियों–क्रस्टिना जेनिका, बोगडान माक एवं वोजइसिच जाबो रोवस्की ने हमारे समूह में प्रवेश किया। इसके उपरान्त हमने न केवल रोजगार प्राप्त पुरुषों के व्यक्तित्वों एवं सामाजिक–संरचनात्मक स्थितियों का अन्वेषण किया अपितु रोजगार प्राप्त महिलाओं को भी और ऐसे अनेक पोलिश पुरूषों एवं महिलाओं के व्यक्तित्वों का भी अध्ययन किया जिनकी नौकरी पोलैण्ड में पूंजीवाद के आने के बाद छिन गयी थीं।

लेकिन पूर्वी यूरोप के बचे कम्युनिस्ट देशों का क्या हाल था? यह कभी आसान नहीं था (अपितु सम्भव ही नहीं था) कि पूर्वी यूरोपीय देशों का गम्भीरता से अध्ययन किया जाए। मैंने वास्तव में ऐसी कोशिश कभी नहीं की। लेकिन अब मैं रूस का अध्ययन करने का अवसर तलाश रहा था और मैंने एक प्रमुख सोवियत समाजशास्त्री ब्लादिमीर यादोव से एक संयुक्त अध्ययन हेतु बात की। उन्होंने निराशा के साथ उत्तर दिया कि (यहां तक कि गोरबाचेव के शासन में) यह विषय अत्यन्त संवेदनशील है। परन्तु उन्होंने मेरा परिचय उक्रेन के दो समाजशास्त्रियों से कराया जो मेरे लिए पूर्णरूपेण उपयुक्त थे। उनमें से एक सिद्धान्तकार एवं समाज मनौवैज्ञानिक था जिनका नाम वेलिरिया खेमेलको था जबकि दूसरे व्लादिमिर पेनिओटो पद्धतिशास्त्र के विशेषज्ञ थे। जब तक हमने अपने अनुसंधान प्रारूप की रचना की, सोवियत संघ का विघटन हो गया। अतः खेमेलको एवं पेनिओटो ने सोवियत संघ के इतिहास में उक्रेन में प्रथम गम्भीर सर्वेक्षण अनुसंधान को आधार दिया। तब से अनेक

>>

महीनों तक मैं वारसा एवं कीव के मध्य चक्कर लगाता रहा ताकि पोलिश एवं उक्रेन के मध्य अध्ययनों का संयुक्त रूप उभर सके।

पोलैण्ड एवं उक्रेन के मध्य तुलना से हमने बहुत कुछ सीखा। विशेषतः यह कि दोनों देश अमेरिका एवं जापान के समान बन रहे हैं (हालांकि यह भिन्न भिन्न क्षेत्रों में है)। श्रमिकों की स्थिति दुखद है। पूंजीवाद ने रोजगार की कार्यस्थितियों में तो कोई बदलाव नहीं किया है परन्तु नियोक्ता एवं श्रमिकों के मध्य सम्बन्ध बदल गये हैं। हमारे अध्ययन के समाप्त होने तक पोलिश श्रमिकों एवं अमेरिकन श्रमिकों के मध्य विभेद नहीं किया जा सकता था तथा उक्रेन के श्रमिक इस संदर्भ में बहुत पीछे नहीं थे। जब तक पोलैण्ड के लोगों ने सोचा कि उन्होंने अपना शोध समाप्त कर लिया है, उक्रेन के लोगों का मत था कि उन्होंने तो शोध प्रारम्भ किया है। उक्रेन में विभिन्न घटनायें धीमी गति से उभर रही थीं और वहां अध्ययनों की और आवश्यकता थी। अतः उक्रेन के लोगों ने, जिन्होंने अपने सर्वेक्षण की आय से अपने अनुसंधान को पोषित किया। इस क्रम में उन्होने एक फालो–अप अध्ययन किया जिसका मैंने स्वार्थवश विश्लेषण किया।

उक्रेन का यह आगामी क्रम अध्ययन एक लँबवत अध्ययन के लिए सही अर्थों में अन्तः खण्डीय विश्लेषण का विस्तार बन गया। यह इसलिये सम्भव हुआ कि मूल अध्ययन का भाग रहे उत्तरदाताओं से पुनः साक्षात्कार लिया गया। उन तीन वर्षों में हमें उक्रेन में व्यक्तित्व में असामान्य रूप से अधिक अस्थिरता के तथ्य प्राप्त हुए जिनकी तुलना सिवाय (यह असामान्य संयोग है) माली (और सम्भावित रूप से अफ्रीका के कुछ भाग), जहां कार्मी स्कूलर को समान परिस्थितियों के कारण समान तथ्य प्राप्त हो रहे थे, के अतिरिक्त अन्य किसी देश से नहीं की जा सकती थी। इसके बावजूद इस अवधि के दौरान उक्रेन में कार्य एवं व्यक्तित्व के मध्य सम्बन्ध समान ही रहे। यद्यपि सम्बन्धों के महत्व का ह्रास हुआ है। हमारा कार्य–कारणता प्रारूप व्यक्त करता है कि सामाजिक अस्थिरता की चरम स्थितियों में व्यक्तित्व का सामाजिक संरचनात्मक पदों पर कम ही प्रभाव होता है लेकिन सामाजिक संरचनात्मक पद व्यक्तित्व पर उतना ही मजबूत प्रभाव डालते हैं जितना कि सामाजिक स्थिरता की स्थिति में डालता है।

परन्तु यह अंत नहीं था। मेरी लम्बे समय से चीन में रूचि थी तथा मेरी पत्नी ने मुझमें यह रूचि बनाई रखी। हम लोग साथ साथ चीन यात्रा पर गये, हालांकि वह एल्जाइमर बीमारी (भूलने की बीमारी) से ग्रस्त थी और मैंने प्रत्येक भाषण में क्या कहा, भूल जाती थी और अगले विश्वविद्यालय में फिर मेरे भाषण से प्रसन्न होती थी। मेरी पत्नी की हार्दिक इच्छा थी कि मैं चीन का अध्ययन करूं पर ऐसा होते हुए देखनें के लिए वह इस दुनिया में नहीं थी। सही सहयोगी/सहयोगियों का अध्ययन हेतु साथ मिलना बहुत कठिन था। मुझे इस तथ्य का पूर्णरूपेण अहसास था कि अध्ययन के दौरान मैं सहयोगियों पर कितना निर्भर रहूँगा। पर मेरा सौभाग्य था कि मुझे लू लू ली एवं उनके साथी वीडांग वांग का सहयोग मिला। मैंने एक स्नातक विद्यार्थी, यिन यू को भी नियुक्ति किया जिसने तत्काल ही एक सच्चे सहयोगी के रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया। वीडांग ने प्रदत्तों के संकलन का कार्य किया। उन्होंने वास्तव में असम्भव को सम्भव कर दिखाया। वीडांग ने लगभग साथ साथ पांच चुने गये नगरों में पांच अलग अलग सर्वेक्षणों का संचालन कर दिखाया। प्रत्येक नगर में एक वरिष्ठ संकाय सदस्य का साथ लिया एवं साक्षात्कारकर्ता के रूप में स्थानीय विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों का सहयोग लिया। इसके विपरीत यिन एक दृष्टि से नौसिखिया था परन्तु आवश्यकतानुसार उसने बहुत तेजी से सीखा।

चीन में हुए अनुसंधान ने विभिन्न देशों के अध्ययन से उभरे परिणामों को पुनः प्रमाणित किया परन्तु कारण समान नहीं थे। अन्य देशों के लिए वर्ग एवं स्तरीकरण की सम्बद्धता और इनका रोजगार की स्थितियों जैसे कार्य की जटिलता, निगरानी की निकटता, एवं रूटीन प्रकृति का कार्यतन्त्र मुख्य अवयव थे परन्तु चीन में ये कार्य स्थितियाँ इन सम्बन्धों की बहुत कम व्याख्या कर पाती हैं। चीन में एक विश्लेषण यह भी था कि स्वरोजगार करने वाला सामाजिक वर्ग विपथगामी कहा जाता है। उनके लिये एवं केवल उनके लिए कार्य स्थितियाँ व्यक्तित्व के लिए असंगत हैं, लेकिन क्यों? मेरी धारणा है, जो बीजिंग के पीछे के हिस्सों में बने गलियारों में घूमते हुए विकसित हुई, कि इन लोगों का जीवन यापन अर्थव्यवस्था के किनारे पर कहीं न कहीं आश्रित था और उनके जीवन की निर्धनता महत्व रखती थी। ये अनुमान बहुत अच्छे थे पर मेरा कौन विश्वास करेगा जबकि मैं चीनी भाषा भी नहीं बोल सकता था। सौभाग्यवश मेरे दो मुख्य सहयोगियों ने मेरे उत्तरों का समर्थन करने वाले आंकडे उपलब्ध करा दिये। बहुत पहले वीडांग ने उत्तरदाताओं की गृहस्थी के पंजीकरण के दौरान एक प्रश्न सम्मिलित किया था जिसे 'हुकोउ' प्रस्थिति से जोड़ा जाता है। इससे संकेत मिलता था कि क्या उत्तरदाताओं ने कार्यालयी पंजीकरण में स्वयं को ग्रामीण या नगरीय बताया है। तब एक दिन यिन मेरे कार्यालय में भागते हुए आये। वे अपने साथ प्रसिद्ध चीनी विचारक जिओगोग वू और समाजिक स्तरीकरण के अमेरिकन विद्यार्थी, डोनेल्ड ट्राइमन के संयुक्त रुप से लिखे दो लेख ले कर आये। यू एवं ट्राइमन ने उन व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया था जिनमें मेरी अध्ययन रूचि थी; ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवासी बन कर आये लोग नगर में आने के उपरान्त अपनी ग्रामीण जीवन शैली (हुकाउ) से पृथक हो पाने में असमर्थ थे। नियमित अर्थव्यवस्था के अन्दर वे अभागे लोग नौकरी नहीं प्राप्त कर सके और न ही उन्हें उपयुक्त आवास एवं उनके बच्चों को विद्यालय उपलब्ध हो सका।

यहां हमारी असंगतता का हमें उत्तर मिला। ये उत्तर मुझे मेरे दो सहयोगियों ने प्रदान किये। एक सहयोगी वह थे जिन्होंने गृहस्थी के पंजीयन के विषय में सर्वेक्षण में प्रश्न किया था तथा दूसरे सहयोगी वे थे जिन्हें मुझे पत्रिका में प्रकाशित दो महत्वपूर्ण लेख लाकर दिये थे जिन्हें चीनी विचारकों ने सम्भवतया नहीं पढ़ा था। और मेरे ये दो चीनी सहयोगी अन्य देशों से सम्बन्धित मेरे उन सहयोगियों से भिन्न नहीं थे जिनके साथ मैंने अध्ययन किये थे। मेरे यह सभी सहयोगी परिश्रमी, सजग, चिन्तनशील, गम्भीर एवं मदद करने वाले थे। मुझे इन सभी के साथ कार्य करने प्रसन्नता की अनुभूति हुई। ■

सभी पत्राचार मैल्विन कोहन <mel@jhu.edu> को प्रेषित करें।

> सामाजिक न्याय के प्रति समाजशास्त्र की प्रतिबद्धता को मजबूती

मार्ग्रेट अब्राहम, होफस्ट्रा विश्वविद्यालय, अमेरिका एवं आई एस ए अध्यक्ष, 2014–2018

मार्ग्रेट अब्राहम, आई.एस.ए. की नई अध्यक्ष, योकोहामा में अपना स्वीकृति भाषण देते हुए। चित्र कायो सावागुची द्वारा।

आई. एस. ए. के समाजशास्त्र की 18वीं विश्व (विश्व सम्मेलन) हेतु योकोहामा जापान में विश्व के 95 देशों के 6,087 समाजशास्त्री एवं समाज वैज्ञानिक गत जुलाई 2014 को एकत्रित हुए। हम इस विशाल सफल आयोजन के लिए कोची हेसीगावा की उत्कृष्ट अध्यक्षता वाली जापान की स्थानीय आयोजन समिति, रेक्वील सोसा की अध्यक्षता वाली आई एस ए कार्यक्रम समिति, आई. एस. ए. के हमारे उपाध्यक्ष टीना उयास, राबर्ट वेन क्रिकिन एवं जेनीफर प्लाट, अनुसंधान समितियों के कार्यक्रम समन्वयक, कार्यकारी समूहों एवं विषयों (थीम्स) से सम्बद्ध समूहों को बधाई एवं धन्यवाद देते हैं। आई एस ए की कार्यकारी सचिव इजाबेला बारलिंसका को विशेष धन्यवाद, जिनकी पेशेवर कुशलता की छाप सम्मेलन की संगठनात्मक क्रियाशीलता में व्यक्त होती रही। साथ ही हमारी पेशेवर कान्फ्रेन्स प्रबन्धन टीम कानफेक्स को भी विशेष धन्यवाद।

> >

उत्तराधिकार में सत्ता के प्रतीक के रुप में माईकल बुरावे द्वारा दी गई दो समुराई तलवारें मार्ग्रेट अब्राहम पकड़ते हुए, लेकिन बाहर जाते हुए अध्यक्ष को मारने से इन्कार करती है।
चित्र व्लादिमिर इलिन द्वारा।

सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण पक्ष जो इस सम्मेलन की निर्विवाद सफलता हेतु उत्तरदायी है वह है आई एस ए के अध्यक्ष माइकल बुरावे की नेतृत्व क्षमता एवं उनकी गत्यात्मकता की शैली। माइकल बुरावे ने ''फेसिंग एन अन्इक्वल वर्ल्ड : चेलेन्जेज फार ग्लोबल सोश्यालजी'' (एक असमान विश्व से सामना : वैश्विक समाजशास्त्र के लिये सम्मुख चुनौती) विषय को कांग्रेस के लिए विमर्श के रूप में चुना। उन्होंने पूर्ण दक्षता के साथ नागरिकीय समाज के सम्मुख उभरी चुनौतियों की तरफ ध्यान आकर्षित किया तथा बढ़ते हुए निजीकरण एवं तिजारतीकरण के कारण हमारे विषय के सम्मुख उभरे संकटों को रेखांकित किया। माइकल को ''ग्लोबल डायलाग'' के माध्यम से एक सक्रिय समाजशास्त्रीय समुदाय को उत्पन्न व विकसित करने के लिए, जो उनकी दूर दृष्टि को व्यक्त करता है, हम उनके जीवन पर्यन्त आभारी रहेंगे। साथ ही उनके दूर दृष्टि मूलक प्रयासों, जिसमें विषय की अकादमिक सीमा के परे इलैक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा पहुंचना सम्मिलित है की हम सराहना करते हैं जिनके कारण एक वैश्विक समाजशास्त्र परिवेश विकसित हुआ जो समाजशास्त्र एवं सामाजिक परिवर्तन में योगदान कर रहा है।

अपने विषय को और अधिक शक्तिशाली बनाने हेतु एवं संगठन को और मजबूती देने हेतु हमें नवीन निर्वाचित कार्यकारिणी एवं उपाध्यक्षों की एक टीम–मार्कस शुल्ज (शोध काउन्सिल) सारी हनाफी (राष्ट्रीय समितियों) विनीता सिन्हा (प्रकाशन) एवं बैंनजामिन तेजरिना (वित्त एवं सदस्यता) के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

यह आवश्यक है कि हमारी एसोशियेसन हमारे परिवर्तित होते हलचलपूर्ण विश्व में पनपी चुनौतियों का प्रत्युत्तर दे। पहले की तुलना में अधिकता के साथ हमें जटिल वैश्विक मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है जो हमें बाध्य करता है कि समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत हम समाज के अन्दर एवं विभिन्न समाजों के मध्य संवाद करें। साथ ही 21वीं शताब्दी में एक न्यायोचित विश्व की रचना हेतु हम सामूहिक सहयोग के साथ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतियों का सामना करें। मेरी दृष्टि में आई एस ए का मुख्य ध्येय सामाजिक मानवीय विश्व की न केवल विवेचना एवं विश्लेषण करना है अपितु उन समाधानों एवं दिशाओं की कल्पना करना है, जिसे हम सब के लिए सुखद मानवीय भविष्य की रचना में सहायक कारकों के रूप में स्वीकारा जा सके।

आई एस ए के नवीन अध्यक्ष के रूप में मैंने कुछ महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं को रेखांकित किया है। एक व्यापक प्रगति के बावजूद हमें आई एस ए के वैश्विक चरित्र के विकास को निरन्तर बनाये रखना होगा। आई एस ए का पहला संगठनात्मक लक्ष्य सर्वत्र विद्यमान समाजशास्त्रियों को प्रतिनिधित्व देना है ''चाहे वे किसी भी विचार व्यवस्था अथवा विचारधारायी मतों से जुड़े हों''। यह आवश्यक है क्योंकि विश्व के आधे से भी अधिक देशों का अभी सांगठनिक क्षेत्र में प्रतिनिधित्व नहीं है। उत्तर एवं पश्चिम केन्द्रित दृष्टिकोण आज भी हमारी सदस्यता एवं शोध कार्यक्रमों में प्रभुत्व बनाये हुए है। परिणामस्वरूप बौद्धिक व्यस्तताएं एवं सहभागिताएं सीमित हो गयी है एवं अन्तर्देशीय वैचारिकी का क्षेत्र भी संकुचित हुआ है जबकि हमारा ध्येय इसे विस्तार देना है। मुझे आशा है कि अपने संगठन को वास्तविक रूप में वैश्विक रूप देने के लिए हम आई एस ए की सदस्यता का विस्तार करें जिसमें सभी लोग तथा विभिन्न प्रकृति के समाजशास्त्रीय चिन्तन से जुडे लोगों का प्रतिनिधित्व हो। अनुसंधान समितियों एवं राष्ट्रीय परिषदों के सहयोग के द्वारा हम समाजशास्त्रियों को सहयोग देने हेतु संस्थागत क्षमता को विकसित करने के लिए वास्तविक क्षेत्रों के विषय में विचार करेंगे। ये वे समाजशास्त्री होंगे जिन्हें आर्थिक एवं राजनीतिक प्रकृति के बहुस्तरीय अवरोधों का सामना करना पड़ता है और वे वैश्विक विनिमय में सहभागिता नहीं कर पाते। उभरते तथा कैरियर के प्रारम्भिक चरण से सम्बद्ध समाजशास्त्रियों के लिए अवसरों में वृद्धि आई एस ए की तेजस्विता को सुनिश्चित करने के लिए अत्यावश्सक है। ये प्रयास हमारे वित्तीय आधार को मजबूती प्रदान करेंगे साथ ही इस से हमारी सम्पोषित सहभागिता को सक्रियता मिलेगी और हमारा आर्थिक आधार नकारात्मक रूप से प्रभावित भी नहीं होगा। यह सब तभी सम्भव होगा जब हमें सदस्यों का पर्याप्त समर्थन व सहयोग प्राप्त हो।

यह भी महत्वपूर्ण है कि आई एस ए का घोषणा पत्र ''विश्व भर के समाज शास्त्रियों एवं समाज वैज्ञानिकों के मध्य संस्थागत एवं

>>

व्यक्तिगत सम्पर्क होना चाहिए'' पर बल देता है। मानवता के सम्पूर्ण पक्षों, इसके विभिन्न आयामों एवं विभेदों को व्यापक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों के मध्य सतत् विमर्श अत्यन्त आवश्यक है। मैं आशा करती हूँ कि समाजशास्त्र के ऐतिहासिक आधारों में अन्तःवैषयिकता (विभिन्न विषयों की अन्तः सम्बद्धता) को हम स्वीकारें, उसका विस्तार करें तथा उसे पुनः परिभाषित करें। जिस प्रकार विश्व को समाजशास्त्रियों द्वारा सतत् अन्वेषण की आवश्यकता है ठीक उसी तरह स्वयं को अर्थपूर्ण बनाये रखने के लिए हमें अन्य समाजवैज्ञानिकों के साथ सक्रिय अन्तःक्रिया की आवश्यकता है। आई एस ए की कान्फ्रेन्स तथा कार्यशालाओं में अन्य क्षेत्रों के नेतृत्वकारी मत उत्पन्न करने वाले विचारकों को सम्मिलित कर हम लाभान्वित हो सकते हैं। मुझे आशा है कि सहयोगात्मक अन्वेषण के लिए कार्य करेंगे जिससे हमारी वैश्विक अन्तः क्रियाओं में उपलब्धि मूलक विनियम के क्षेत्र का विस्तार होगा।

यह हम सब को ज्ञात है कि आई एस ए का अन्ततः लक्ष्य ''समूचे विश्व में समाजशास्त्रीय ज्ञान का विस्तार करना है।'' इसका अर्थ है कि हमें मानवीय सामाजिक विश्व के व्यवस्थित, संशयकारी एवं आलोचनात्मक विश्लेषणों में संलग्न होना चाहिए ताकि इस योगदान से इस विश्व को अच्छा स्थान प्राप्त हो सके। इस महान लक्ष्य की प्राप्ति को समाजशास्त्रियों का अभिजन समुदाय स्वयं को विशुद्ध अकादमिक हितों से जोड़ कर संकुचित कर देता है साथ ही यह आई एस ए के मिशन को बड़े स्तर पर सिकुड़ता देता है। हमें आलोचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता है पर साथ ही क्रिया एवं हस्तक्षेप की आवश्यकता भी है। इसके साथ ही प्रगतिशील सामाजिक न्याय एवं सामाजिक परिवर्तन हेतु गैर सरकारी अभिकरणों के साथ कार्य करने को भी हमें महत्व देना होगा। आई एस ए को निश्चित रूप से अपने समय एवं संसाधनों का प्रयोग अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, मजबूत सैद्धान्तिक स्थापनाओं एवं कठोर पद्धतिशास्त्र हेतु करना चाहिये। पर साथ ही इसे वास्तविक विश्व की समस्याओं को समेटने वाले समाजशास्त्र को भी स्वीकारना चाहिए। विश्व आज नर संहार, आतंकवाद, निरंकुशता उन्माद, प्रजातीय भेदभाव, कट्टरवाद, लैंगिक अन्याय, भ्रष्टाचार एवं पर्यावरणीय ह्रास की घटनाओं से बुरी तरह आहत है। ये वे समस्याएं हैं, जिनके कारण निर्धनता, स्वतन्त्रता का ह्रास, समृद्धि की व्यापक असमानता एवं सामाजिक बहिष्करण के खतरे व्यापक हो गये हैं। आई एस ए के अध्यक्ष के रूप में मैं ऐसे समाजशास्त्र के लिए कार्य करूंगी जो हमारे सामाजिक विश्व की मुख्य समस्याओं का न केवल विश्लेषण करेगा अपितु उन दिशाओं के लिए सक्रियता व्यक्त करेगा जो प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन की तरफ ले जाती है। मेरी कोशिश व प्रतिबद्धता होगी कि एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में आई एस ए पूर्व की, समकालीन विश्व के विभिन्न मुद्दों से घनिष्ठ व सक्रिय रूप में जुड़े की भूमिका को और अधिक विस्तृत करुं।

एक नारीवादी समाजशास्त्री, जिसने नारीवादी विचारकों एवं समुदायों के सक्रिय कार्यकर्ताओं से बहुत कुछ सीखा है, के रूप में मेरी विशेष चिन्ता लैंगिक हिंसा एवं भेदभाव के विषय में है जो विश्व के सभी समाजों में व्याप्त है। ये घटनायें जहाँ विशेषतः महिलाओं एवं लड़कियों के लिए तो चिन्ताजनक हैं पर इसके खतरनाक प्रभाव परिवारों, समुदायों एवं समाज के बड़े भाग पर भी देखे जाते हैं। एक व्यवस्थित रूप में महिलाओं को निशाना बनाना आधुनिक संघर्षों की एक विशेषता है। महिलाओं के विरूद्ध हिंसा सामाजिक न्याय के आई एस ए के वृहद एजेण्डा का एक महत्व पूर्ण भाग होना चाहिए। मेरी योजना है कि मैं आई एस ए अध्यक्षीय वैश्विक परियोजना को प्रारम्भ करूं जो समाजशास्त्रियों व अन्य साझेदारों के एक नेटवर्क की खोज व संयोजन करें। यह नेटवर्क स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक अनुभवों के आधार पर लैंगिक तथा अन्तः सामूहिक हिंसा के समाधान प्रस्तुत करे।

हमने यह सीखा है कि हमारे जटिल, संघर्षरत विश्व को पूर्णतः केवल शोध पत्रिकाओं तथा कांफ्रेस के कमरों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। आप सब के सहयोग से मेरा इरादा है कि आई एस ए व्यापक विश्व के समकालीन सामाजिक मुद्दों से सम्बद्ध ज्ञान पर विचारों का आदान प्रदान करे, विशिष्टीकृत समाजशास्त्रीय ज्ञान को लोकप्रिय अवधारणाओं का रूप दे ताकि औसत नागरिक भी उन्हें समझ सके, उनसे सम्बद्ध हो सके और स्वयं को प्रोत्साहित करे।

हमारा इलैक्ट्रानिक मीडिया हमारे अनसंधान के प्रयार, विनिमय एवं संवाद के प्रोत्साहन एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषणों को सांझा करने हेतु सक्रिय होगा। एक अध्यक्ष के रूप में मेरी योजना है कि विश्व के विभिन्न भागों के समाजशास्त्रियों का इलैक्ट्रानिक मानचित्र निर्मित हो जो विश्व समुदाय के लिए एक संसाधन का कार्य करे तथा जटिल संदर्भों एवं मुद्दों की तरफ ध्यान आकृष्ट करने हेतु समाजशास्त्री सामाजिक मीडिया का उपयोग कर सकें।

आई एस ए एक ऐसा संगठन है जो एक भिन्नता के साथ उपस्थित होने का इच्छुक है। हमारी सदस्यता हमें समृद्ध एवं विविधतामूलक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों तथा पद्धति शास्त्रीय कुशलता से परिचित कराती है। आई एस ए की प्राथमिकताओं को रेखांकित करने के उपरान्त मेरा दायित्व है कि अब मैं इन्हें मूर्त रूप दूं और अर्थ पूर्ण क्रियाओं के उद्देश्य के साथ इन्हें प्रस्तुत करूं पर इस हेतु मुझे आपके सकारात्मक, आलोचनात्मक सहयोग तथा समन्वयमूलक सहभागिता की अपेक्षा रहेगी। ■

सभी पत्राचार मार्ग्रेट अब्राहम
<Margaret.Abraham@Hofstra.edu> को प्रेषित करें।

> योकोहामा पर एक वैचारिक दृष्टि

व्लादिमीर इलिन, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ सैण्ट पीटर्सबर्ग, रूस

रंगमंच के सामने। सफलता के वास्तुकार, कोईची हासेगावा, जापानी स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, जे.एल.ओ.सी. के 18वीं समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस के प्रति समर्पण के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए।
चित्र कायो सावागुची द्वारा।

अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (इन्टरनेशनल सोशियालिजकल एसोशियेसन) का 18वॉ सम्मेलन 13 जुलाई से 19 जुलाई 2014 तक योकोहामा में हुआ। सम्मेलन (कांग्रेस) के विषय में लेखन एक गैर–पुरस्कारीय कार्य होता है, इस संदर्भ में कोई कुछ भी मत व्यक्त करे, कुछ लोग इसके विपरीत मत अवश्य व्यक्त करेंगे। 6000 से अधिक सहभागियों वाला यह सम्मेलन इतना विशाल था कि इस लेख में मैं उस अन्धे व्यक्ति के समान अनुभव कर रहा हूँ जो हाथी के विभिन्न अंगों को छूकर समूचे हाथी का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अतः मैं अपनी टिप्पणियो को कुछ घटनाओं एवं कुछ व्यक्तिगत विवेचनाओं तक सीमित रखूँगा।

> असमानता पर केन्द्रितता :

सम्मेलन (कांग्रेस) का मुख्य विषय सामाजिक असमानता एवं इसके द्वारा वैश्विक समाजशास्त्र के सम्मुख प्रस्तुत की गयी चुनौतियों पर केन्द्रित था। यह विषय अत्यन्त समीचीन था क्योंकि व्यापक समानता पर आशावादी वैचारिकी के बावजूद विश्व अधिक न्यायसंगत नहीं है। समाजशास्त्र भी सामाजिक व्यवस्था में त्रासदी मूलक संकटों एवं विघटनों की तरफ गहन संवेदनशीलता दिखा रहा है जिसके कारण

> >

रंगमच के पीछे।
सफलता के वास्तुकार – जापानी पी.सी.ओ.
(व्यावसायिक कांफ्रेस आयोजक) के प्रतिनिधि और
कार्यकर्ता, आई.एस.ए. का सचिवालय, और कान्फेक्स।

वैश्विक समाजशास्त्र का वामपन्थ की तरफ झुकाव हुआ है। सन् 2010–14 की अवधि के लिए प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक माइकल बुरावे को अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (इन्टरनेशनल सोश्यालिजकल एसोशियेसन) का अध्यक्ष चुना गया तथा एरिक राइट जो योकोहामा सम्मेलन में भी उपस्थित थे और वर्ग की मार्क्सीय धारणा के विश्लेषक हैं, को अमेरिकन समाजशास्त्र परिषद (अमेरिकन सोश्यालिजकल एसोशियन) का अध्यक्ष चुना गया। ये दोनों तथ्य उपरोक्त मत की पुष्टि करते हैं। लातिन अमेरिका, एशिया एवं अफ्रीका के समाजशास्त्रियों की सदस्यता में वृद्धि विश्व समाजशास्त्र में वामपन्थी रूझान के विस्तार को दर्शाती है। ये वे क्षेत्र हैं जहां पूंजीवाद के सामाजिक अन्तः विरोध तीव्र हुए हैं और उन्हे नाटकीय रूपों में दर्शाया है जिसने आलोचनात्मक सिद्धान्त के नायाब स्वरूपों को प्रोत्साहित किया है। सन् 2013 में दक्षिणी विश्व के पहली बार चुने गये पोप फ्रांसिस के चुनाव की ओर हमारा ध्यान माइकल बुरावे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आकर्षित किया। पोप फ्रांसिस असमानता के सवाल से विशिष्ट रूप से जुड़े रहे हैं। यह अप्रत्याशित ही था कि एक वामपन्थी समाजशास्त्री ने सामाजिक असमानता के विषय पर विचार व्यक्त करते हुए पोप के प्रेरक उद्बोधन को सम्मिलित किया (केवल उद्बोधन ही नहीं अपितु पोप फ्रांसिस के छहः उपदेशात्मक विचार) माइकल बुरावे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इन सब का उल्लेख किया। पोप फ्रांसिस का पूंजीवाद विरोधी कैथोलिक घोषणा पत्र इस विचार के इर्द गिर्द था कि 'धन सेवा के लिए है न कि शासन करने के लिए'। बुरावे ने इस विचार को भी रेखांकित किया कि अर्थशास्त्री, जो पारम्परिक रूप में सामाजिक असमानता की उपेक्षा करते थे, भी अब सामाजिक असमानता की तरफ अपने ध्यान को केन्द्रित करने लगे हैं।

बुरावे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्व सम्मेलन (वर्ल्ड कांग्रेस) में सहभागिता के आधार पर भौतिक संसाधनों से निर्देशित वैश्विक असमानता तथा समाजशास्त्र के विकास की चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि यद्यपि वैश्विक उत्तर के बाहर निवास कर रहे आई. एस. ए. सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुई है, योकोहामा में 71 प्रतिशत प्रतिभागी विश्व के सर्वाधिक समृद्ध देशों से तथा केवल 10 प्रतिशत निर्धनतम देशों से आये है। जब 1949 में आई एस ए का गठन हुआ था तब इसमें केवल अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोपियन देशों का प्रतिनिधित्व था। आज काफी अधिक विविधता है।

तथापि अनेक प्रतिभागियों का मत था कि समाजशास्त्रीय समुदाय के लोकतान्त्रीकरण का नकारात्मक पहलू हैं; कई प्रतिभागियों में व्यवस्थित पेशेवर शिक्षा का अभाव है, उन्हें अपनी योग्यता का उन्नयन व अनुसंधान में सहभागिता करने या वर्तमान समाजशास्त्रीय साहित्य की उपलब्धता के अवसर प्राप्त नहीं है। आई एस ए के पूर्व अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध वरिष्ठ समाजशास्त्री इमेन्युएल वालरस्टाइन

>>

ने हमें बताया कि 1959 में पहली बार उनके द्वारा भाग ली जाने वाली कांग्रेस मे सिर्फ 300 प्रतिभागी थे। लगभग सभी प्रतिभागी पश्चिमी देशों के थे तथा इस सम्मेलन ने पेशेवर समुदाय के अनेक ''सितारों'' को आकर्षित किया। योकोहामा सम्मेलन में 6000 से अधिक लोगों ने सहभागिता की परन्तु कार्यक्रमों में लगभग सभी प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम नहीं थे। अनेक समाजशास्त्रियों की दृष्टि में छोटी सेमिनारों एवं कान्फ्रेन्स (छोटी गोष्ठियां एवं कान्फ्रेंस) समय एवं धन की दृष्टि से अधिक प्रभावी होती हैं। अधिकांश समाजशास्त्रियों को केवल उनके सहयोगी साथी ही जानते हैं।

लेकिन हम सब समाजशास्त्र के समग्र स्तर को कैसे उत्कृष्टता की ओर ले जाएंगे, जब तक सभी समाजशास्त्री वैश्विक संवाद (ग्लोबल डायलॉग) में भाग लेने के सक्षम न हो? लोकतान्त्रीकरण एवं पूर्व की अभिजन मूलक प्रस्थिति की गौरवशाली अनुभूति के मध्य का विरोधाभास विश्व समाजशास्त्र में उभर रहे तनावों के महत्व को रेखांकित करता है।

> जनसमाज–शास्त्र (पब्लिक सोश्यालजी) से सम्बद्ध एजेन्डा

इस विश्व सम्मेलन में माइकल बुरावे का अध्यक्षीय कार्यकाल समाप्त हो गया। उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि इस कार्यकाल के दौरान सामाजिक मीडिया के व्यापक प्रयोग द्वारा विश्व के समाजशास्त्रीय समुदाय का निर्माण करना था। सामाजिक मीडिया के इस व्यापक उपयोग को वे 'डिजिटल वर्ल्डस' की संज्ञा देते हैं। साथ ही विश्व के विभिन्न भागों में निवास कर रहे समाजशास्त्रियों से उन्होंने यात्राओं के माध्यम से सम्पर्क बढाया। इन प्रयासों के द्वारा माइकल बुरावे ने एक अत्यन्त स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित प्रकृति की जन (पब्लिक) समाजशास्त्र की अवधारणा को निर्मित किया। यद्यपि यह अवधारणा सार्वभौमिक रुप से स्वीकार नहीं की गई है । बुरावे का मत था कि समाजशास्त्रियों को अनुसंधान संचालन एवं अपने सहयोगियों के सीमित क्षेत्र के अन्दर विचारों के आदान प्रदान से अधिक कुछ करना चाहिए। उनका उद्देश्य एक ऐसे आईने का निर्माण होना चाहिये जिसमें समाज स्वयं को एक पारदर्शी एवं व्यवस्थित रूप से देख सके। जन समाजशास्त्र की दृष्टि समाजशास्त्रीय समुदाय में शक्ति सन्तुलन के बदलाव की प्रक्रिया की कोशिश से सावयवी रुप में पूरक होती है। इस बदलाव के फलस्वरूप पश्चिम के बाहर के देशों में व्याप्त समस्याओं की तरफ समाजशास्त्र की संवेदनशीलता में वृद्धि हुई है। धीरे धीरे इस विचार ने समाजशास्त्र को रेडीकल रूप दिया है तथा एक अधिक न्यायसंगत विश्व की रचना हेतु संघर्षरत ताकतों के लिए समाजशास्त्र को एक बौद्धिक उपकरण के रूप में निर्मित किया है।

सामाजिक असमानता के विषय पर हमारा ध्यान केन्द्रित कर योकोहामा सम्मेलन ने इस प्रोजेक्ट को रूप देने का कार्य किया है। यह विचार कि विश्व को बदलने की कोशिश में समाजशास्त्रियों की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए, नया नहीं है। शास्त्रीय मार्क्सवादी समाजशास्त्र तो जितना विश्व को बदलने की रूपरेखा प्रस्तुत करता है उतना ही वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। अमेरिकी समाजशास्त्र का प्रारम्भिक दौर सामाजिक सुधार हेतु आन्दोलनों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा था। पिट्रिम सौरोकिन 1917 की रूसी क्रान्ति में सक्रिय थे और इस प्रक्रिया में वे अपने जीवन को लगभग खोने वाले थे। आई एस ए के अनेक अध्यक्ष जैसे जेन स्जकीपैन्सिकी एवं एल्बेटो मार्टिनली राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं और अपने देश के विधान मण्डलों में निर्वाचित हो चुके हैं। फरनेन्डो हेनरिक कार्डोसो को एक सीनेटर के रूप में चुना गया तथा बाद में वे ब्राजील के राष्ट्रपति बने।

पूर्व अध्यक्षों ने योकोहामा सम्मेलन में भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया। आईएसए के पूर्व अध्यक्ष (2002–06), एवं कराको विश्वविद्यालय के प्रोफेसर (पीओट्र स्टिोम्पका (2002–06), और जन समाजशास्त्र और उसके क्रान्तिकारी विचारों के मुखर विरोधी ने एक वैकल्पिक उपागम को निर्मित किया। उनके अनुसार समाजशास्त्र एक अकादिक विषय है जिसे सावधानी पूर्वक वस्तुपरक अनुसंधानों में संलग्न होना चाहिए तथा इसे विश्व को परिवतित करने में सम्मिलित नहीं होना चाहिए। समाजशास्त्रियों का स्थान पुस्तकालयों में है, न कि मोर्चाबन्दी में। स्टिोम्पका की दृष्टि में असमानता के विषय को संबोधित करने वाले समाजशास्त्रियों का मुख्य दायित्व प्रघटना को समझना है। उनका दावा था कि अधिकांश समाजशास्त्री सुधार के समर्थक हैं पर नैतिकताओं की बात कर, उपदेशात्मक विमर्श द्वारा या विचारधारायी घोषणापत्रों के माध्यम से समाजशास्त्री परिवर्तन को उत्पन्न नहीं कर सकत हैं। समाजशास्त्रियों का उत्तरदायित्व सामाजिक जीवन के स्वरूपों एवं अभिकरणों को जिसमें असमानता एवं अन्याय के पक्षों को उभारने के तत्व सम्मिलित होते हैं–प्रस्तुत करना है। कार्ल मार्क्स ने अपने जीवन का अधिकांश भाग पुस्तकालय में व्यतीत किया न कि मोर्चाबन्दी पर; वे ''कम्युनिस्ट मैनीफैस्टो'' (साम्यवादी घोषणापत्र) के कारण नहीं अपितु 'कैपीटल' के कारण एक महान विचारक के रूप में स्थापित हुए।

विश्व सम्मेलन में भाषण देते हुए और इसके पूर्व अपने प्रकाशनों में स्टिोम्पका ने एकल समाज शास्त्र (सिंग्यूलर सोश्यालजी) के विचार को आगे बढ़ाया जो समृद्ध एवं निर्धन देशों पर समान रूप से लागू होता है। विभिन्न प्रकृति के विश्वों के लिए अलग अलग समाजशास्त्र नहीं हो सकते हैं। विश्व के सभी भागों के लिए सामाजिक परिवर्तन के सामाजिक साधान एवं चक्र समान प्रकार के होते हैं, हालांकि इस प्रघटना के स्वरूप अलग अलग होंगें। सामाजिक अनुसंधान के मानक एवं सिद्धान्तों के मूल्यांकन के आधार भी सार्वभौमिक हैं। यह स्पष्ट है कि कोई भी दृष्टिकोण न तो पूर्णरूपेण सही है और न ही पूर्णरूपेण गलत। समाजशास्त्र विभिन्न स्वरूपों को सम्मिलित करता है और समाजशास्त्री अपने चरित्र, कुशलता एवं विश्वासों के आधार पर सर्वाधिक उपयुक्त दिशा को अपना सकते है। ■

सभी पत्राचार व्लादिमीर इलिन
<ivi-2002@yandex.ru> को प्रेषित करें।

> इमेन्युएल वालरस्टाइन को आई.एस.ए. का उत्कृष्टता पुरस्कार

माइकल बुरावे, आई.एस.ए के पूर्व अध्यक्ष, 2010–2014 तथा पुरस्कार समिति के संयोजक

इमेन्युएल वालरस्टाइन, शोध तथा व्यवहार के लिए आई.एस.ए. के अवार्ड फॉर एक्सीलेन्स के विशिष्ट प्राप्तकर्ता।
चित्र कायो सावागुची द्वारा।

योकोहामा में समाजशास्त्र के विश्व सम्मेलन के उद्घाटन समारोह की एक मुख्य विशेषता आई एस ए द्वारा एक नवीन एवं समिति द्वारा समाजशास्त्रीय अनुसंधान एवं उसकी क्रियान्विति के क्षेत्र में उत्कृष्टता हेतु स्थापित एकमात्र पुरस्कार का दिया जाना था। आई एस ए सदस्यों द्वारा अधिक से अधिक नामांकन प्राप्त करने हेतु इस पुरस्कार का व्यापक प्रचार किया गया था। अनेक प्रभावी प्रत्याशियों में से आई एस ए की कार्यकारिणी की सात सदस्यीय समिति ने इमेन्युएल वालरस्टाइन को इस पुरस्कार के प्रथम विजेता के रूप में चुना।

पुरस्कार समिति को ऐसे अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त हुए जो सिद्ध करते हैं कि अभी जीवित समाजशास्त्रियों में से किसी ने भी समाज विज्ञानों को इतना अधिक प्रभावित नहीं किया है जितना कि इमेन्युएल वालरस्टाइन ने किया है। समाज विज्ञानों में उनका योगदान 50 वर्ष की विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित पुस्तकों की श्रृंखला एवं अनेक शोध पत्रों के प्रकाशन के परे जाता है। वास्तव में वालरस्टाइन ऐसे विरले विचारकों में से एक हैं जिनके योगदान ने प्रारूपों के क्षेत्र में बदलाव को प्रेरित किया है।

1960 के दशक में वालरस्टाइन ने अफ्रीका में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष का विश्लेषण किया, इसके उपरान्त उन्होंने एक सम्भावनाजनित व्यापक बौद्धिक परियोजना को रूप दिया जो कि ''आधुनिक विश्व–व्यवस्था'' की उत्पत्ति एवं सम्बद्ध गतिशीलता के विश्लेषण से जुड़ा था। यह परियोजना एक सावधानीपूर्वक प्रयास है जिसमें गहन सैद्धान्तिक पक्ष एवं विस्तृत एतिहासिक ज्ञान परिदृश्य सम्मिलित हैं। 1974 में ''मार्डन वर्ल्ड–सिस्टम'' (आधुनिक विश्व–व्यवस्था) के प्रथम खण्ड के प्रकाशन से प्रारम्भ है (इसके अगले तीन खण्ड 1980, 1989 एवं 2011 में प्रकाशित हुए)। वालरस्टाइन के उपागम ने समाजशास्त्र को एक तुलनात्मक एतिहासिक विषय में रूप में पुनर्जीवित किया और इसे दूरगामी सामाजिक परिवर्तन के शास्त्रीय संदर्भों को विश्लेषण के केन्द्र में लाने का प्रयास किया। उनके विश्व–व्यवस्थाओं का यह प्रारूप समाज विज्ञानों का अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र बन कर उभरा है और इस प्रारूप ने अनेक प्रसिद्ध विचारकों को आकर्षित किया है।

विश्व के इतिहास के पुनर्लेखन करते हुए वालरस्टाइन ने पश्चिमी समाज विज्ञान में क्षेत्रीयतावाद की विशिष्ट स्थिति पर टिप्पणी की तथा उसका विश्लेषण किया तथा कृत्रिम विषयों के रूप में विखण्डीकरण की तरफ संकेत दिये। समाज विज्ञानों की पुनर्रचना के विषय में वालरस्टाइन के विचार उनकी प्रसिद्ध एवं व्यापक रूप से सराही गयी कृति ''ओपन द सोश्यल सांइसेज'' में व्यक्त हुए जो 1995 में गठित उनकी अध्यक्षता मे गुलबैंकियन कमीशन की रिर्पोट थी। इसके उपरान्त वे समाज विज्ञानों के इतिहास एवं भविष्य के बारे में अनेक खण्डों के लेखक रहे। वालरस्टाइन केवल एक प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली बुद्धिजीवी नहीं है। समाजशास्त्र को एक वैश्विक विषय के रूप में आगे बढ़ाने में उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने बिना थके विश्व के विभिन्न देशों का दौरा किया और बहुस्तरीय संगठनात्मक भूमिका का निर्वाह किया। इन्टरनेशनल सोश्यिालजीकल एसोशियेसन के अध्यक्ष (1994–98) के रूप में विश्व के सभी भागों के विचारकों के साथ उन्होंने संवाद स्थापित किया विशेषतः वैश्विक दक्षिण, लातिन अमेरिका, अफ्रीका, एशिया एवं मध्य पूर्व के देशों के विचारकों के साथ उनकी वैचारिक सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी रही। आई एस ए एवं विश्व समाजशास्त्र में नवीन पीढ़ी के नेतृत्व को उन्होंने पनपाया एवं आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। कमेटी ने इन सभी पक्षों पर स्वयं को केन्द्रित किया और यह विचार स्वीकारा कि समाजशास्त्र के क्षेत्र में एवं इसके व्यवहारमूलक पक्ष के क्षेत्र में उत्कृष्टता की दृष्टि से प्रोफेसर सैमुअल वालरस्टाइन से अच्छा और कोई इस प्रथम सम्मान को पाने का अधिकारी नहीं हो सकता है। ■

> विश्व में व्याप्त भावनात्मक श्रम

अरली हॉकचाइल्ड के साथ एक साक्षात्कार

अरली हॉकचाइल्ड

अरली रसेल हॉकचाइल्ड हमारे समय की प्रसिद्ध समाज शास्त्रियों में से एक है। उनका योगदान इस बात का प्रमाण है कि सम्बद्ध विमर्श सैद्धांतिक गहराई के साथ समाजशास्त्रीय अंवेषण को पूरा करने की एक प्रभावी रणनीति है। अपनी आठ अकादमिक पुस्तकों – जिनमें 'द मैनेज्ड हार्ट (1983)', 'द कामर्शिलाइजेशन ऑफ इन्टीमेट लाइफः नोटस फ्रम होम एण्ड वर्क' (2003); 'द आउटसोर्सड सैल्फ' (2012) और हाल ही की 'सो हाउ इस द फैमिली? एंड अदर एसेज' (2013) में हॉकचाल्ड भावनाएं सामाजिक जीवन के सूक्ष्म और व्यापक क्षेत्रों के बीच सम्बन्धों को समझने में हमारी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं, का मुल्यांकन करती हैं। 'भावनात्मक प्रबंधन' (इमोशनल मैनेजमेंट), 'भावनात्मक श्रम' (इमोशनल लेबर) तथा 'भावनागत नियम' (फीलिंग रूल्स) जैसी मूल अवधारणाएं उनके कार्य में सम्मिलित गहराई को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस साक्षात्कार में हॉकचाल्ड करिश्माई व्यक्तित्व और जमीन से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। अमेरिकी समाजशास्त्री से बातचीत करते हुए कोई भी आसानी से जान सकता है कि वह अपने समय के प्रमुख सामाजिक मुद्दों पर खुले दिल व दिमाग से सोचने वाली महिला है। स्पेन के नवारे विश्वविद्यालय में कल्चर एंड सोसायटी संस्था में कार्यरत एक पुर्तगाली शोधकर्त्ता, मेडेलेना डी' ओलिविएरा–मार्टिंस, ने 27 फरवरी 2014 को बर्कले, कैलिफोर्निया में यह साक्षात्कार आयोजित किया।

एम. ओ. – आप 1960 के दशक में बर्कले में स्नातक विद्यार्थी थीं। उस समय जो कुछ चल रहा था, उस पर आपके क्या विचार हैं और उसने किस प्रकार आपके समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को प्रभावित किया?

ए. एच. – अक्टूबर 1962 के कुछ समय पहले ही मैं बर्कले पहुंची थीं। क्यूबा मिसाइल संकट मंडरा रहा था और सोवियत संघ व अमेरिका के बीच शीत युद्ध अचानक गर्माने लगा था; राष्ट्रपति कैनेडी और निकिता खुश्चेव परमाणु धमकी दे रहे थे। एक दिन मैं साइकिल से परिसर के केन्द्रीय चौक तक पहुंची और पाया कि छात्रों की भीड़, शिक्षक सहायकों व प्रोफेसरों के छोटे–छोटे गुट–10 लोग यहां, 20 लोग वहा, गहन विमर्श में व्यस्त थे। क्या हम एक परमाणु प्रलय की संभावना का सामना कर रहे हैं? एक शांति आंदोलन क्या कर सकता है? प्रत्येक व्यक्ति सार्वजनिक रूप से सम्मिलित था। मैंने महसूस किया, ''यह वह है जहाँ मैं होना चाहती हूँ'' बाद में मुझे ऐसा लगा कि संभवतः हैबरमास के मन में यही था; सार्वजनिक चौक में उपयोगी बहस।

अभी कुछ समय पहले मैं इसी परिसर में घूम रही थी और मैंने देखा कि छात्र अपने कानों पर सेलफोन लगाये एक–दूसरे के पास से गुजर

> >

रहे थे। वे बातचीत तो कर रहे थे पर एक–दूसरे से नहीं। मैंने उस समय सार्वजनिक चौक का अभाव महसूस किया। कुछ आमने–सामने की समूहिक बातचीत ऑन–लाइन होने लगी है परंतु इस प्रक्रिया ने, सामान्य उद्देश्य की तत्काल समझ को शायद कमजोर किया है। स्वरूप चाहे कैसा भी हो मुझे लगता है कि परिवर्तन अच्छे के लिए होता है वाले 1960 के दशक के हमें काफी जादुई आशावाद की आवश्यकता है।

एम. ओ. – आपकी एक केन्द्रीय अवधारणा भावनात्मक श्रम है जिसका अभिप्राय उन कार्य गतिविधियों से है जो आपकी अनुभूतियों को या तो बढ़ावा देती है या उन्हें कुंठित करती हैं ताकि ''रोजगार के प्रति अच्छी अनुभूति'' निर्मित हो। क्या आप मुझे इस अवधारणा के विषय में कुछ बतायेंगी?

ए. एच. – समाजों में जहां सेवा क्षेत्र का विस्तार हो रहा है यह अवधारणा कई रोजगारों की दैनिक वास्तविकता को उभारती है जैसे आया (नैनी), पालनाघर या शिशु सदन वाले श्रमिक, वृद्धों की देखभाल करने वाले श्रमिक, नर्स, शिक्षक, चिकित्सक (थैरापिस्ट), बिल जमा करने वाले लोग, पुलिसकर्मी, कॉल सेंटर पर काम करने वाले श्रमिक। आधुनिक अर्थतंत्र पेड़ों के काटे जाने, कुओं के खोदने, विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन पर कम आधारित है; वे अधिकाधिक सेवा प्रदान करने हेतु आमने–सामने मौखिक अन्तःक्रिया पर आधारित है। इन क्रियाओं में भावनात्मक श्रम की आवश्यकता होती हैं।

एम. ओ. – आपके 'ग्लोबल वूमन' में प्रकाशित लेख 'लव एंड गोल्ड' तथा 'सो हाउ इस द फैमिली?' में प्रकाशित लेख 'द सरोगेट्स वूम्ब' को देखकर मुझे यह लगता है कि आप 'भावनात्मक श्रम' को दुनियां भर में ले गई है, क्या यह सही है?

ए. एच. – मैं वैश्विक दक्षिण की ऐसी आया और वृद्धों की देखभाल करने वाले श्रमिकों को ढूँढ रही थी जो अपने बच्चों और वृद्धों को छोड़कर वैश्विक उत्तर के बच्चों और वृद्धों की देखभाल करने के लिए 'देखभाल करने वाले श्रमिकों की श्रृंखला' बनाते थे। Rhacel Parrenas' (रेसल परेनासं) के कार्य से प्रभावित होकर मैंने कैलिफोर्निया के रेडवुड सिटी में फिलिपीनी आयाओं (नैनीस) से साक्षात्कार किया जिन्होंने मनीला में अपने बच्चों की देखभाल के लिए एक आया (नैनी) रखी हुयी थी। आयाओं की एक श्रृंखला बनी – जिसके अन्तिम छोर पर वैश्विक दक्षिण का एक बच्चा है जिसके उपर वैश्विक प्रणाली का भार टिका हुआ है।

एम. ओ. – इस सब के परिणाम को आप 'वैश्विक हृदय प्रत्यावर्तन' कहती हैं, क्या यह सही है?

ए. एच. – हाँ, एक संदर्भ में एक महिला की हृदय की अभिव्यक्ति दूसरी महिला तक पहुंचती है। यह स्थिति तीव्र भावनात्मक श्रम की मांग करती है। प्रत्यारोपित आया (नैनी) सिलिकॉन घाटी के मालिक के घर में रहने के दौरान अपने अकेलेपन, अलगाव की भावना और यहां तक कि इस भ्रम को कि वह अपने बच्चे (जिसे उसने 5, 6, 7 सालों से नहीं देखा है, जिसे उसने मनीला में अपनी बहन के साथ छोड़ दिया–या सैन पेड्रो सुला, मिचोकन या दक्षिण में कहीं और छोड़ दिया हो) की तुलना में उस बच्चे, जिसकी वह देखभाल करती है, से भावनात्मक रूप से ज्यादा जुड़ी है।आया की मजदूरी उसके अपने बच्चे की स्कूल की फीस तो जमा करती है परंतु बच्चा स्वयं दुखी, निराश, उदास या कुछ हद तक अलगावित महसूस कर सकता है।

एम. ओ. – आपने भारतीय पेशेवर सरोगेट्स के विषय में लिखा है जो अपने गर्भ को सोचने के लिए प्रशिक्षित हैं।

ए. एच. – हाँ, मैंने भारत के आनन्द में कुछ पेशेवर सरोगेट्स के साथ महत्वपूर्ण साक्षात्कार किये–निर्धन महिलाएं जिनमें किसी दंपति का भ्रूण प्रत्यारोपित किया जाता है और जो घरेलू या विदेशी ग्राहकों के लिए उसे 3 से 5000 डॉलर के लिए बच्चों को जन्म देती है या गर्भ में धारण करती है। उन साक्षात्कारों और समाजशास्त्री अमृता पांडे[1] के कार्य के आधार पर मैंने विश्व की सबसे बड़ी 'किराये की कोख' सेवा का वर्णन किया है। वित्तीय आवश्यकताओं के कारण सरोगेट अपने ही शरीर के साथ अपने भावनात्मक सम्बन्धों का प्रबंधन करती हैं–अपने गर्भ में अतिरिक्त भ्रूण को खत्म करने के लिए चिकित्सक व ग्राहक को अधिकृत करती हैं और जो भ्रूण वह धारण करती है, से दूर हो जाती है परंतु उसकी यादें लम्बे समय तक रहती हैं।

आया (नैनी) एवं सरोगेट्स भावनात्मक अलगाव की चुनौतियों का सामना करती है। 19वीं सदी में मार्क्स ने यूरोपियन फैक्ट्री श्रमिक के रूप में अलगावित पुरूष की व्यापक छवि प्रस्तुत की थी। मैं उस मॉडल का एक नया स्वरूप प्रस्तावित करती हूं–'21वीं–सदी में ग्लोबल दक्षिण की महिला सेवा प्रदाता श्रमिक'।

एम. ओ. – आपने 'समानुभूति मानचित्र' (इम्पेथी मेपस्) की चर्चा की है और जर्मन समाजशास्त्री गरट्रूड कोच (Gertrud Koch) **ने अपनी पुस्तक 'पाथवेज टू इमपेथी' आपको समर्पित की है। 'समानुभूति मानचित्र' क्या है?**

ए. एच. – यह एक ऐसा सामाजिक स्थान है जो हमारी कल्पनाओं की सीमाओं से घिरा अन्य सामाजिक स्थानों से पृथक या भिन्न होता है। हम इस स्थान के भीतर रहने वालों से समानुभूति रखते हैं और इसके बाहर रहने वालों के साथ नहीं रखते। दो समूहों के लोग समानुभूति रखने में सक्षम हो सकते हैं और बराबर रुप से गुप्त प्रक्रियाओं में समान रूप से सक्रिय हो सकते हैं जिससे समानुभूति बढ़ती हो परंतु उनके प्रदत्त अलग–अलग स्थान के कारण वे एक–दूसरे के प्रति समानुभूति को स्वीकार नहीं करते हैं। अपने मानचित्र (क्षेत्र) का विस्तार करने के लिए हमें उन दोनों के बीच स्थापित/निर्धारित सीमाओं के परे सोचने की आवश्यकता है। मेरी इस बात में गहन रूचि है कि हम ऐसा कैसे कर पाते हैं?

एम. ओ. – आपने अपने लेख 'द सोशियोलॉजी ऑफ फीलिंग्स एंड इमोशनस' (1975) में आपने एक समाजशास्त्र की एक नई उपशाखा 'सोशियोलॉजी ऑफ इमोशनस्' की चर्चा की। क्या यह हैबिटस को पहचानने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता थी?

ए. एच. – हाँ, 'समाजशास्त्र क्या हैं' की केन्द्रीय अवधारणा 'भावनाएं' हैं। यदि हम राजनीतिक समाजशास्त्री हैं तो हमें राजनीतिक विश्वास के पीछे की भावनाओं के बारे में पूछने और ये कहां से आयी, जानने की आवश्यकता है। यदि हम आर्थिक समाजशास्त्री हैं तो हमें अर्थव्यवस्था के बारे में हमारे विश्वासों को, हमारी उपभोक्ता प्राथमिकताओं, शेयर बाजार में उतार–चढ़ाव को कौन–सी भावनाएं स्वरूप देती हैं, जानने की आवश्यकता होती है। समाजशास्त्र की प्रत्येक उपशाखा के केन्द्र में भावना होती है। मुझे ऐसा लगता है कि हमें अत्यधिक सूक्ष्म तरीके से इस केन्द्रीय अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

1970 के दशक में जब मुझे यह विचार आया तब कई प्रवृत्तियाँ पहले से ही विद्यमान थीं। एक व्यापक पैमाने पर महिलाओं के कार्यशील में बदलने से नारीत्व, भावना नियमों तथा भावनात्मक प्रबंधन की बदलती अवधारणाओं की आवश्यकता महसूस हुई। कभी–कभी महिलाओं को बदलना पड़ा–एक शर्मीली और सम्मानित प्रतिवादी वकील (डिफ्रेंशियल ट्रायल लॉयर) बने रहना पर्याप्त नहीं था और कभी–कभी देखभाल प्रणाली को वैधता प्रदान कर महिलाओं नें कार्यालयी माहौल को परिवर्तित किया। सेवा क्षेत्र उत्थान पर था। निगमों का भी विस्तार हो रहा था और कंपनी के बाहर व भीतर के सम्बंधों को बनाये रखने के लिए–भावना प्रबंधन के नए स्वरूपों की तलाश की जा रही थी। निजी जीवन के उभरते प्रतिमानों, पारिवारिक जीवन में बढ़ती भंगुरता और पूर्व में उसको आश्रय देने वाली व्यवस्था के कारण वे भावनात्मक संबंधों को समझनें में अधिक अच्छी हो रही थीं। इन सभी रुझाानें ने मुझे यह

>>

अहसास कराया कि हमें सामाजिक जीवन के इस भावनात्मक केन्द्रीय पक्ष को उजागर करने के लिए अवधारणाओं को विकसित करने की आवश्यकता है।

एम. ओ. – क्या आप मनोविज्ञान और अन्य विज्ञानों में भावनाओं के प्रति व्यवहार से चिंतित थी?

ए. एच. – जी हाँ, यहां तक कि मेरे एक गुरू (मैंटर) इरविंग गॉफमैन भी। वह, अन्य सहयोगी और मैं एक कार में जा रहे थे और एक चुटकुले पर हँस रहे थे–वह पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करते थे और अपनी मियादी स्की यात्रा के लिए कैलिफोर्निया वापस आये थे–और इरविंग ने मेरी तरफ मुड़ते हुए कहा 'अरली, कार में यह सभी भावनाएं हैं।' मानो वह कह रहे हो ''तुम भावनाओं का वैज्ञानिक ढंग से कैसे अध्ययन कर सकती हो? यह संभव नहीं है।'' वे एक विज्ञान विषय के व्यक्ति थे, ब्लैक बॉक्स के साथ–तुम एक व्यक्ति के आन्तरिक पक्षों के बारे में बात नहीं कर सकते–मनोविज्ञान के दृष्टिकोण नहीं समझ सकते। और फिर भी, पूरे समय वह बड़ी होशियारी से आन्तरिक पक्षों पर बात करते रहते थे और उसका निर्माण करने के लिए हमें अत्यधिक महत्वपूर्ण साधन उपलब्ध करा दिए।

एम. ओ. – उसी लेख में आपने एक अवधारणा दी जो समाजशास्त्र की शास्त्रीय अवधारणाओं में अनुपस्थित थी, 'संवेदनशील स्वयं' (द सेंटीएंट सेल्फ) की अवधारणा, एक छवि जो सुझाव देती है कि भावनाओं के अध्ययन के लिए व्यक्ति की सक्रिय भूमिका को ध्यान में रखना आवश्यक है। क्या इसका अर्थ है कि भावनाएं मूल्यांकनात्मक विचारों का परिणाम होती हैं? क्या वे मूल्यांकनात्मक विचारों से उत्पन्न होती हैं या उत्प्रेरकों और मूल–प्रवृत्तियों से?

ए. एच. – इसका उत्तर है 'दोनों से'। एक तरफ मैं भावनाओं को चेतना के रूप में देखती हूं जैसे देखना, सुनना, छूना। यह बच्चों में होता हैं। परंतु जैविकीय निर्धारक यहीं पर बात समाप्त कर देते हैं। समाजशास्त्रीय भूमिका यहीं से प्रारम्भ होती है, भावनाओं को भिन्न तरीके से नाम देने व अध्ययन करने के लिए उस पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, भावनाओं की संज्ञा देते हैं, उन संज्ञाओं को अर्थ प्रदान करते हैं, उन अर्थों को सुनते और प्रत्युत्तर देते हैं। प्रत्यक्षीकरण के मनोवैज्ञानिक यह नहीं कहते कि 'हमारे पास आंखे हैं बस काम खत्म।' वे अध्ययन करते हैं कि हम देखना कैसे सीखते हैं।

लैपलैंड के एक व्यक्ति से मुझे बात करने का अवसर मिला था जिसने आर्कटिक सर्किल के ऊपर भीषण सर्दी में एक रास्ते के किनारे चलने का अपना अनुभव सुनाया। 'कभी–कभी आप सफेद बर्फ से घिर जाते हो', उसने कहा, 'और अचानक आप दो काली आंखों से चौंक जाते हो। यह एक स्नो पक्षी है। और फिर आप उन दो काली आंखों को ढूंढने लगते हो, आप दोबारा उसे देखने की तैयारी करते हो। आप बर्फ को भिन्न ढंग से देखते हो।' हम अपनी भावनाओं के साथ भी यही सब करते हैं। हम खुशी/आनन्द (आप इसे प्यार करने जा रहे हैं) या असंतोष (वह पास आ रहा है) के लिए तैयारी करते हैं। हम अपनी भावनाओं के प्रति 'उम्मीदपूर्ण स्थितियों' को विकसित करते हैं।

हम क्या अनुभव करने की उम्मीद करते हैं या क्या अनुभव करने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं, के अलावा भी हम क्या सोचते हैं, कि हमें कैसा अनुभव करना चाहिएः ''मुझे पुरस्कार जीतने पर खुश या एक अपराध करने पर डरना चाहिए।'' इस तरह के सकारात्मक वाक्य सूक्ष्म क्षण होते हैं जिसके माध्यम से हम नैतिक मानचित्रों का निर्माण करते है जो कि भावनाओं को निर्देशित करते हैं। हम समाजवैज्ञानिक अपने आप को स्वतन्त्र रुप से पूछताछ करने वाले के रूप में कल्पना करते हैं परंतु यदि हम नियमों को महसूस करने पर बहुत सावधानी से ध्यान नहीं देते हैं तो हम कितने स्वतंत्र हैं ?

एम. ओ. – उसी समय पर, जब हम हमारे जीवन में चिन्ता उत्पन्न करने वाली बाजार संस्कृति में प्रवेश करते हैं और जो इस चिंता का समाधान प्रस्तुत करती है, इसके परिणामस्वरूप सेवा उद्योग में वृद्धि होती है–हम निरन्तर ''परिवारिक मूल्यों'' और ''सामुदायिक मूल्यों'' को ढूंढते रहते हैं। क्या भावनाएं–और वे तरीके जिनसे हम उनका प्रबंधन करते हैं–सीमाओं को पार करने वाले सबसे बड़े संकेतक हैं? क्या आपको लगता है कि ''मनोवैज्ञानिक शक्ति'' हमारे समय की ''आर्थिक शक्ति'' का विरोध कर रही है?

ए. एच. – अपने निजी जीवन का वर्णन करने के लिए हम अक्सर बाजारू शब्दावली का प्रयोग करते हैं। ''मैंने यह विचार खरीदा।'' ''मुझे उसका ब्रांड पसंद हैं।'' ''उसने आपमे निवेश किया''। रूपक अलंकारों में भावना नियम चिन्हित होते हैं। मैंने 'सो हाउ इस द फैमिली' में एक नयी सेवा का उदाहरण दिया है जो आपको अपने भौगोलिक क्षेत्र में एक मित्र (समान लिंग, गैर–रोमांटिक) खोजने में मदद करती है। यह एक भुगतान सेवा है और यह आपको बताती है, 'यदि आप हमारी सेवा के लिए भुगतान करते हैं तो हम आपको सफलतापूर्वक एक मित्र ढूंढ कर देंगे। आपको इस निवेश का अच्छा लाभ मिलेगा और यदि आप सदस्य बनते हैं तो आप अन्य सदस्यों/उम्मीदवारों के बारे में जान पायेंगे जिन्हें हमने मित्रता के लिए नियुक्त किया है जो आपके लिए गंभीरता से मित्र ढूंढना चाहते हैं क्योंकि उन्हें इस सेवा के बदले भुगतान किया जाता हैं।' हम एक मित्र ढूँढने की क्रिया को 'निवेश पर लाभ' के रूप में देखते हैं मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या यह एक मित्र होने की भावनाओं में बदलाव कर देता है? ''द आउटसोर्सड सेल्फ'' में मैं इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही हूं कि हम किस प्रकार बाजार व निजी जीवन के बीच सीमा बनाते हैं, विशेष रूप से जैसे निजी सेवाओं के रूप में विशेषज्ञता का उच्च वर्ग से मध्य वर्ग तक विस्तार व प्रसार होता है। हम कब (एक श्रमिक या ग्राहक के रूप में) ''लगाव के प्रति चौकन्ना होते है'' क्योंकि हम स्वयं को व्यक्तिगत जीवन से बहुत अधिक पृथक महसूस करते हैं।

एम. ओ. – क्या आप अपने अगले प्रोजेक्ट के बारे में बता सकती है?

ए. एच. – 'द आउटसोर्सड सेल्फ' में मैंने देखा कि हम कैसे जीवन की कल्पना करने के बाजारी तरीकों और व्यक्तिगत (परिवार/समुदाय) तरीकों के बीच सीमाएं तय करते या नहीं करते हैं। अब मैं सरकार तथा निजी जीवन के बीच की सीमाओं को एक भिन्न तरीके से देखने की कोशिश कर रही हूं। सदी के अंतिम तिमाही में अमेरिका, सरकार के लिए उचित जगह और प्रकार्यों के लिए परंपरावादियों व उदारवादियों के बीच बढ़ते विवाद का अनुभव कर रहा था। दोनों एक भिन्न नैतिक मानचित्र का समर्थन कर रहे थे और भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए एक भिन्न व्यवस्था का प्रयोग कर रहे थे। आम तौर पर, उदारवादी ड्रोन स्ट्राइक और एन एस ए निगरानी से डरते हैं, परम्परावादी सरकार के अत्यधिक नियमन व करभार से डरते हैं।

अतः मैं अपने ही उदार विचारों से बाहर निकलने की कोशिश कर रही हूं और समानुभूतिपूर्ण तरीके से, अन्य विचारों के समर्थक लोगों को समझने की भी, ताकि भावनात्मक तर्कों के बारे में और अधिक जान सकूं जो उनके विश्वासों को और हमें निर्देशित करते हें। मैं इस बढती हुई खाई को भरने वाले माध्यमों का भी पता लगाना चाहती हूं ताकि हम पब्लिक स्पेस में वापस लौट सकें और विश्व को बेहतर बनाने के कुछ तरीकों पर सहमत हो सके। अतः देखते रहें। ■

सभी पत्राचार अरली हॉकचाइल्ड <ahochsch@berkeley.edu> एवं मेडोलेना डी ओलेवियरा–मार्टिन्स <madalenaom@gmail.com> को प्रेषित करें।

> भारत में निर्मित
एक शिशु खेत से रेखाचित्र

अमृता पांडे, केपटाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और डिट्टे मारिया, ब्योर्ग,
ग्लोबल स्टोरीज प्रोडक्शंस, डेनमार्क

अमृता पाँडे प्रचारित कर रही हैं कि सरोगेट माताओं को भी रचनात्मक कामगारों के समान श्रमिकों के अधिकार है, वे उसी प्रकार कशीदाकारी के उत्पादनकर्ता हैं जैसे बच्चों की।
चित्र मोर्टेन कर्जेगार्ड द्वारा।

''यह उत्कृष्ट था। मैंने इसके जैसा वृत्तचित्र रंगमंच कभी नहीं देखा था जहां एक पीएच. डी. समाजशास्त्री और अभिनेत्री एक विषय के शोध को प्रदर्शित करती है।''

साइमन एंडरसन, ''स्मगसोमर्न'', डेनिश राष्ट्रीय टेलीविजन।

रंगमंच और अभिनय अध्ययन के हमारे सहकर्मीयों के लिए सामाजिक चिंतन के लिए सृजनात्मक अभिनय एक साधारण घटना हो सकती है, पर हम समाजशास्त्रियों के लिए ऐसा नहीं हैं। हम में से अधिकतर या तो कोठरी या कक्षा प्रदर्शक हैं जो सृजनशीलता को नजर बचा कर अपनी पाठ्यपुसतकों की समाजशास्त्रीय कल्पना में लाते है।

इसलिये जब डिट्टे मारिया ब्जर्ग, कोपेनहेगन–स्थित ग्लोबल स्टोरीज प्रोडक्शंस की कला निर्देशक ने मुझे भारत में व्यवसायिक सरोगेसी की ''विशेषज्ञ'' का नाम दे दिया और मुझसे पूछा अगर मैं उसी विषय पर परस्पर संवादात्मक रंगमंच प्रस्तुति में सहयोग कर सकूं, मैं उछल पडी। डिट्टे का पिछला कला प्रस्तुतिकरण अमेरिकी समाजशास्त्री अर्ली हॉकचाइल्ड के भावात्मक श्रम के कार्य पर आधारित था, और यह अर्ली ही थी जिसने हम दोनों को मिलाया था। डिट्टे की योजना सरल थीः ''व्यवसायिक सरोगेसी पर एक कला

> >

क्षेत्र से लौटने पर सरोगेट माताऐं अमृता पाँडे के लिए ***गोद भराई*** *(baby shower) की रस्म मनाते हुए। चित्र मरियम नेलसन द्वारा।*

प्रस्तुतिकरण तैयार करना'' जिसके लिए उसे मेरा पी. एच. डी. क्षेत्रकार्य का खनन करना था। भारत में एक अदाकार के रूप में मेरी पिछली जिंदगी बहुत आरामदाय साबित हुई और मैं एक क्षेत्र–टिप्पणी प्रदाता से एक शिक्षक–अदाकारा के रूप में पदोन्नत हो गई।

इस तरह से हमारी अंतर्विषयक यात्रा शुरू हुई–दो कलाकार–शोधकर्ता सरोगेसी की अपनी समझ को बढ़ाने के एक तरीके के रूप में परस्पर संवादात्मक सामुदायिक रंगमंच की जांच–पड़ताल करते हैं।

एक समाजशास्त्री (अमृता) द्वारा उसके कार्य के पुनः अध्ययन के लिए सृजनात्मक तरीकों का कैसे उपयोग करें, इसको सीखते हुये और एक रचनात्मक कलाकार (डिट्टे) द्वारा एक कलाकार और एक शोधकर्ता के दोहरे लेंस का उपयोग करते हुये हमने क्षेत्र टिप्पणीयों की एक श्रृंखला के रूप में निम्नलिखित व्याख्यान विकसित किये। हमने भारत में निर्मित प्रस्तुतिकरण में दो क्षणों को केन्द्रित किया : अमृता के लिए सरोगेट्स द्वारा आयोजित गोद–भराई (बेबी शॉवर की हिंदु प्रथा) और सरोगेट्स के साथ एक कढ़ाई योजना। एक तरफ दोनों घटनाओं ने हमें सरोगेसी छात्रावासों के सख्त चिकित्सीय निगरानी में रहने वाली सरोगेट माताओं के साथ उनके ''अनुशासित माता–श्रमिक'' की भूमिका से बाहर अंतःक्रिया करने का मौका दिया (पांडे, 2010)। और दूसरी ओर, ये अनुभव दुनिया भर के दर्शकों के साथ बांटे जा सकते थे–लोग जिन्हें अन्यथा भारत की माता–श्रमिकों के साथ ''अंतःक्रिया'' करने का अवसर कभी नहीं मिल पाता। हम दोनों घटनाओं को सामुदायिक रंगमंच के रूप में देखते हैं, यद्यपि दो अलग समुदाय शामिल है–एक सरोगेट्स का और दूसरा दर्शकों का। भारत में निर्मित शिशु खेत के रेखांकन के संवादात्मक प्रस्तुतिकरण की परम् महत्वाकांक्षा इन दो समुदायों के बीच पुल बांधने की थी ताकि वे जांच कर सकें कि वो स्वयं को कैसे देखते हैं, दूसरे को कैसे देखते हैं और एक दूसरे के संबंध में स्वयं को कैसे देखते हैं।

> गोद भराई का मंचन (बेबी शॉवर)

डिट्टे: अमृता की क्षेत्र टिप्पणीयों को पढ़ते हुये मुझे जल्द ही महसूस हुआ कि इन कहानियों के संवेदी मंच प्रस्तुतिकरण लिए, मुझे अमृता और मेरी कलाकार टोली, मंच रूपकार, और वीडियो फोटोग्राफर के साथ भारत जाना होगा ताकि दृश्य सामग्री का निर्माण किया जा सके जो मंच और दर्शकों के बीच अनौपचारिक अंतःक्रिया स्थापित कर सके और किसी तरह विशेषज्ञ–साक्षात्कार कर्ता–समाजशास्त्री अमृता और साक्षात्कार देने वाली महिलाओं के संबंध को जांच कर सके। बिल्कुल ऐसा कैसे किया जाए, मैं उस दिन तक नहीं जानती थी जब अमृता ने मुझे फोन किया और कहा ''डिट्टे... मैं अपनी यात्रा के दौरान गर्भवती रहूंगी।''

अमृता: मेरे क्षेत्र से डिट्टे का परिचय भारत के प्रजनन चिकित्सालय और सरोगेसी छात्रावासों के जरिये हुआ जहां मैंने अपनी पुस्तक वुम्बस् इन लेबर के लिए बहुत सा नृजातीय कार्य किया था। अपने क्षेत्र की दोबारा यात्रा करने का निर्णय बहुत तनावपूर्ण रहा क्योंकि आप कभी आश्वस्त नहीं होते कि उत्तरदाता आपका बांहे फैलाकर स्वागत करेंगे या उनके जीवन का गलत अर्थ निकालने के लिए आपकी आलोचना करेंगें। मेरी वापसी पेचीदा थी क्योंकि उस समय मैं अपनी गर्भावस्था के

> >

छठे महीने में थी। मैं अनिश्चित थी कि स्वयं सरोगेट्स मेरे गर्भवती होने को कैसे समझेंगे। संभावित अशिष्ट शोधकर्ता बनने की मेरी चिंताएं पूर्व सरोगेट्स और दोस्तों ने स्पष्ट और दृढ़तापूर्वक खारिज कर दी जब मैंने इनसे ई–मेल और फोन द्वारा संपर्क किया। महिलाऐं एक सरल (अविवाहित पढ़ें) शोधकर्ता के नये अवतार का जश्न मनाने के लिए उत्सुक थी और डिट्टे मेरी वापसी को सवांदात्मक रंगमंच योजना का प्रवेश बिंदु बनाने के लिए उत्सुक थी।

जब हम सरोगेसी छात्रावास पहुंचे, मुझे वहां कुछ पुराने दोस्त मिले–महिलाऐं जो सरोगेट्स की तरह दूसरी या तीसरी बार गर्भवती थी। उन्होंने स्वयं ही उत्साहपूर्वक मेरे लिए गोद भराई का आयोजन खुद पर ले लिया। छात्रावास की मुख्य परिचारिका सरोगेट्स की गर्भावस्था के सातवें महीने में ऐसे संस्कार प्रायः आयोजित करती थी। एक बार के लिए, सरोगेट माताऐं छात्रावास के सारे नियम तोड़ कर, दोपहर की झपकी छोड़कर, उसकी बजाय मुझे तैयार कर सकती थी। जिगना, एकमात्र उच्चजातीय सरोगेट, स्वेच्छा से संस्कार के लिए ''पुजारी'' बनने के लिए तैयार हो गई और पूजा श्रृंगारिका बन गई। इस क्षेत्र में अपने शोध के छः वर्षों में मैंने पहली बार सरोगेट्स को इस तरह के अनियंत्रित तरीके से अपने छात्रावास के बिस्तरों से दूर, शारीरिक रूप से सक्रिय, गाते, नाचते और हंसते हुये देखा था। महिलाऐं ऊर्जावान थी चाहे कलाकारों की टोली का अच्छा लगे या ना लगे। यदि यही था जो एक कलात्मक हस्तक्षेप प्राप्त कर सकता था, तो मैं पूरा इसी के लिए थी। जैसा कि गाना दोपहर तक चलता रहा, एक सरोगेट माता वैशाली ने धीरे से टिप्पणी की ''अंतर बस इतना है कि इस सब के अंत में आपको शिशु रखने के लिए मिल जाता है।''

> कढ़ाई योजना

अमृता: सरोगेसी से जुड़ी हुई चिंताओं को देखते हुये, ये शायद ही आश्चर्य की बात है कि सरोगेसी की बहस के लिए नैतिकता से दूर रह पाना मुश्किल है। सरोगेसी छात्रावास शिशु खेत के प्रति अमानवीय दृष्टि को और बढ़ाते है। ''परंतु इस बारे में लगातार बात करना कि यह कितना अनैतिक है, ये गरीब गेहुएं रंग वाली महिलाऐं अपनी कोख बेचने के लिए बाध्य हो रही हैं? का कोई फायदा है। क्या हमें आगे बढ़ कर यह महसूस करने की जरूरत नहीं है कि ये महिलाऐं श्रमिक हैं, श्रमिक अधिकारों वाली श्रमिक? आप क्या सोचते हैं?'' मैंने ये पंक्तियां यूरोपियन रंगमंच के दर्शकों के लिए लिखी हैं और सोचती हूं कि वो कैसी प्रतिक्रिया देंगे। कोई कैसे अपना ध्यान नैतिकता से हटकर श्रमिक अधिकारों की तरफ मोड़ेगा?

डिट्टे: सरोगेसी छात्रावास में रहने वाली महिलाओं के लिए होने वाली ''प्रशिक्षण'' गतिविधियों में से एक है कढ़ाई। सप्ताह में दो बार एक प्रशिक्षक आता है और महिलाओं को साधारण आकृतियां जैसे फूल और पत्तियां बनाना सिखाता है। ये लैंगिक कार्य गर्भवती महिलाओं के लिए ''ठीक'' प्रतीत होता है, इससे शिशु को कोई नुकसान नहीं होता, और न ही यह अनुशासन रणनीति, चिकित्सा कर्मचारियों और छात्रावास में आने वाले ग्राहकों को चुनौती नहीं देता है। किंतु हम एक चालाकी वाली योजना के साथ आयेः क्या हम महिलाओं के सहयोग से प्रस्तुति के लिए कुछ कढ़ाई नहीं बना सकते जो सरोगेट्स के रूप में उनके ''कार्य'' के बारे में रूपांकन कर सके? महिलाओं को उनके कार्य के लिए पारिश्रमिक मिल जायेगा और हमारे दर्शकों को महिलाओं का एक मूर्त निरूपण देखने को मिल जायेगा और यह समझने का भी कि ये महिलाऐं श्रमिक हैं और शिशुओं के अलावा और कुछ भी बना सकती हैं। ये योजना एक प्रसिद्ध कलाकार/सक्रिय कार्यकर्ता मल्लिका साराभाई और ''सेवा'' (असंगठित महिलाओं का एक स्वयंसेवी संगठन) के साथ मिलकर बनायी गयी। हम सरोगेसी छात्रावास में पहुंचे जहां 50 गर्भवती महिलाऐं हमारे विचार सुनने और कढ़ाई के प्रारूप देखने के लिए टीवी वाले कमरे में एकत्रित थी। जैसे ही उनको अहसास होने लगा कि सभी कढ़ाई सरोगेट्स के रूप में उनके कार्य और ''उत्पादों'' के बारे में हैं, वो सब हंसने, खिलखिलाने और बातचीत करने लगी। कढ़ाई के बारे में हमारे सारे विचारों जैसे इन्जेक्शन, भ्रूण, स्थानांतरण और अंड हटाने को उनके स्वयं के सरोगेसी के अधिक दृढ़ छवि– हवाईजहाज, मोबाईल फोन, और हॉट चिली पैपर्स से जोड़ दिया गया।

भारत में निर्मित की अंतिम प्रस्तुति में इन कढ़ाईयों को एक डोरी से जोड़ दिया गया और दर्शकों के सामने रखा गया, और उसके तुरंत बाद अमृता ने सरोगेसी को श्रम के रूप में और सरोगेट्स को श्रमिक अधिकारों वाले श्रमिकों के रूप में देखने का अपना विचार प्रस्तुत किया। दर्शकों को अंतराल के दौरान कढ़ाईयों को छूकर देखने का मौका दिया गया और इस बात पर अपने विचार प्रस्तुत करने का कि प्रत्येक कढ़ाई का काम भारत में सरोगेट माता की तरह काम करने वाली महिला का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुति के अंतिम भाग में दर्शक अपना मन बना सकते थे और इस प्रक्रिया के कई पात्रों से प्रश्न पूछ सकते थे।

> भारत में निर्मित – 2013–2014 यात्रा पर

भारत में निर्मित स्कैंडेनेविया में बहुत सफल रहा। प्रस्तुति स्टॉकहोम फॉल 2012 में शुरू हुई। पूरे स्वीडन में यात्रा करने के बाद, 2013 में यह प्रस्तुति डेनमार्क में विभिन्न स्थानों पर दी गई। भारत में निर्मित का अब एक पर्यटन संस्करण मौजूद है। अमृता पांडे और डिट्टे मारिया ब्र्जग प्रस्तुति और सम्मेलनों और त्यौहारों पर प्रस्तुत करना चाहते हैं, एक उदाहरण के तौर पर कि किस तरह कला और शैक्षिक क्षेत्र एक दूसरे को उद्दीप्त कर सकती है। मंच पर अमृता पांडे, जो सरोगेसी प्रक्रिया में शामिल विभिन्न पात्र निभाती है, द्वारा प्रश्न और उत्तर दिये जाने को मिलाकर प्रस्तुति दो घंटे लंबी है। ■

सभी पत्राचार अमृता पांडे
<amritapande@gmail.com> को प्रेषित करें।

अधिक जानकारी, समीक्षाओं और दृश्यों के लिए देखें: www.globalstories.net

> इक्कीसवीं शताब्दी के मोड़ पर फ्रेंच समाजशास्त्र

ब्रूनो कजिन, लिले[1] विश्वविद्यालय, फ्रांस, सदस्य आई. एस. ए. की क्षेत्रीय एवं नगरीय विकास शोध समिति (**RC 21**) और दिदियर देमाजेयरे, **CNRS** एवं साइन्सेज पो, फ्रांस

न तो फ्रेंच समाजशास्त्र एक विषय के रूप में और न ही समाजशास्त्रीय पेशा जैसा कि फ्रांस में व्यवहार में लाया जाता है, का समाजशास्त्रीय वस्तु के रूप में व्यवस्थित ढंग से अध्ययन किया गया है। यद्यपि दर्शनशास्त्र एवं अर्थशास्त्र जैसे अन्य विषय कई विश्लेषणों का केन्द्र रहे (जैसे फ्रेड्रिख लेबारोन एवं मेरियान फॉरकेड द्वारा अर्थशास्त्रियों पर विकसित), राष्ट्रीय स्तर पर हमारे अपने विषय का समग्र परीक्षण नहीं हुआ है।

हालांकि, हमारे पास बुद्धिजीवी माने जाने वाले सबसे रचनात्मक और या जो संगठनों में महत्वपूर्ण पदों पर हैं, समाजशास्त्रियों पर कई मोनोग्राफ या जीवनियां है : उदाहरण के लिए जार्जेस फ्रीडमैन और जर्जिस गुरविच, जो यद्यपि गैर फ्रांसीसी भाषी पाठकों के लिए अज्ञात है, ने युद्ध के बाद के समय में फ्रेंच शैक्षणिक जगत के अन्दर समाजशास्त्र को स्थापित करने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई थी। ऐसा उन्होंने इमाइल दुर्खीम के विद्यार्थी (मार्सल मॉस, मॉरिस हाल्बवाच) और बाद के साथियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित कर के किया। इसके अलावा, पिछली अर्द्ध शताब्दी के सबसे प्रभावशाली समाजशास्त्रियों : रेमण्ड ऐरा, जार्जेस बालनडियर, ल्यूक बोलतान्सकी पियरे बोर्दियू, मिशेल क्रोजियर, फ्रांस्वा दयूबेट, हेनरी लेफेवरे, हेनरी मेण्डरास, एडगर मोरिन, पियरे नेविल, जेरार्ड नोइरेल और डोमनिक श्नैपर, की आत्मकथाएँ अहंकार इतिहास या स्व विश्लेषण भी है। कम औपचारिक कथनों और अन्य सहकर्मियों के चिंतन, कुछ विभागों और अनुसंधान केन्द्रों के अधिकारिक इतिहास और हमारी प्रत्यक्ष टिप्पणियों के साथ ये संदर्भ हमें पिछले कुछ दशकों में फ्रेंच समाजशास्त्र के सामान्य उद्विकास को चित्रित करने की अनुमति देते हैं।

पहला मुख्य परिवर्तन चिन्तन के स्कूलों के मध्य विरोध का कमजोर होना व इसका प्रतिस्थापन थीम के चारों ओर विद्वानों के अभियोजन के द्वारा है। यद्यपि चिन्तन के स्कूल एक तरफ विद्वानों के सशक्त सैद्धान्तिक पैराडाईम के चारों तरफ संयोजित हो रहे थे, एक अग्रणी विद्वान और एक अनुसंधान केन्द्र, लगभग हमेशा पेरिस में, थीम आधारित संगठन किसी एक विषय के विशेषज्ञों के मध्य सहकार्य के पक्ष में होता है। उदाहरण के लिए आज एक बार प्रभावशाली चौकड़ी बोर्दियू–टूरैन–क्रोजियर–बाउदोन, जिसने 1970 के दशक के मध्य से 1990 के दशक के उत्तरार्ध (अर्थात् ऐतिहासिक भौतिकवाद के अकादमिक पतन और संरचनावाद की सफलता) की आज कोई बराबरी नहीं है। निसंदेह इन परम्पराओं के संबंधित उत्तराधिकारियों के मध्य वैज्ञानिक विवाद और प्रतिद्वंदिता पूर्ण रूप से गायब नहीं हुई है, और सशक्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता के साथ अन्य नये सैद्धान्तिक संविन्यास उभरे हैं।[1] हालांकि, आजकल वृहद सैद्धान्तिक विवाद के बजाय हम वृहद थीम : नगरीय समाजशास्त्र, आर्थिक समाजशास्त्र, राजनैतिक समाजशास्त्र, शिक्षा का समाजशास्त्र, प्रवास का समाजशास्त्र इत्यादि, के आसपास वैज्ञानिक बहस के पुनर्गठन को देखते हैं।

विशेषज्ञता के प्रति यह रूझान, आंशिक रूप से 20वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में शोधकर्त्ताओं और शिक्षक–अन्वेषकों की संख्या में भारी वृद्धि के कारण आया है। यह प्रवृत्ति व्यक्तिगत शोधकर्त्ता को अधिक सटीक शोध वस्तु के द्वारा विभेदन को प्राप्त करने के लिए उकसाती है और विषयगत उपक्षेत्रों के सृजन या सुदृढ़ीकरण, उनमें से प्रत्येक में अब निश्चित स्वायत्तता को प्राप्त करने हेतु काफी सदस्य हैं, को बढ़ावा देती है। इसके अलावा दुनिया भर के वैज्ञानिक साहित्य तक आसान पहुँच ने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अवसरों को प्रदान किया है, परन्तु उपक्षेत्रों के मध्य की सीमाएं भी अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में दक्षता और संवाद को स्थापित करने की बढ़ती अवसर लागत से सुदृढ़ हुई है जैसे अंग्रेजी साहित्य को अब अंग्रेजी के साथ मुख्य फ्रांसीसी पत्रिकाओं में प्रकाशित करना आवश्यक है।

पिछले पन्द्रह वर्षों में सामाजिक विज्ञानों में सबसे प्रतिष्ठित अनुसंधान विश्वविद्यालयों–जिसमें साइन्सेज पो और EHESS (The School of Advanced Studies in Social Sciences) सम्मिलत हैं– ने अंतर्राष्ट्रीय ध्यान और प्रभाव को आकर्षित किया और इस तरह विखण्डन के प्रति इस रूझान को परोक्ष रूप से बढ़ावा दिया। इसी प्रकार थीम आधारित उपक्षेत्रों

> >

> *"प्रभावशाली चौकड़ी बोर्दियू–टूरैन–क्रोजियर–बाउदोन, की आज कोई बराबरी नहीं है।"*

के आस पास फ्रेंच समाजशास्त्रीय संघ (2002 में स्थापित) के संगठन ने इस प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से सुदृढ़ किया।[2] इसके अतिरिक्त विषयगत विशेषज्ञता व्यापक तौर पर फ्रेंच अकादमिक जगत द्वारा सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी के अन्तर्गत अन्तः वैषयिकता में व्यापक रूचि के साथ सुसंगत है। यह Ecole des Annales द्वारा उन्हें एकजुट करने के दीर्घ प्रोजेक्ट के समान है। अंत में, यह उद्विकास क्षेत्रीय विशेषज्ञता की मांग कर रहे विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाता है।

वास्तव में, 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ से फ्रेंच समाजशास्त्रियों द्वारा अपनाई गई तीन भूमिकाएँ–अनुसंधान को समर्पित विद्वान, निर्णय करने वालों के सलाहकार, और/या विवेचनात्मक विद्वजन – कई परिवर्तनों से गुजरी। फ्रेंच अनुसंधान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए हाल ही में हुए सुधार शायद पहली भूमिका को सुदृढ़ करते हैं। हालांकि शोधकर्त्ता और शिक्षक–अन्वेषक पदों में कमी (देखिए ग्लोबल डायलाग के इस अंक में मुसेलिन का लेख), अनुसंधान हेतु वित्त पोषण के प्रस्तावों के प्रतिस्पर्धी निमन्त्रण द्वारा सामान्यीकरण और प्रबंधकीय मूल्यांकन के नौकरशाही तंत्र का विस्तार, सहकर्मी समीक्षा के कई उदाहरणों (देखिये ग्लोबल डायलाग के इस अंक में लेबरॉन का लेख) ने अन्य विषयों के विद्वानों के साथ साथ समाजशास्त्रियों की व्यक्तिगत और सामूहिक स्वायत्तता को कम किया है।

इसी समय, फ्रेंच समाजशास्त्रियों की सलाहकार वाली भूमिका में वृद्धि नहीं हुई है। यद्यपि कई समाजशास्त्री राष्ट्रीय और स्थानीय सलाहकार समितियों, वैचारिक समूहों या फिर बौद्धिक सम्पर्क के संचालन या फिर सार्वजनिक बहस को संरचित करने के उद्देश्य से भाग लेते हैं, लेकिन सार्वजनिक नीतियों के वास्तविक विकास में समाजशास्त्रियों का बहुत कम प्रभाव है। उनकी विशेषज्ञता को सरकार में उच्च पदासीन टेकनोक्रेट द्वारा आंतरिक रूप से विकसित विश्लेषण के पूरक के (सीमित) रूप से माना जाता है (जबकि इन सरकारी अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का कार्य करने वाला मुख्य स्कूल, Ecole Nationole d' Administration, समाजशास्त्र पर बहुत कम ध्यान देता है); और अर्थशास्त्र को शासन के लिए अधिक वैध और प्रभावी विज्ञान के रूप में माना जाता है। तथापि, कुछ मामलों में, सार्वजनिक क्षेत्र जब ''सामाजिक प्रश्नों'' का सामना करता है और निजी क्षेत्र, जब मानवीय संसाधन के प्रबंधन से चिंतित होता है, दोनों ही समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि को आवश्यक समझते हैं (देखिये ग्लोबल डायलाग के इस अंक में नेयरत का लेख)

अंत में, समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण आयाम– असमानता की निंदा करने की क्षमता और शोषण, प्रभुत्व, भेदभाव और सामाजिक पुनरूत्पादन के यंत्रों के साथ ही सामाजिक आंदोलनों को अवधारणात्मक उपकरण एवं वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का विकल्प देने की क्षमता – भी हाल के वर्षों में बदल गये है। 2002 में पियरे बोर्दियू की मृत्यु के बाद, फ्रांस के किसी भी समाजशास्त्री ने एक विवेचनात्मक समाजशास्त्री के रूप में तुलनात्मक ख्याति प्राप्त की नहीं है। लेकिन विशेषज्ञता की तरफ रूझान ने कार्यरत समाजशास्त्रियों एवं सामूहिकता का ''विशिष्ट बुद्धिजीवी'' (मिशेल फूको द्वारा इस्तेमाल किये गये संदर्भ में) के रूप में गुणन का पक्ष लिया है और उनके विश्लेषण एवं राजनीतिक स्थिति अक्सर मुख्य राष्ट्रीय अखबारों के मतपृष्ठ, शैक्षणिक जगत के अन्दर और बाहर पढ़े जाने वाली पत्रिकाओं और लघु निबन्ध संग्रहों में अक्सर प्रदर्शित होते हैं। इसके साथ, अन्य स्थानों जैसे फ्रांस में रिफ्लेक्सिविटी के प्रति बढ़ती हुई प्रवृत्ति, विवेचनात्मक विचार और विवेचनात्मक समाजशास्त्र को उत्पन्न करने की कठिनाइयों पर चिंतन करने को प्रोत्साहित करती है, कभी कभी समाजशास्त्रीय पेशे के नियमन पर प्रभाव के साथ, जैसा कि जब राष्ट्रीय संघ ने आचार संहिता को स्वीकारने से मना कर दिया था। (देखिये ग्लोबल डायलाग के इस अंक में पुडल का लेख) ■

सभी पत्राचार
ब्रूनो कजिन <bruno.cousin@univ-lille1.fr> और दिदियर डेमाजेयर <d.demaziere@cso.cnrs.fr> को प्रेषित करें

[1] For instance, the sociology of critical capacity and regimes of action by Luc Boltanski and Laurent Thévenot, as well as actor-network theory by Bruno Latour and Michel Callon, are often cited as renowned examples of a proliferating French "pragmatic sociology."

[2] Concerning the French Sociological Association, see Cousin, B. and Demazière D. (2014) "L'Association Française de Sociologie: A Young and Rallying Organization," *European Sociologist* 36, pp. 10-11: http://europeansociology.org/docs/Newsletter/ESA_Newsletter_Summer%202014.pdf

> फ्रांस में लुप्त होते अकादमिक कैरियर

क्रिस्टिन मुसेलिन, साइन्सेज पो. **CSO-CNRS**, पेरिस

फ्रांस की उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान व्यवस्था तीन भिन्न प्रकार की संस्थाओं के मिश्रण से बनी है : पी. एच. डी. पाठ्यक्रम करवाने वाले विश्वविद्यालय; राष्ट्रीय शोध संस्थान जिसमें बहुवैषयिक CNRS (National Center for Scientific Research) और अधिक विशेषीकृत जैसे जीव विज्ञान के लिए INSERM, या कृषि और कृषि विज्ञान के लिए INRA जैसे अधिक विशिष्ट संस्थान; और grandes écoles जो फ्रांस के औद्योगिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक अभिजात्य को प्रशिक्षित करती है परन्तु वहां शायद ही कभी डाक्टोरल अभ्यर्थी होते हैं। समाजशास्त्रियों सहित, फ्रांस के सामाजिक वैज्ञानिक अधिकांशतः विश्वविद्यालयों में कार्य करते हैं। CNRS में कुछ पद उपलब्ध हैं लेकिन इसने विश्वविद्यालयों की अपेक्षा हमेशा कम ही विद्वानों को भर्ती किया है और यह अंतर बढ़ता रहता है : छात्रों की संख्या में वृद्धि के साथ विश्वविद्यालय पद भी काफी मात्रा में और हमेशा CNRS पदों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़े। कुछ समाजशास्त्री विशेषीकृत अनु– संधान संस्थानों में भी कार्य करते हैं परन्तु वे थोड़े हाशिये पर हैं क्योंकि वे सामाजिक विज्ञान पर केन्द्रित नहीं है।

अंत में कुछ समाजशास्त्री अभियांत्रिकी या बिजनेस स्कूल में कार्य करते हैं; हमारे पास इस अंतिम समूह पर कोई आंकड़े नहीं है, परन्तु चूंकि उनका कैरियर और वेतन प्रत्येक स्कूल के लिए विशिष्ट हैं, यह लेख विश्वविद्यालयों पर केन्द्रित है जहाँ आज भी अधिकांश शैक्षिक समाजशास्त्री कार्य करते हैं।

विश्वविद्यालयों के पदों के लिए पी. एच. डी. आवश्यक है और आवेदकों को – विषय सम्बन्धित राष्ट्रीय समिति द्वारा संरचित राष्ट्रीय संस्था – द्वारा 'योग्य' के रूप में पहचाना जाना आवश्यक है – (Marlre de Conferences (MCF) के पहले पद पर आवेदन करने के लिए CNU, Connte National des Universites)। यह बात ध्यान में रखना आवश्यक है कि फ्रांस में ऐसे पद पदावधि वाले हैं; ऐतिहासिक रूप में फ्रेंच विश्वविद्यालयों में पदावधि का मार्ग नहीं था। हालांकि हाल ही में कुछ grandes écoles ने इस विचार को प्रस्तावित किया है। 2013 में योग्यता की माँग करने वाले समाजशास्त्र में 3852 पीएच.डी. में से सिर्फ 221 को योग्यता मिली और इनमें से कई ने, पिछले तीन वर्षों में योग्यता प्राप्त करने वालों के साथ, क्योंकि यह योग्यता चार वर्षों तक मान्य रहती है – उसी वर्ष में खाली 27 समाजशास्त्र पदों के लिए प्रतिस्पर्धा की।

चूंकि CNRS द्वारा पेशकश किये गये पदों की संख्या अत्यंत कम है (औसतन एक वर्ष में 5–6) शैक्षणिक पद समाजशास्त्र में डाक्टरों के लघु समूह से सम्बन्धित होते हैं। 2012 में नव योग्य में से 6.5% भर्ती हुए। 2012 में नई भर्ती किए गए MCF औसतन 35 वर्ष की आयु के थे और तकरीबन 57% महिलाएँ थी। स्पष्ट तौर पर कई ''अर्हता प्राप्त'' डाक्टर शैक्षणिक जगत (acadame) के दरवाजे पर खड़े रह गये। जैसा हाल ही के एक अध्ययन ने दर्शाया कि फ्रेंच शिक्षाविद् अभी भी युवा और उत्पादक नये सहकर्मी को वरीयता देते हैं अर्थात् एक रेखीय प्रक्षेपपथ वाले सहकर्मी जिन्होंने हाल ही में पी. एच. डी. पूरी की है। परिणामस्वरूप जो पी. एच. डी. के तुरन्त बाद नहीं घुसते हैं और उत्तरोत्तर पोस्ट–डॉक पद ग्रहण करते हैं, उनके MCF बनने की संभावना कम होती जाती है।

एक बार MCF बनने के बाद, शिक्षण की ड्यूटी 192 घंटे प्रति वर्ष पहुँच जाती है और कई जगहों पर नये लोगों को उन कक्षाओं को जिन्हें और कोई नहीं लेना चाहता है और काफी महत्वपूर्ण सेवा घंटों को स्वीकारने को कहा जाता है। अतः शोध गतिविधि के उच्च स्तर को बनाये रखना और अधिक की मांग वाले समय अनुभवजन्य क्षेत्रीय कार्य को करना अक्सर मुश्किल होता है। पेरिस जैसे रहने की उच्च लागत वाले शहरों में, MCF को दिये जाने वाला कम वेतन – कुछ वर्ष बाद करीब 2500 यूरो प्रतिमाह – नई भर्ती के कुछ संकाय सदस्यों द्वारा भुगतान वाले ओवरटाइम की पेशकश के साथ अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय को और कम कर देता है – एक ऐसा पैटर्न जो शायद अपने कैरियर के अंत तक प्रोफेसर न बनते हुए, MCF ही बने रहते हैं।

>>

“स्पष्ट तौर पर कई ‘अर्हता प्राप्त’ डाक्टर academe के दरवाजे पर खड़े रह गये।”

प्रोफेसर पर पदोन्नति के लिए, एक तरह की दूसरी थीसिस, habilitation à diriger des recherches को उत्तीर्ण करना आवश्यक है। एक बार पुनः अभ्यर्थियों को प्रोफेसर के पद पर आवेदन हेतु उसी राष्ट्रीय विषय–आधारित समिति द्वारा ‘‘योग्य’’ करार दिया जाना चाहिए। योग्यता की दर उँची है (2013 में इसकी माँग करने वाले 64 अभ्यर्थियों में से 67%) और हाल ही के वर्षों में प्रक्रिया इतनी प्रतिस्पर्धी नहीं रही है। 2013 और 2010 में योग्य 42 नवयोग्य को 21 पद की पेशकश हुई) 2012 में नव योग्य के 30% प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए। 2012 के नव नियुक्त प्रोफेसर की औसत आयु 47 वर्ष थी और उनमें से लगभग 41% महिलाएँ थीं।

शैक्षणिक पेशे तक पहुँच के लिए प्रतिस्पर्धा दर्शाती है कि यह अभी भी कई के लिए आकर्षक है, हालांकि यहाँ बहुत अच्छा वेतन नहीं दिया जाता है। एक maitre de conferences का वेतन 2100 यूरो प्रति माह से एक वरिष्ठ प्रोफेसर के लिए 6000 यूरो प्रति माह के मध्य रहता है। वेतन वृद्धि आंशिक रूप से वरिष्ठता पर लेकिन उससे भी ज्यादा कोई कितनी जल्दी प्रोफेसर बनेगा पर निर्भर करता है, लेकिन सामाजिक विज्ञानों में यह विज्ञानों की तुलना में आम तौर पर देर से होता है।

हाल ही के वर्षों में विश्वविद्यालय प्रशासन में सुधारों से समाजशास्त्रियों सहित फ्रेंच शिक्षाविदों की स्थिति नाटकीय रूप में बदल गई। शिक्षाविद् आज भी राज्य द्वारा स्थापित राष्ट्रीय प्रस्थिति के साथ लोकसेवक हैं लेकिन विश्वविद्यालयों को अधिक से अधिक दक्षता सौंप दी गई है। 2007 के बाद से विश्वविद्यालय उनके वेतन के लिए जिम्मेदार है, जिसने संकाय सदस्यों को अपनी संस्थान के कर्मचारी के रूप में बना दिया है। उसी समय मूल्यांकन का विस्तार, प्रोजेक्ट आधारित अनुसंधान और प्रदर्शन के आधार पर बजट ने विश्वविद्यालयों को अपने कर्मचारियों के बारे में अधिक जानकारी दी है और संस्थागत योग्यता–आधारित मूल्यांकन और पुरस्कार की अनुमति प्रदान की है। यह एक ऐसा परिवर्तन है जिसने खेल के नये नियमों को सफलतापूर्वक अपनाने वाले और अन्य के मध्य भेद को थोड़ा बढ़ा दिया है। इसने विषयों के मध्य के अन्तर को भी बढ़ा दिया है जिसमें कुछ को नई मांग को पूरा करना दूसरों से अधिक आसान लगता है। विश्वविद्यालय के वित्त पोषण के नियमों के विकेन्द्रीकरण और अधिक प्रतिस्पर्धी परिस्थिति से समाजशास्त्री लाभान्वित होंगे या नहीं, यह कहना अभी जल्दबाजी होगी परन्तु इस Sluft को आने वाले वर्षों में निगरानी करना आवश्यक है। ■

सभी पत्राचार क्रिस्टीन मुसेलिन <christine.musselin@sciencespo.fr> को प्रेषित करें।

[1] Furthermore, and by contrast with the CNRS (and the INSERM), the research labs of specialized research institutions are not located within universities while about 85% of the CNRS researchers, and almost all of them in social sciences, are active in research units that are affiliated both to the CNRS and to the universities.

[2] All figures are based on statistics produced by the Ministry for Higher Education and Research: http://www.enseignementsup-recherche.gouv.fr/pid24586/concours-emploi-et-carrieres.html (May 9, 2014).

> फ्रांस में समाजशास्त्रीय अनुसंधान का मूल्यांकन करना

फ्रेडरिख लेबरान, वरसाई सेन्ट क्वें–इॅ–इवलिन विश्वविद्यालय, फ्रांस

अन्यत्र जैसे फ्रांस में भी समाजशास्त्री अपनी रोजमर्रा के जीवन का काफी समय एक दूसरे के कार्यों के मूल्यांकन और साथ ही कई मूल्यांकनों के प्रत्युत्तर देने में खर्च करते हैं। बेशक, यह देखते हुए कि फ्रांस में उच्च शिक्षा और अनुसंधान और साथ ही राष्ट्रीय बौद्धिक आदतें जिस प्रकार नियोजित हैं, यह अर्द्ध–सार्वभौमिक गतिविधि कई विशिष्ट स्वरूप लेती है।

> डाक्टरेट का मूल्यांकन और शोध पर्यवेक्षण हेतु प्रमाणन

फ्रांस में डाक्टरेट शोध ग्रंथ का मूल्यांकन बड़े विशिष्ट तरीके से होता है। शोध ग्रंथ, स्वयं काफी लंबा होता है, आम तौर पर 300 से अधिक पृष्ठ और कभी कभी 1000 पृष्ठों के समीप। यह जूरी के भावी सदस्यों–अक्सर पाँच या छः संकाय सदस्य या enseignants-chercheurs, जिसमें शोध ग्रंथ सलाहकार भी सम्मिलित है, को प्रस्तुत की जाती है। इनमें से दो आवश्यक रूप से अन्य विश्वविद्यालयों से बाह्य समीक्षक होने चाहिए, जो शोध ग्रंथ के बचाव को निलंबित करने का निर्णय ले सकते हैं। यदि दोनों समीक्षक शोध ग्रंथ को स्वीकार कर लेते हैं तो शोध ग्रंथ सलाहकार से प्रारम्भ हो, जूरी का प्रत्येक सदस्य शोध प्रबंध बचाव के दौरान उस पर टिप्पणी करेगा। तदोपरान्त वे एक लंबी प्रक्रिया में जो तीन घंटे से भी अधिक चलती है, उम्मीदवार से प्रश्न पूछेंगे। इसके बाद जूरी उम्मीदवार को सर्वोच्च सम्मान अर्थात् "felicitations du jury", केवल "tres honorable" विशिष्टता या फिर उससे भी कम ग्रेड से नवाजने के बारे में निर्णय लेती है। प्रथम के लिए जूरी में सर्वसम्मति से सहमति, जो गुप्त मतदान द्वारा प्राप्त की जाती है, होनी चाहिए। अंत में जूरी का अध्यक्ष एक लंबी शोध ग्रंथ रिपोर्ट या rapport de these, जिसमें बचाव के दौरान प्रत्येक जूरी सदस्य द्वारा क्या कहा गया, का समाहार सम्मिलित होता है, तैयार करता है। यह रिपोर्ट डाक्टोरल स्नातक के अकादमिक भविष्य में निर्णायक भूमिका अदा करती है।

सभी डाक्टोरल छात्र इस "felicitations du jury" जो समीक्षात्मक है परन्तु काफी स्वेच्छित भी, को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं (कुछ विश्वविद्यालयों ने इस कार्य प्रणाली का परित्याग करना चुना है)। अतः समाजशास्त्र में शोध ग्रंथ पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता हैं। Rapport de these जिसमें उम्मीदवार के योगदान को स्पष्ट करने वाले जूरी सदस्यों की टिप्पणियाँ होती हैं, शोध ग्रंथ की गुणवत्ता के बारे में संश्लिष्ट और काफी सटीक विवरण प्रदान कर सकती है ।

> बौद्धिक सम्पदा का मूल्यांकन (लेख, पुस्तकें, रिपोर्ट)

पिछले कुछ वर्षों में शोध पत्रिकाओं में लेखों के मूल्यांकन में स्पष्ट परिवर्तन हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मूल्यांकन प्रणाली का ''सामान्यीकरण'' जिसमें लेखक अनामिकता, कम से कम दो समीक्षकों द्वारा अज्ञात एवं विस्तृत समीक्षा और दोनों समीक्षा और लेख का यथोचित और समयोचित कायापलट, हो रहा है। ये परिवर्तन, अकादमिक कैरियर के विभिन्न चरणों पर प्रकाशन के बढ़ते दबाब द्वारा प्रेरित हैं।

फ्रांस की शोध पत्रिकाओं में अंग्रेजी प्रकाशन अभी भी दुर्लभ है, परन्तु ये शोध कर्ताओं और संस्थानों दोनों के लिए मूल्यांकन के मूल मापदण्ड बन गये हैं, – जिसका शोध पत्रिकाओं पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। फ्रेंच समाजशास्त्र के सर्वाधिक मौलिक निष्कर्षों की दृश्यता को बढ़ाने हेतु शोध पत्रिकाएँ अपने लेखों में से चुनिंदा लेखों का अंग्रेजी में अनुवाद कराती है।

French Evaluation Agency for Research and Higher education (AERES) विषय में वैज्ञानिक दृष्टि से अग्रणी शोध पत्रिकाओं की सूची का कई भाषाओं में प्रकाशन करता है। बेशक, व्यवहार में, मुख्य पत्रिकाएँ कौन सी हैं पर गुणात्मक राय बनी रहती है, और यह इस सूची के आस पास और क्या कुछ शोध पत्रिकाएँ ''समाजशास्त्रीय'' है या नहीं के साथ उनकी गुणवत्ता के बारे में तनाव को भड़काता है।

यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि पुस्तकों का प्रकाशन करना अभी भी महत्व पूर्ण है। शोध प्रबंध अक्सर पुस्तकों के रूप में प्रकाशित होते हैं और वैयक्तिक और सामूहिक संस्करण शिक्षण के साथ पेशेवर बहस को भी संरचित करते हैं।

> कैरियर एवं संस्थाएँ

अकादमिक पद विशिष्ट समितियों द्वारा आकलन पर आधारित होते हैं : फ्रेंच विश्वविद्यालयों के लिए ''चयन समिति'' और National Centre for Scientific Research या CNRS के पदों के लिए एक ''राष्ट्रीय समिति''। इस प्रक्रिया के प्रारम्भ में शोध प्रबंध और शोध प्रबंध रिपोर्ट निसंदेह महत्व पूर्ण होती है। यद्यपि शिक्षण और पेशेवर

>>

> *"जो संकेतक हम प्रयोग में लाते हैं, वे मोटे तौर पर अपर्याप्त हैं।"*

सेवा के साथ शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

CNRS और उसके समकक्ष संगठनों में अनुसंधानकर्त्ता के लिए अपनाये जाने वाली आकलन प्रणालियों का विश्वविद्यालय के शैक्षिक सदस्यों के लिए प्रयोग में लिए जाने वाली से अन्तर करना महत्वपूर्ण है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या एक व्यक्ति maitre de conferences है या प्रोफेसर और तभी आवेदन करता है जब उसे पदोन्नति चाहिए। दोनों ही मामलों में चयनित और नियुक्त प्रतिनिधियों की एक राष्ट्रीय समिति सामूहिक स्तर पर आकलन करती है : और चयन मापदण्ड, शोध पत्रिकाएँ इत्यादि के आसपास कई बहस उठती हैं।

विश्वविद्यालयों के मामले में, विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय परिषद ने कई गर्म पेशेवर संघर्ष देखे हैं। यद्यपि यह एक आम तौर पर स्वीकृत विचार प्रतीत हो सकता है, सभी समाजशास्त्री अनुभवजन्य कार्य या प्रकाशनों की गुणवत्ता के लिए स्पष्ट न्यूनतम मानदण्ड स्थापित करने की आवश्यकता को नहीं मानते हैं। इसके अलावा, अधिकांश बिब्लियोमेट्रिक्स (bibliometrics) पर आधारित मानकीकृत मानदण्डों को लागू करने के लए मना करते हैं। अतः मूल्यांकन मापदण्ड एक जटिल क्षेत्र का निर्माण करते हैं जिसमें खुले और बहुदिशायी परिप्रेक्ष्य को अपनाने की आवश्यकता है। अतः हमारे पेशे के प्रत्येक घटक : शिक्षण, शोध, शोध निष्कर्षों का प्रसार, पेशेवर सेवा एवं अन्य पेशेवर दायित्व पर स्थायी और गहन बहस करने की निरन्तर आवश्यकता होती है। निसंदेह, प्रत्येक के लिए, भिन्न मापदण्डों पर गंभीरता से सोचना होगा और कोई सरलीकृत मेट्रिक को लागू नहीं किया जाना चाहिए।

अंत में अनुसंधान केन्द्र या प्रयोगशालाएँ AERES द्वारा, मुख्यतः उनके प्रकाशन सम्बन्धी रिकार्ड के आधार पर, आकलित की जाती हैं। अन्य मापदण्ड है : आंतरिक कार्य प्रणाली; प्रशासन; सेमीनार आयोजित करने में बौद्धिक जीवंतता आदि। अन्य देशों के विपरीत, फ्रांस में न तो अनुसंधान केन्द्रों और न ही विभागों के लिए राष्ट्रीय रैंकिंग व्यवस्था है। मंत्रालय द्वारा समर्थित रैंकिंग छात्रों की पेशे में नियुक्ति जैसे मापदण्ड पर आधारित है। अतः यह मुख्यतः पेशेवर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की संख्या से सम्बन्धित है।

> अधिक बहुलवादी और व्यापक मूल्यांकन हेतु

यदि हम एक समृद्ध और नवाचारी विषय को बनाये रखने का उद्देश्य रखते हैं तो फ्रेंच समाजशास्त्र के भावी विकास के लिए शोध की गुणवत्ता के लिए बहुआयामी धारणा और प्रकाशनों का विदेशों में प्रसारण, आवश्यक है। इसके लिए हमें अंग्रेजी भाषा के पूर्ण प्राधान्य को अस्वीकार करना चाहिए जो कुछ राष्ट्रीय विशेषताओं को मिटा देगा। हमें शोधकर्त्ताओं एवं अनुसंधान केन्द्रों के मूल्यांकन हेतु bibliometrics के सरल एवं हावी मेट्रिक्स के रूप में उपयोग से भी मना करना चाहिए। मूल्यांकन के अधिक परिष्कृत और सूक्ष्म रूपों का विकास होना चाहिए ताकि समाजशास्त्रीय कार्यों की विलक्षणता और विशिष्ट विशेषताओं को जब्त किया जा सके। किसी भी प्रकार के क्षेत्रवाद, चाहे वह विद्यालयों का हो या बौद्धिक परम्पराओं का, को अस्वीकृत करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय भाषाओं में विद्वत प्रस्तुति के बौद्धिक जीवन के संरक्षण हेतु व्यापक प्रयास करने की आवश्यकता है। विभिन्न भाषाओं के मध्य आदान–प्रदान को बढ़ाना चाहिए, जिसके लिए अनुवाद की आवश्यकता है, परन्तु जो ज्ञान की अधिक समतावादी आधार पर प्रसार की अनुमति देता है।

इसके अलावा, दोनों वैयक्तिक और सामूहिक मूल्यांकनों में प्रकाशन के अलावा मापदण्डों पर भी ध्यान देना हमारे विषय के भविष्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमारे समाजशास्त्रीय पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता इसकी कुंजी है। तथापि सिर्फ छात्रों के पेशेवर स्थापन के आधार पर जो संकेतक हम प्रयोग में लाते हैं, वे मोटे तौर पर अपर्याप्त हैं। यद्यपि इन्हें भी लेना चाहिए, इनका मापन और व्याख्या और बेहतर हो सकती है। इसके अलावा, अनिश्चित अनुबंधों पर भर्ती किये गये युवा कर्मियों के लिए सामूहिक शैक्षणिक जीवन में योगदान ''लोकतांत्रिक प्रशासन'' की गुणवत्ता के साथ कार्य करने एवं अकादमिक कैरियर की परिस्थितियों, को भी विशेष रुप से ध्यान में रखना चाहिए। ■

सभी पत्राचार फ्रेडरिख लेबरान
<frederic.lebaron@uvsq.fr> को प्रेषित करें।

> फ्रांस में बदलता समाजशास्त्र का पेशा

फ्रेडरिख नेयरत, लिमोज विश्वविद्यालय, फ्रांस

1960 के दशक से फ्रेंच समाजशास्त्र अपनी व्यवसायिक संभावनाओं के लिए एक प्रकार से परीक्षण की वस्तु रहा है। उच्च शिक्षा के पहले पूंजीकरण के साथ समाजशास्त्र पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों की संख्या में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। लेकिन मानविकी की तुलना में नवीन विषय समझे जाने वाले समाजशास्त्र ने, एक ऐसे समय पर जब रोजगार अवसर (अतः पाठ्यक्रम की सामग्री भी) मुख्य तौर पर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक भर्ती के माध्यम से देखे जाते थे, अपनी शुरूआत में संदेह जगाया। वास्तव में 50 वर्ष पूर्व, समाजशास्त्र माध्यमिक विद्यालयों में नहीं पढ़ाया जाता था परन्तु विद्यालय पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञानों के प्रारम्भ होने और शिक्षक भर्ती हेतु प्रतिस्पर्धी प्रवेश परीक्षा के शुरू होने (1969 में CAPES और 1977 में अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञानों के पुँजन) के बाद भी विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के साथ संबंध सीमित ही रहे।

इसके अतिरिक्त, समाजशास्त्र के छात्रों के कैरियर पथ के बारे में संशय भी राजनीति से प्रेरित थे : मई 1968 में आंदोलन करने वाले छात्रों में से कुछ समाजशास्त्री थे। मई विद्रोह के ''सामूहिक उन्माद'' की आलोचना में जो लोग रेमण्ड एराँ (The Elusive Revolution : Anatomy of a Student Revolt, Praeger, 1969) का अनुगमन कर रहे थे, उन्होंने इसका मुख्य कारण ''भीड़भाड़ वाले विश्वविद्यालय'' और उसके कारण ''रोजगार की संभावनाओं का अभाव'' में देखा और इसने एक विमर्श को शुरू किया जो तबसे पत्रकारों और राजनेताओं द्वारा नियमित रूप उद्वनांकित किया जा रहा है। समाजशास्त्र मानविकी और सामाज विज्ञानों के विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए, रोजगार के विकल्प के अभाव का द्योतक बन गया–तब भी जब French Centre for Research on Qualifications (CEREQ) ने लाइसेन्स और समाजशास्त्र दोनों के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण होने वाले स्नात्कों के वास्तविक अनुभवों के मद्देनजर इस पर पुनः विचार करने का सुझाव दिया।

तथापि, समाजशास्त्रियों का डाक्टरेट के स्तर पर पेशेवर स्थान नियोजन ; या फिर, एक पेशेवर के रूप में समाजशास्त्री का स्थापन, जो समग्र में विषय कैसे स्थित है पर अंतदृष्टि प्रदान करता है, सबसे रोचक है। एकदम देखने से enseignant-chercheurs या शिक्षक–शोधकर्ता की नौकरी और साथ ही बड़े सार्वजनिक संस्थाओं में अनुसंधान पदों के बारे में ही ख्याल आता है। बिना किसी संशय के, समाजशास्त्र एक विषय के रूप में उच्च शिक्षा के दूसरे बड़े विस्तार से लाभान्वित हुआ है। 1984 और 2010 के मध्य समाजशास्त्र में शिक्षक–अन्वेषक पदों की संख्या अन्य विषयों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी : अन्य विषयों में 213% की तुलना में समाजशास्त्र में यह वृद्धि 302% हुई। हालांकि अन्य शैक्षणिक क्षेत्रों के साथ समाजशास्त्र के लिए भी हाल ही के वृद्धि पैटर्न कम आशाजनक रहे हैं। सामान्य रूप में, फ्रांस में अनुसंधान गिरावट पर है। विश्वविद्यालय भर्ती कम हो गई है : 5 वर्ष से भी कम समय में शिक्षक–शोधकर्ताओं की भर्ती की कुल संख्या 2000 से 1500 तक गिर, 25% घटी है। इसी तरह, CNRS ने भी इसी समय में अपनी शोध भर्ती में 400 से 300 कर कमी की है।

इसी दौरान, दोनों शोध और उच्च शिक्षा के शिक्षक पदों में, अनिश्चित कार्य की परिस्थितियाँ तीव्र हो गई हैं। फ्रांस में सार्वजनिक अनुसंधान का एक बड़ा प्रतिशत प्रस्तावों के निमन्त्रण, अर्थात् French National Research Agency (ANR) द्वारा, वित्त पोषित होता है। ''पोस्ट डॉक'' पद सृजित किये जाते हैं, परन्तु वे प्रकृति से अनिश्चित होते हैं। इसके अलावा, विश्वविद्यालय सांविधिक स्थायी शिक्षक–शोधकर्त्ताओं (पदावधि वाले सार्वजनिक पदों के साथ) की भर्ती में देर करने की मांग कर रही है। 2007 में जब LRU कानून पारित हुआ, विश्वविद्यालयों को शिक्षण, शोध या शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य के लिए निजी स्थायी अनुबंध के तहत भर्ती करने की अनुमति दी गई। 2012 के बाद से, काफी सारे विश्वविद्यालयों ने इस रणनीति को अपनाया है। जैसे जैसे राज्य वित्त पोषण से आंशिक रूप से पीछे हटा, फ्रांस के सरकारी विश्वविद्यालयों को अधिक स्वायत्तता प्रदान हुई–जैसा थॉमस पिकेट्टी ने अपने हाल ही के लेख में दर्शाया। (देखिये "Faillite silencieuse a' l' universite", Liberation, नवम्बर 18, 2013) इसके फलस्वरूप, करीबन एक चौथाई विश्वविद्यालय जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त केन्द्र भी सम्मिलित है, कंगाली के कगार पर हैं और गैर सांविधिक पद जो

> >

> *"करीबन एक चौथाई विश्वविद्यालय कंगाली के कगार पर हैं।"*

सस्ते हैं और जिन्हें दीर्घ अवधि के अनुबंध पर नहीं लेना पड़ता है, पर अधिकाधिक निर्भर हो रहे हैं।

सौभाग्य से, समाजशास्त्रियों का भविष्य अकादमिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। व्यवहारिक शोध और मूल्यांकनों की बढ़ती मांग से प्रेरित हो, पिछले कुछ वर्षों में कई अनुसंधान कम्पनियाँ और सलाहकार फर्मों, जिन्हें समाजशास्त्रीय कौशल की आवश्यकता है, खुली हैं। नगरवाद और योजना, दोनों में ही, प्रारंभिक अध्ययन जो आम तौर पर अन्तः वैषयिक टीम के द्वारा किये जाते हैं, अनिवार्य हैं। किसी भी प्रोजेक्ट के महत्व और उद्देश्यों के अनुसार समाजशास्त्रियों को टीम के सदस्य के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है। यह विशिष्ट तौर पर ''शहरी पुनरूद्धार प्रोजेक्ट'' के लिए है, विशेष तौर पर तब जब ''संवेदनशील शहरी क्षेत्र'' (ZUS) इसमें जुड़े हों, सही है। प्रोजेक्ट प्रबंधकों को भिन्न सामाजिक समूहों के नगरीय मेल के संदर्भ में योजना प्रोजेक्ट के प्रभाव के आकलन की आवश्यकता होती है।

अनुसंधान कम्पनियाँ और स्वतंत्र सलाहकारों के लिए एक और बाजार सार्वजनिक नीतियों का मूल्यांकन है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य देखभाल के सम्बन्ध में समाजशास्त्रियों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए सेवा कार्य की नीतियों का मूल्यांकन करने का कहा जाता है। इसी तरह शैक्षणिक नीतियाँ, सांस्कृतिक नीतियाँ या सामाजिक नीतियाँ बारम्बार अलग–अलग सरकारी अफसरों द्वारा नियमित मूल्यांकन की मांग की वस्तु होती है। अंत में, कारोबारी भी बहुधा निम्न विषयों पर शोध का अनुरोध करते हैं : मनो–सामाजिक जोखिम का मूल्यांकन (तनाव, उत्पीड़न, आत्महत्या आदि), कार्य का संयोजन (पुनर्गठन, आकार घटाने के उपाय, स्थानांतरण आदि), लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और कम्पनियों के भीतरी भेदभाव को संबोधित करना।

इन विषयों पर अनुसंधान और परामर्श देने हेतु बाजार में सिर्फ समाजशास्त्री पेशेवर नहीं है। अध्ययन बहुधा अन्तः वैषयिक होते हैं। इसके अलावा, समाजशास्त्री होने का दावा करने वाले अन्य पेशेवरों के साथ समाजशास्त्री प्रतिस्पर्धा में हैं – फ्रांस में यह उपाधि संरक्षित नहीं है। फिर भी बढ़ती हुई विशेषज्ञता कुछ पेशेवर संरक्षण ला रही हैं जैसे समाजशास्त्रीय शिल्प और किसी विशिष्ट कार्यक्षेत्र में शिक्षण पर केन्द्रित पेशेवर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के सृजन के द्वारा। परिमाणात्मक और गुणात्मक दक्षता दौनों में पारंगत होना शायद उच्च मूल्य प्राप्त और अधिक पूछ वाला होता हैं और यह व्यक्ति के अधिक विशेषता वाले क्षेत्रों में विशेषज्ञा को सशक्त रूप में पूर्ण करता है (नगरीय, स्वास्थ्य या सामाजिक नीतियाँ इत्यादि)।

अनुसंधान फर्मों में कार्यरत कुछ समाजशास्त्रियों के पास डाक्टरेट की डिग्री है और इन्होंने शैक्षणिक जगत को शैक्षणिक रोजगार बाजार की स्थितियों को देखते हुए अस्थाई या निश्चित तौर छोड़ने का निर्णय लिया है। तथापि दोनों के मध्य मजबूत संबंध है। कुछ प्रोफेसर और शोधकर्ता फर्मों की वैज्ञानिक समितियों में भाग लेकर इनका समर्थन करते हैं। उसी प्रकार, अनुसंधान फर्मों पर कार्यरत समाजशास्त्री भी विश्वविद्यालयों में शिक्षण पदों को ले सकते हैं।

अंत में, समाजशास्त्री सिर्फ वे नहीं है जो शैक्षणिक जगत के अन्दर या बाहर समाजशास्त्रीय शोध को संचालित करते हैं : हमें उन सभी पेशेवरों को जो अपने कैरियर के किसी भी मोड़ पर समाजशास्त्र में प्रशिक्षित हुए हो, चूंकि वे अपने पेशों में समाजशास्त्रीय दृष्टि को लाते हैं का ध्यान रखना चाहिये। दुर्भाग्य से हमारे पास राष्ट्रीय स्तर पर इस बारे में विचार करने हेतु आंकड़े नहीं हैं। ■

सभी पत्राचार फ्रेररिख नेयरत <frederic.neyrat@gmail.com> को प्रेषित करें।

> फ्रेंच समाजशास्त्रियों के लिए 'मानव विषय प्रोटोकोल' क्यों नहीं है?

रोमेन पुडल, CNRS (CURAPP-ESS), अमीन्स, फ्रांस

अन्य देशों के समाजशास्त्रीय संघों से भिन्न, फ्रेंच समाजशास्त्रीय संघ (AFS) ने 2011 की अपनी बैठक में समाजशास्त्र के पेशे के लिए आचार संहिता को नहीं अपनाने का निर्णय लिया। एक ऐसा निर्णय जो कई वर्षों की बहस के बाद आया, जिसमें AFS ने कार्य समूहों की स्थापना की और अन्य देशों विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका, में मौजूद संहिता का परीक्षण कर अपना पहला ड्राफ्ट तैयार किया जिसने काफी बहस को भड़काया।

यह प्रश्न कि क्या फ्रेंच समाजशास्त्र को ''आचार–विषयक संहिता'' या ''मानव–विषय प्रोटोकोल'' को अपनाना चाहिए, शुरूआत में निजी फर्मों, सार्वजनिक एजेन्सियों और शैक्षणिक जगत के बाहर अन्य संगठनों, जहां अधिकांश पेशों में आचार संहिता विद्यमान है, में कार्यरत समाजशास्त्रियों के एक समूह ने उठाया। समाजशास्त्रियों के लिए आचार विषयक संहिता के प्रारूप, अपने मानवीय विषयों की रक्षा और उन्हें सूचना देने की कोशिश में अन्य समाजशास्त्रीय संघो, सलाहकारों, स्वास्थ्य पेशेवर या प्रायोगिक वैज्ञानिक द्वारा तैयार आचार संहिता पर आधारित थे।

इस विषय पर बहस शुरू से – 2009 सहित गर्मायी हुई थी, जब माइकल बुरावे ने पेरिस में तीसरी AFS काँग्रेस के दौरान अपने प्रोजेक्ट The colour of Class on the Copper Mines : From African advancement to Zambianization (Manchester University Press, 1972) पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जाम्बिया में रंग भेद पर उनका शोध असंभव होता यदि वे सामाजिक कर्ताओं के साथ अपने उद्देश्यों के बारे में पूर्ण रूप से ''पारदर्शी'' होते। इस व्याख्यान ने समाजशास्त्रीय पेशे को नियमित करने वाली आचार संहिता के अपनाये जाने का विरोध करने वालों की स्थिति को सुदृढ़ किया।

दो वर्ष पश्चात्, ग्रेनोबल में चौथी AFS कांग्रेस के दौरान आचार संहिता का एक अंतिम प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया और उस पर बहस हुई (http://www.afs-socio.fr/sites/default/files/congres09/FormCharte.html). प्रस्ताव के दो भाग थे। पहला भाग, पेशे के लिए ''सर्वश्रेष्ठ प्रणालियाँ'', जिसमें डाक्टोरल छात्र एवं उनके सलाहकारों के अधिकार और दायित्व; साहित्य चोरी की निंदा; शोषण के प्रति सचेत रहना; बढ़ती हुई अनिश्चितता, उत्पीड़न और उच्च शिक्षा में शिक्षण और शोध दोनों में उभरने कार्यस्थल पर कष्ट के स्वरूप पर केन्द्रित था, को व्यापक समर्थन मिला। तथापि, मतभेदों को निपटाने में संहिता के न्यून प्रभाव के प्रति भी कई आलोचनाएँ थीं। क्या समाजशास्त्र के लिए किसी तरह के अनुशासनात्मक बोर्ड बनाने की आवश्यकता होगी? कौन इसका हिस्सा होगा और उसकी वैधता कैसे सुनिश्चित होगी? वो कैसा होगा? कार्यवाही करने व दण्ड देने के कौन से साधन उसके पास होंगे? क्या प्रदत्त दुर्व्यवहार के कसूरवार किसी सहकर्मी को AFS पदच्युत कर पायेगी? इन प्रश्नों ने दोनों समाजशास्त्र के पेशे को नियमित करने वाले नियमों और उसके साथ इन संभावी कार्यवाहियों पर सहमत होने की कठिनाइयों को उजागर किया। इसके अतिरिक्त, आचार संहिता यदि अपनायी भी जाती है, उसके पास कानूनी तौर पर अमल करवाने के कोई साधन नहीं होंगे।

प्रस्ताव का दूसरा भाग – सामाजिक विज्ञानों में 'सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रणालियों' के समुच्चय के बारे में – की बड़ी भारी आलोचना हुई। विशिष्ट तौर पर निम्न अनुच्छेद ने कई संशयों और मतभेदों को शुरू किया।

> ''शोध में भाग लेने वाले व्यक्तियों को उनके अनुसंधान के बारे में स्पष्ट रूप से बताने का उत्तरदायित्व समाजशास्त्रियों का है। इस बात को समझने के लिए कि उन्हें किसी प्रोजेक्ट में भाग लेने को क्यों कहा जा रहा है, व्यक्तियों को निम्न के बारे में सूचित करना चाहिए : अनुसंधान का विषय; उद्देश्य; शोध प्रोजेक्ट के लिए जिम्मेदार कौन है; कौन शोध कर रहा है; कौन इसमें पैसा लगा रहा है, परिणाम किस प्रकार से इस्तेमाल और साझा किये जायेंगे। समाजशास्त्री शोध प्रतिभागियों की सहमति के बिना तथ्य रिकॉर्ड करने वाले श्रव्य यंत्रों (audio recorders, cameras etc.) का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। जब उन्हें किसी परिस्थिति को रिकार्ड करने या फिल्माने की आवश्यकता होती है, तो उन्हें शोध प्रतिभागियों को यह अवश्य बताना चाहिए कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं।''

जिन लोगों ने उपर वर्णित नियमों का समर्थन किया, उन्हें चिकित्सा, जीव विज्ञान या मनोविज्ञान जैसे विषयों से प्रेरणा मिली। उन्होंने समाजशास्त्रीय शोध और मानव विषयों के संरक्षण, विशेष रूप से समाजशास्त्रियों द्वारा उनकी एकत्रित की गई सूचना और अन्य आंकड़ों के सही इस्तेमाल को सुनिश्चित करने के मामले में अधिक

>>

> *"समाजशास्त्रीय शोध की स्वतन्त्रता की फिर से पुष्टि की गई।"*

पारदर्शिता का आह्वान किया। ये नियम चाहे कितने भी प्रशंसनीय प्रतीत हो, इन्होंने बहस और विवादों को भड़काया। ये विवाद और बहस सिल्वेन लारेन्स और फ्रेडरिख नेयरत द्वारा सम्पादित पुस्तक Enqueter : de quel droit? Menaces sur l' enquete in sciences sociales (Editions du Croquant, 2010) में संक्षेपित किये गये हैं।

आचार संहिता को अपनाये जाने का विरोध करने वालों ने 'अप्रकट शोध' : शोध जहां प्रतिभागी शोध प्रोजेक्ट के उद्देश्य या फिर शोधकर्त्ता की समाजशास्त्री की प्रस्थिति से पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से अनजान होते हैं, की रक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया। सबसे मशहूर उदाहरण सामाजिक विज्ञानों के शास्त्रीय कृतियों में है। डानल्ड रोय का फैक्टरी कार्य पर शोध; पॉल विलिस का Learning to Labor: How Working Class Kids Get Working Class Jobs (Columbia University Press,1977); या लॉड हम्फरी का 'tea-rooming' पर विवादास्पद लेख के साथ माईकल बुरावे की उपर उद्धृत कृति एक ऐसा उदाहरण है। कई लोगों ने यह तर्क दिया कि इस तरह के शोध को इस आचार संहिता के द्वारा आने वाली सीमितता के बिना चलना चाहिए, विशेष रूप से तब जब इस संहिता को लागू करने वाले Institutional Review Board के सदस्य समाजशास्त्री न हों। इसके विपरीत, समाजशास्त्रियों की स्वतन्त्रता को समाजशास्त्रीय कृतियों के पद्धतिशास्त्रीय, सैद्धान्तिक और नैतिक पक्षों का विशिष्ट सहकर्मी मूल्यांकन द्वारा संरक्षित की जानी चाहिए। ये सारे बिन्दु समाजशास्त्रीय शोध के लिए अत्यावश्यक तत्व के रूप में उठाये गये थे।

कुल मिलाकर, इन प्रश्नों के उठने से ही उत्तर स्पष्ट होते चले गये। यदि आचार संहिता द्वारा लगाई जाने वाली शोध सीमाओं की पालना करनी पड़े तो क्या हम संस्थागत भेदभाव, राजनीति, अर्थशास्त्र या पत्रकारिता में भ्रष्टाचार, मंत्रियों के निजी दफ्तरों में, प्रबंधकों को या फिर मायावी अभिजनों की निर्जन सामाजिक दुनिया में सत्ता के खेल पर शोध कर पायेंगे? जवाब स्पष्ट है : नहीं।

बहस के बावजूद, उपर वर्णित अनुच्छेद आचार संहिता के प्रस्ताव में रखा गया, जिसने अप्रकट शोध की रक्षा करने वाले फ्रेंच समाजशास्त्रियों में द्वेष को और बढ़ा दिया। नैतिक, आचार विषयक संहिता और ज्ञान मीमांसीय प्रश्नों को उठाने के लिए सभी सहमत थे। फिर भी यह विचार, कि AFS एक ऐसे आचार विषयक संहिता को अपना सकता है जो शोध में बाधा डाल सकती है, को अस्वीकार्य राजनैतिक–प्रशासनिक आज्ञा पत्र के सामने हथियार डालने के साथ साथ समाजशास्त्रीय कार्य के लिए एक गतिरोध को प्रोत्साहित करने के रूप में देखा गया।

अतः संहिता को अस्वीकार किया गया। समाजशास्त्रीय शोध की स्वतन्त्रता की फिर से पुष्टि की गई। फ्रेंच समाजशास्त्रियों ने एक दूसरे को याद दिलाया कि उनके काम का एक भाग सामाजिक दुनिया में सक्रिय विविध असमानताओं और भेदभाव के स्वरूपों को अपने शोध, जिसे प्रकाशन के पहले सहकर्मी समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया जायेगा, के माध्यम से बेनकाब करना है। ■

सभी पत्राचार रोमेन पुडल <romain.pudal@free.fr> को प्रेषित करें।

> समाजशास्त्र कहाँ है?

वैश्विक पर्यावरणमूलक परिवर्तन एवं समाजविज्ञान

स्टुवर्ट लॉकी, जेम्स कुक विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया एवं आई. एस. ए. की 'पर्यावरण एवं समाज' पर शोध समिति (आर.सी. 24) के भूतपूर्व अध्यक्ष

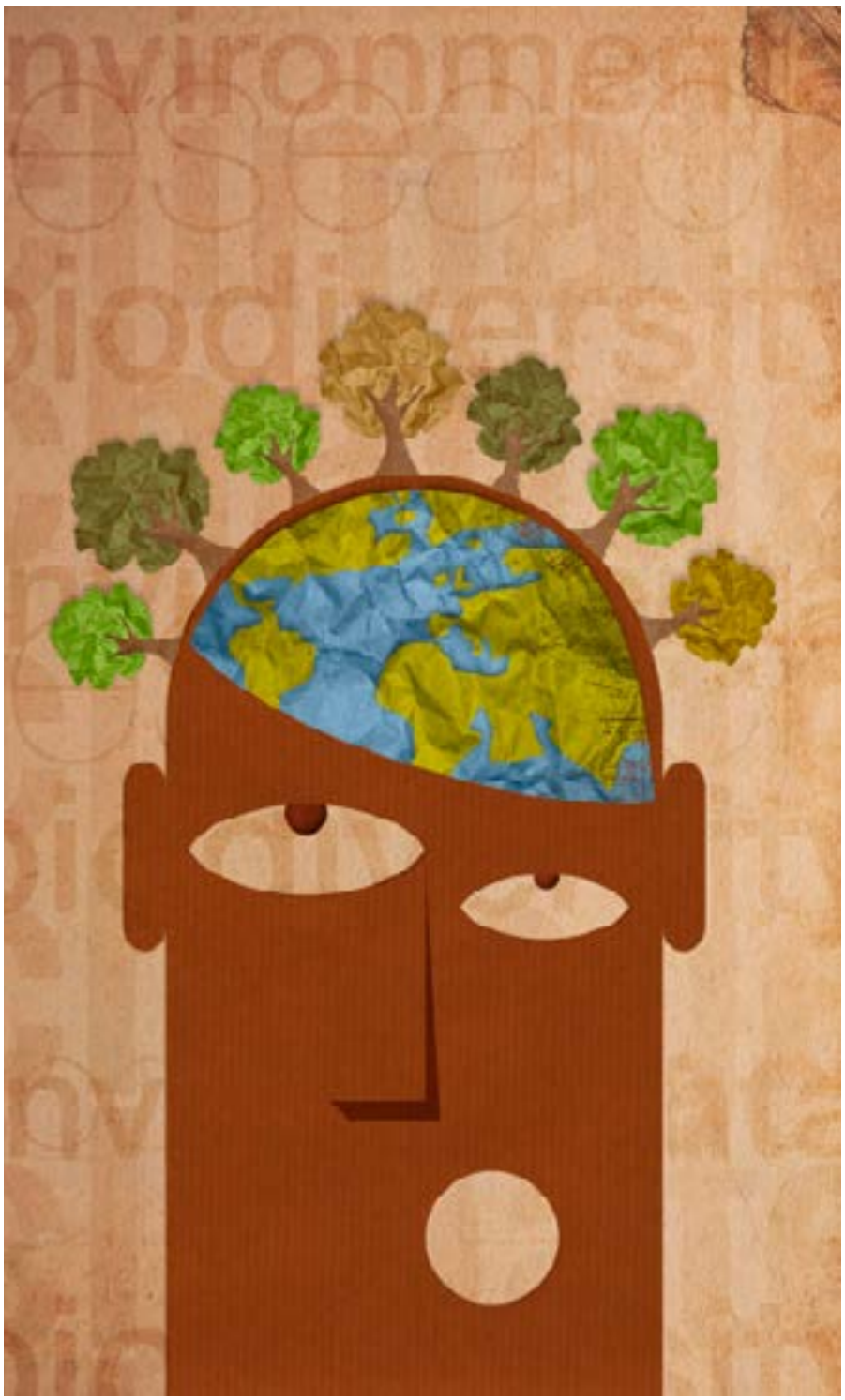

वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के समक्ष समाजशास्त्र की अचेतन संभावनाए। दृष्टांत आरबू द्वारा।

समाजशास्त्री सामान्यतः यह शिकायत करते हैं कि पर्यावरण अनुसंधान एवं प्रशासन संचालन से सम्बन्धित उनके योगदानों को उपेक्षित किया जाता है। यह भी कहा गया है कि मुख्य मूल्यांकन प्रक्रियाओं एवं नीति निर्माण प्रक्रियाओं में सहभागिता पर प्राकृतिक विज्ञानों का प्रभाव अधिक है। जब कभी समाजशास्त्री सहभागिता करते हैं या उनसे कुछ सलाह ली जाती है तो 'सामाजिक प्रभाव' एवं 'अनुकूलन में अवरोध' से सम्बन्धित संकुचित प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास किया जाता है। यह और भी अधिक पीड़ादायक है कि हम जीवन वैज्ञानिकों, इंजीनियर्स जैसे गैर–समाज वैज्ञानिकों के विश्लेषण को, जो कि पर्यावरण परिवर्तन के सामाजिक पक्षों की अवधारणाओं से जुड़े हैं, कहीं न कहीं पारिस्थितकीय–शास्त्र एवं साइबरनेटिक्स की व्यवस्थाओं से जोड़ देते हैं।

समाजशास्त्रियों की विशेषज्ञता एवं उनकी अन्तर्दृष्टि की जो प्रत्यक्ष उपेक्षा है उसका विश्लेषण कैसे किया जा सकता है? विषय से संबन्धित पूर्वाग्रह एक सीमा तक इसका विश्लेषण कर सकते हैं परंतु सबसे महत्वपूर्ण पक्ष जो समाजशास्त्रियों की तरफ से परेशान करने वाला होता है, का सम्बंध उनके द्वारा शक्ति, असमानता एवं लोकतंत्र के विषय में पूछे जाने वाले सवालों से है। मेरा विचार है कि यह विश्लेषण अधिक होना चाहिए परंतु इस विश्लेषण का कितना दायरा वास्तव में हमारे साथ जुड़ता है? हम इसके बारे में कितना ज्ञान सृजित करते हैं? और इन सवालों के साथ कितनी जनता को जोड़ने का प्रयास करते हैं?

>>

अंतर्राष्ट्रीय समाजिक विज्ञान परिषद (ISSC) की दृष्टि में हम इन संदर्भों में काफी प्रयास करते हैं । प्रत्येक तीसरे वर्ष आई. एस. एस. सी. आलोचनात्मक चुनौतियों एवं समाज विज्ञानों की प्रवृत्तियों के विषय में एक सुव्यवस्थित प्रतिवेदन का प्रकाशन करती है। वर्ल्ड सोशल साइंस रिपोर्ट 2013 में परिवर्तनशील वैश्विक पर्यावरण के अंतर्गत विभिन्न समाजविज्ञानों के वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन के साथ जुड़ाव की रूपरेखा प्रस्तुत की गई और समाजविज्ञान योगदानों के आधार पर उस प्रारूप को प्रस्तुत किया गया है जो पर्यावरण परिवर्तन से सम्बन्धित चुनौतियों का उल्लेख करते हैं।1

परिवर्तित वैश्विक पर्यावरण (चैंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंट) में विषय से सम्बन्धित संगठनों जैसे आई. एस. ए. के योगदान एवं अंतरवैषयिक सामाजिक अनुसंधान प्रयासों जैसे 'इंटरनेशनल हयूमन डायमेशनस् ऑफ एनवायरनमेंट चेंज प्रोग्राम' (पर्यावरण परिवर्तन कार्यक्रमों के अंतरराष्ट्रीय मानवीय पक्ष) के उल्लेख किए गये। सतही तौर पर देखा जाये तो इस प्रतिवेदन में विभिन्न क्रियाकलापों की संख्या एवं उनके विस्तार की प्रभावी ढंग से चर्चा की गई है। परंतु जहां वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन, जो कि अनेक राजनीतिक एवं आर्थिक संकटों का परिणाम है, नें मुख्यधारायी समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ध्यान आकर्षित करनें में असफल रहा है।

चैंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंट प्रतिवेदन में जो पुस्तकीय विश्लेषण किये गये हैं, का यह निष्कर्ष है कि समाजशास्त्री अधिकांशतः पर्यावरण परिवर्तन संबंधी अनुसंधान के विषय में अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को उपेक्षित कर देते हैं। थाम्पसन रयूटर्स 'वेब ऑफ साइंस' में जो डेटा बेस प्रस्तुत किया गया हैं, उससे पता चलता है कि विभिन्न आलेखों में जलवायु परिवर्तन, जलवायु नीति, पर्यावरण परिवर्तन, सतत् विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट), जैव विविधता इत्यादि अवधारणाओं को व्यापक रूप में प्रयुक्त किया गया है। लेखों की एक बहुत बड़ी संख्या वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन के संदर्भ को तो प्रस्तुत करती है परंतु सम्पूर्ण समाजशास्त्रीय अनुसंधान के योगदान में इसका प्रतिशत बहुत ही कम है।

परंतु मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक केन्द्रित विश्लेषण व्यवस्थित रूप से समाजशास्त्रियों, जो कि अनुसंधानकर्त्ता, शिक्षक एवं मुख्यतः नागरिक भी है, के उन विचारों को अधिक महत्व नहीं देता जो पर्यावरण एवं सतत् विकास की प्रणालियों पर बल देते हैं। आई.एस.ए. की अनुसंधान समिति, जो इस विषय से जुड़ी हुई है, की यदि संक्षेप में चर्चा की जाये तो यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न परियोजनाओं, बहस, नीति प्रक्रियाओं, सामाजिक आंदोलन संगठनों एवं सामुदायिक समूहों के परिप्रेक्ष्य में योगदान किये हैं। विभिन्न अंतरवैषयिक शोध पत्रिकाओं जैसे ग्लोबल एनवायरनमेंटल चेंज एवं लोकल एनवायरनमेंट में न केवल इनके नियमित योगदान है अपितु इनकी नेतृत्वकारी भूमिका भी है। वैश्विक दक्षिण में विशेषतः जो अंतरवैषयिक सहभागितामूलक एवं क्रियात्मक अनुसंधान हुए हैं, को अध्ययन के रूप में प्रकाशित किया गया है। यह अध्ययन इम्पेक्ट फेक्टर (प्रभाव कारक) एवं पीयर रिव्यू से संचालित होने वाली शोध पत्रिकाओं तक नहीं पहुंचते है। कथित वेब साइंस में इनकी प्रस्तुतियां देखी जा सकती हैं परंतु चूंकि इसका व्यापकीकरण नहीं है अतः आई. एस. ए. की 'एनवायरनमेंट एवं सोसायटी' से सम्बन्धित अनुसंधान समिति को आशा है कि 2015 के प्रारम्भ में प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिका 'एनवायरनमेंटल सोशियोलॉजी' में इन सब समस्याओं का प्रभावी निराकरण हो सकेगा।

तथापित 'चेंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंट्स' शोध पत्रिका समाजविज्ञानों के प्रभाव को विस्तार देने के लिए उपयोगी तर्क प्रस्तुत करती है।[2] ऐसे 'रूपांतरणमूलक अवयवों' अर्थात् समाजवैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर दिये जाने आवश्यक है ताकि संपोषणता की तरफ, समतामूलक संक्रमण एवं सम्बन्धित आचार संहिताओं की तरफ अग्रसर हुआ जा सके। इस संदर्भ में निम्नलिखित पक्षों की चर्चा की जा सकती है–

1. ऐतिहासिक एवं संदर्भमूलक जटिलता – वैश्विक पर्यावरणमूलक परिवर्तन की प्रक्रियाएं किस प्रकार विशिष्ट राजनीतिक अर्थवाद से परिवर्तन ग्रहण करती है? ये किस प्रकार प्रवसन एवं संघर्ष जैसी अन्य प्रक्रियाओं से अन्तः सम्बद्ध होती है? पर्यावरण मूलक परिवर्तन से सम्बन्धित अनुभव किस प्रकार स्थान, समय, वर्ग, लिंग, नृवंशीयता एवं आस्था इत्यादि के आधार पर भिन्न स्वरूप ग्रहण करते हैं?

2. परिणाम – वैश्विक और पर्यावरणमूलक परिवर्तन किस प्रकार लोगों और समुदायों को प्रभावित करते हैं? ये प्रभाव किस प्रकार वितरित होते है? लोग किस प्रकार पर्यावरण परिवर्तन के साथ समायोजन करते हैं, समझौता करते हैं और इसके प्रति प्रतिक्रिया करने में नवाचार का प्रयोग करते हैं?

3. परिवर्तन की दशाएं एवं विजन – व्यक्तिगत और सामूहिक परिवर्तन को कौन से कारक प्रेरित करते हैं? सामाजिक परिवर्तन, नीतिगत हस्तक्षेप और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के बीच क्या संबंध है? वांछनीय सामाजिक परिवर्तन के बारे में सर्वसम्मति बनाने में समाजविज्ञान क्या योगदान कर सकते हैं?

4. व्याख्या और विषयपरक अर्थ निर्माण– पर्यावरणमूलक परिवर्तन का लोग क्या अर्थ लगाते हैं? और सामाजिक शिक्षा का विस्तार करने की क्या संभावनाएं मौजूद हैं? लोगों की पसंद और व्यवहारों में अन्तर्निहित मान्यताएं व अंधविश्वास क्या है? इसके विपरीत कौन–से कारक रूपांतरणकारी परिवर्तन के प्रति उदासीनता, संदेह और विरोध उत्पन्न करते हैं?

5. दायित्व – पर्यावरणमूलक परिवर्तन से निपटने के लिए की जाने वाली कार्यवाही की लागत को किसे सहन करना चाहिए? किस प्रकार प्रभावित जनसंख्या को पर्यावरण मूलक परिवर्तन की प्रतिक्रियाओं में योगदान करने और उससे लाभ प्राप्त करने में सहायता प्रदान की जा सकती है।

6. प्रशासन संचालन और निर्णय प्रक्रिया– अनिश्चितता के दौर में निर्णय किस प्रकार लिये गये? पर्यावरणमूलक प्रक्रियाओं और समस्याओं की विभिन्न रणनीतियों में राजनीतिक समझौते किस प्रकार सहायता कर सकते हैं? नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और अन्य लोगों के बीच बातचीत को कैसी संस्थागत व्यवस्थाएं निर्धारित करती हैं।

यहां नीति उपयोगी समाजविज्ञान के लिए एक मामूली व्यावहारिक एजेण्डा विकसित करना लक्ष्य नहीं है, बल्कि समाज विज्ञानों को 'बिंदास, बेहतर, व्यापक और भिन्न' बनाना होगा। समाजविज्ञान की परिकल्पना इस रूप में की जाती है कि वह पर्यावरण मूलक परिवर्तन को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में पुनः प्रस्तुत करने, नीतिगत मुद्दों को प्रभावित करने तथा वास्तविक–विश्व की समस्याओं के समाधान में सहभागिता करने, वैश्विक पर्यावरणमूलक परिवर्तन की चुनौतियों में समाज वैज्ञानिकों का संलग्न होना तथा समाज विज्ञान के उपयोग में प्रतिक्रिया को सुनिश्चित करने में सक्षम हैं।[3]

ये एक ऐसी दृष्टि नहीं है जिसमें सैद्धान्तिक प्रत्यावर्तन और नवाचार की कमी हो। यह एक ऐसी दृष्टि है जिसमें अवधारणात्मक पक्ष उन सवालों के उत्तर देते हैं जो रूपांतरण एवं अंतक्रिया के आधार पर अन्य विषयों एवं सम्बद्ध समूहों के सामने

>>

प्रस्तुत किये जाते हैं। अनेक समाजशास्त्री एवं विभिन्न समाज विज्ञानों से जुड़े सहयोगी यही कर रहे हैं। 'चेंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंटस' एवं अन्य उदाहरण इसकी अभिव्यक्ति है।[4] कैरान ब्रियन उदाहरण के लिए वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन एवं विकास के संदर्भ में गहन परिप्रेक्ष्य का समर्थन करते हैं। जिसके अन्दर भूव्यवस्था विज्ञान तथा मानव अभिकरण, जो प्रत्यावर्तनीय एवं गैर–रेखीय हैं, के मध्य की समझ विकसित होती जाती है।[5] जॉन उरी प्रत्यावर्तनीय उपभोक्ता व्यवहार की संभावनाओं को दर्शाते हैं जिनका सम्बंध नवाचार को आगे बढ़ाना एवं ऊर्जा तथा विभिन्न धातुओं के गहन प्रयोग को कम करना है।[6] सामाजिक पैमाने के दूसरी तरफ अल्वर्टो मैट्रीनिली एक ऐसा प्रस्ताव देते हैं जो वैश्विक शासन के उस प्रारूप से जुड़ा है जिसमें लोकतांत्रिक राज्य, बहुराष्ट्रीय संगठन, उत्तरदायी निगम, गैर–सरकारी संगठन, सामूहिक आंदोलन में सक्रिय लोग तथा वैज्ञानिक एवं शोध से जुड़े समुदाय सम्मिलित है ताकि लोकतांत्रिक, सैद्धांतिक एवं आनुभविक सुविचारित निर्णय प्रक्रियाओं को सुनिश्चित किया जा सके।[7] अनेक लेखक सामूहिक शिक्षण के इस गतिशील पक्ष को पर्यावरणीय एवं सामाजिक न्याय के संदर्भ में देखते हैं।[8]

यह सभी उदाहरण उस प्रक्रिया के विपरीत हैं जिसे मैं 'स्व संदर्भित समाजशास्त्र' (सेल्फ रेफरेंशियल सोशियोलॉजी) की संज्ञा देता हूं अर्थात् ऐसा सैद्धांतिक कार्य जिसमें कोई अर्थपूर्ण संदर्भ निकल कर न आये केवल सामाजिक सिद्धांतों से सम्बंधित समान प्रकार का लेखन पुनः उभर कर आ जाये। पुनरावृत्तिमूलक भाषा एवं जटिल अमूर्तता इसका हिस्सा होती हैं और अगर बहुत नजदीक से देखा जाये तो इसमें सरलीकरण है और साथ–साथ वे आनुभाविक अनुमान हैं जो किसी भी दृष्टि से स्थापित नहीं होते। 'स्व संदर्भित समाजशास्त्र' के परे जो समाजशास्त्र है उसमें हमेशा सामूहिकता है, व्यक्तिवादिता की उसमें सदैव उपेक्षा की जाती है। ऐसे समाजशास्त्र में विभिन्न अध्ययनों को समूह के साथ में जोड़ा जाता है ताकि ज्ञान का एक सामूहिक पक्ष उभर सके और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में योगदान कर सके। यह केवल आचारशास्त्र का सवाल नहीं है इसमें वैधता का पक्ष महत्वपूर्ण है। बहुवैषयिकता, एकीकरण, एवं पारस्परिक सहयोग ऐसी आवश्यकताएं हैं जो किसी भी समाजशास्त्रीय अनुसंधान को सामाजिक एवं पर्यावरण परिवर्तन की गत्यात्मक प्रक्रियाओं का हिस्सा बन जाती है।

इस प्रकार के अनुसंधान कार्यक्रम ऐसे महत्वपूर्ण दिशा निर्देशक है जो सामाजिक एवं पर्यावरण परिवत्रन में अर्थ पूर्ण सहभागिता के सवाल को उत्पन्न करते हैं। हालांकि इसके कुछ भाग पेशेवर एवं व्यक्तिगत जोखिम की स्थितियों को भी उत्पन्न करते हैं जबकि कुछ रास्ते दुर्गम है। 'चैंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंट' ऐसी कुछ दिशाओं को इंगित करता है जिसमें समाज वैज्ञानिकों की भागीदारी व्यापक स्तर तक है, विशेष रूप से 'फ्यूचर अर्थ' (भावी धरती)–एक 10 वर्षीय अनुमानित अध्ययन कार्यक्रम है, जिसे आई. एस. एस. सी., द इंटरनेशनल काउंसिल फॉर साइंस (ICSU), यूनेस्को, बैलमॉट समूह एवं अन्य के द्वारा विकसित किया गया है।[9] मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति को प्रोत्साहित करता हूं जो वैश्विक पर्यावरण अनुसंधान में रूचि रखता है, 'फ्यूचर अर्थ' समाचार पत्र का पाठक है, और उसमें दिए गए प्रस्तावों पर प्रतिक्रिया करता है और संबंधित सहयोगी गतिविधियों में सहभागिता करता है। चैंजिंग ग्लोबल एनवायरनमेंट का तर्क है कि सामूहिक अध्ययन कार्यक्रमों को जैसे 'फ्यूचर अर्थ' को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि इसमें समाजवैज्ञानिक असमानता, लोकतंत्र, शक्ति जैसे प्रश्नों को रचनात्मक एवं व्यवस्थित तरीके से उत्पन्न करते हैं। मैं इस तर्क को स्वीकार नहीं करता कि समाजशास्त्रियों ने वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन संबंधी अनुसंधानों की उपेक्षा की है। परंतु मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि समाजशास्त्रियों को साहसपूर्वक, अच्छे तरीके से, व्यापक रूप में और भिन्न तरीके से पर्यावरण परिवर्तन संबंधी अध्ययनों में सहभागिता करनी चाहिए। ■

सभी पत्राचार स्टीवर्ट लॉकी
<stewart.lockie@jcu.edu.au> को प्रेषित करें।

[1] **ISSC and UNESCO (2013)** *World Social Science Report 2013: Changing Global Environments*. **OECD Publishing and UNESCO Publishing, Paris. Available at** http://www.oecd-ilibrary.org/social-issues-migration-health/world-social-science-report-2013_9789264203419-en

[2] **These propositions were first explored in: Hackmann, H. and St. Clair, A. (2012)** *Transformative Cornerstones of Social Science Research for Global Change*. **International Social Science Council, Paris. Available at** http://www.igfagcr.org/images/pdf/issc_transformative_cornerstones_report.pdf

[3] **See especially Moser, Hackmann and Caillods, Chapter 2, "Global environmental change changes everything: Key messages and recommendations."**

[4] **See for example, Lockie, S., Sonnenfeld, D. and Fisher, D. (eds) (2014)** *The Routledge International Handbook of Social and Environmental Change*. **Routledge, London.**

[5] **Chapter 4, "What's the problem? Putting global environmental change into perspective."**

[6] **Chapter 53, "Are increasing greenhouse gas emissions inevitable?"**

[7] **Chapter 83, "Global governance and sustainable development."**

[8] **For example, J. David Tàbara (Chapter 11, "A new vision of open knowledge systems for sustainability: Opportunities for social scientists"), Witchuda Srangiam (Chapter 76, "Social learning and climate change adaptation in Thailand), and Godwin Odok (Chapter 79, "The need for indigenous knowledge in adaptation to climate change in Nigeria").**

[9] http://www.futureearth.info/ **and** http://www.icsu.org/future-earth/

> ताँबा, जल और भूमि
पेरू के पीड्रा अल्टा में खनन कार्य

सैंड्रा पोरटोकेरिरो, सैन मार्कोस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, लीमा, पेरू

पेरु के स्वदेशी समाज के लोग प्रदर्शन में जाते हुए ''अब और खनन नहीं, बहुत हुई चोरी, बहुत हुआ प्रदूषण।''

हाल के वर्षों में (पेरूवियन) पेरू की अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि, निम्न मुद्रा स्फिति और ऋण की गतिशील दरों में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गयी जबकि विनिमय दर स्थिर बनी रही। अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार पेरू एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है जो एक उभरते हुए बाजार के रूप में अपने मजबूत विकास व कम जोखिम के लिए जाना जाता है।

परंतु प्रमुख व्यापक आर्थिक संकेतकों के साथ कब और क्यों किसी देश में ग्रामीण निर्धन वर्ग राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय हो जाता है? पेरू दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ताँबा भण्डार है और क्षेत्र की दृष्टि से विदेशी निवेश को आकर्षित करने में ताँबा खनन पेरू की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2014 के अंत तक पेरू की वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की विकास दर 5.3 प्रतिशत रहने की संभावना है और इस वृद्धि को 2014 से 2017 के बीच 5 प्रतिशत की वार्षिक औसत दर पर बनाये रखने का पूर्वानुमान है। तथापि, आश्चर्यजनक रूप से, धीमी वृद्धि को चुनौती देने वाला मुख्य कारक खनन परियोजनाओं की प्रतिक्रिया से उत्पन्न सामाजिक असंतोष है, परियोजनाओं में देरी के परिणामस्वरूप कारोबारी विश्वास में कमी देखी गयीं, जिसके कारण आगामी 10 वर्षों में खनन क्षेत्र में 53.4 अरब अमेरिकी डॉलर के निवेश की उम्मीद को चुनौती मिलती दिखाई देती है।

पिछले 6 महीनों से, मैं पेरू में दूसरी सबसे बड़ी तांबा खनन कंपनी में एक समाजशास्त्री के रूप में काम कर रहा हूं। यह कंपनी पेरू के सबसे शुष्क क्षेत्र टकना में स्थित है, वर्तमान में इस कंपनी का स्वामित्व मैक्सिको के लोगों के पास है और 1960 के दशक में इसका संचालन दक्षिण पेरू में प्रारम्भ किया गया। मैं निकटतम नगरीय केन्द्र से 2 घंटे की दूरी पर एक सुनसान खनन शिविर में रहता हूं जो कि वातानुकूलित, गर्म पानी, वाई–फाई व केबल टी. वी. की सुविधाओं से युक्त दो कमरों का एक अपार्टमेंट है। जहां मेरे पास एक गोल्फ क्लब, गर्म पानी का स्वीमिंग पुल, टेनिस कोर्ट, जिम तथा मनोरंजन केन्द्रों की सुविधाएं भी हैं। आपरेशन डिवीजन में काम करने वाले खनन श्रमिकों को इन सुविधाओं के उपयोग की अनुमति नहीं है, इन सुविधाओं के उपयोग का विशेषाधिकार मुझ जैसे प्रशासनिक श्रमिकों को ही प्राप्त है।

मैं प्रतिदिन 12 घंटे और सप्ताह में 6 दिन यहां काम करता हूं। अनेक लोग इस उद्योग को पेरू को निर्धनता से बाहर निकालने का एक रास्ता मानते हैं। मुझे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव के क्षेत्रों का दौरा करने की अनुमति प्राप्त है। प्रत्यक्ष प्रभाव के क्षेत्र उन इलाकों में स्थित है जहां खनन कार्य भौगोलिक रूप से स्थित है, इन क्षेत्रों का पर्यावरण परियोजना प्रतिष्ठानों और गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। अप्रत्यक्ष प्रभाव के क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से खनन कार्यों के बाहर के इलाकों में स्थित है परंतु पर्यावरण की दृष्टि से ये क्षेत्र भी खनन परियोजना से प्रभावित हैं।

अपने कार्य के दौरान मुझे इस तथ्य का पता चला कि राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारों द्वारा कराये जाने वाले खनन कार्य से प्राप्त धन को सभी प्रभावित हित धारकों, विशेष रूप से स्थानीय किसानों, को समान रूप से वितरित नहीं किया गया। क्षेत्र कार्य के दौरान मेरे सामने अनेक प्रश्नों में से एक प्रश्न यह उभर कर आया कि निर्धन समुदाय–बहु–अरब–डॉलर वाली खनन परियोजना से मात्र 50 मील की दूरी पर रहते हैं–पेरू के बदलते परिदृश्य को कैसे देखते हैं या

> >

उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया करते हैं? पीड्रा अल्टा समुदाय अभी तक इस बात के लिए प्रदर्शन कर रहा है कि पेरू की गतिशील आर्थिक वृद्धि के पीछे मूलतः विस्थापन है। पेरू के शुष्क तटीय दक्षिणी क्षेत्र में पानी के अभाव ने कृषक परिवारों को प्रेरित किया कि वे ऐसे क्षेत्रों पर कब्जा कर ले जहां उनकी फसलों को उगाने के लिए पानी उपलब्ध हो, यद्यपि ये व्यवसाय सामान्यतः अवैध है। पीड्रा अल्टा एक ऐसा ही समुदाय है।

2001 में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं की मदद से और पुलिस के साथ लगातार हो रहे संघर्षों के बाद लगभग 600 कृषक परिवारों के एक समूह ने खनन अपशिष्ट के लिए बनाये गये एक अवशेष बांध के पानी को छानकर उससे लाभ प्राप्त होने की उम्मीद से राज्य की 10,000 एकड़ भूमि पर कब्जा कर लिया। पीड्रा अल्टा के परिवार टकना के पहाड़ी क्षेत्र से और शुष्क पड़ौसी प्रांतों जैसे–आरक्विपा, कस्को, माकेगुआ और पुनो से आये थे।

प्रारम्भ में, अधिकांश परिवारों ने इस भूमि पर कृषि कार्य के उद्देश्य से ही कब्जा किया था और इस भूमि पर एक माह में तीन बार काम करते थे। पीड्रा अल्टा तक पहुंचने में 5 दिन का समय लगता था और क्योंकि पुलिस किसानों को बेदखल करने के लिए आये दिन छापे डालती थी। इस कारण इस परिवारों ने यही स्थायी रूप से रहने का निश्चय किया और पिड्रा अल्टा को अपना नया घर बना लिया। साक्षात्कार के दौरान, कई निवासियों ने अपनी 'उद्यमशीलता की प्रतिभा' को इस भूमि पर कब्जे का कारण बताया, क्योंकि वे न केवल पानी का उपयोग कर रहे हैं–जोकि अन्यथा सागर में ही फेंका जाता है–अपितु बुनियादी सुविधाओं में भी निवेश कर रहे हैं। शीघ्र ही भूमि पर कब्जा करने के बाद, इन परिवारों ने एक छः मील लम्बी सिंचाई नहर–जो प्रति सैकेण्ड 1000 लीटर पानी का प्रवाह करती है–बनाने के लिए उसमें धन का निवेश किया। पेरू के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार यह पानी फसलों की सिंचाई के लिए सुरक्षित है।

विडम्बना यह है कि अवशेष बांध, अक्सर, एक खनन कंपनी के लिए सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय उत्तरदायित्व होते हैं, परंतु यह अवशेष बांध इन किसानों के अस्तित्व का एकमात्र विकल्प बन गया है। कई वर्षों से विभिन्न फसलों को उगाने की कोशिश करने के बाद, मिट्टी और पानी में लवणता के उच्च स्तर के कारण असफल परिणाम प्राप्त हो रहे थे, पीड्रा अल्टा के निवासियों ने अजवायन, तारा (एक देसी छोटी फली का पेड़) और जैतून की खेती में महारत हासिल कर ली, जो कि भूमि के 70 प्रतिशत हिस्से पर की जाती है।

कृषि की यह सफलता वैधताकरण की थकाऊ प्रक्रिया के कारण जल्दी ही समाप्त भी हो गयी। जटिल कानूनी प्रक्रिया को देखते हुए इस भूमि से सरकारी/अधिकारिक बेदखल करने की कानूनी कार्यवाही में एक दशक से अधिक का समय लगा। अक्टूबर 2013 में, सेरो कोलोराडो की नगरपालिका, वो प्रांत जहां पीड्रा अल्टा स्थित है, ने पीड्रा को एक अधिकारिक/सरकारी समुदाय घोषित कर दिया। इसका अर्थ है कि यह समुदाय अब कानूनी तौर पर संगठित है, अपने प्रमुख (मेजर) का चुनाव कर सकता है और प्रत्येक क्षेत्र को आवंटित खनन रॉयल्टी का एक प्रतिशत प्राप्त कर सकता है।

हालांकि, बड़ी चुनौतियाँ अभी भी सामने हैं। खनन कंपनी जल्दी ही तांबे का दोगुना उत्पादन और कहीं अधिक मात्रा में पानी का उपयोग करके अपने केन्द्रीय प्लांट का विस्तार करेगी। पेरू राज्य के अधिकारियों के समक्ष प्रस्तावित पर्यावरणीय योजना इस बात की पुष्टि करती है कि खनन कार्य में नदी घाटियों से ताजे पानी का अधिक प्रयोग नहीं किया जायेगा। इसके बजाय, अवशेष बांध के पानी को साफ करके प्रयुक्त किया जायेगा। पर्यावरण के कार्यकर्त्ताओं के लिए यह एक अच्छी खबर है परंतु पीड्रा अल्टा के निवासियों के लिए नहीं। क्या होगा जब प्रयुक्त पानी का प्रवाह रूक जायेगा, क्योंकि खनन कार्यों के लिए पानी का पुनः उपयोग किया जा रहा है। यद्यपि, वे अब एक अधिकारिक/सरकारी समुदाय है परंतु जब पानी के अधिकार की बात आती है, पेरू के कानून सभी उत्तरदायित्वों से अपने को अलग कर लेते हैं। परिणामस्वरूप खनन उद्योग के आस–पास पेरू में कई सामाजिक संघर्ष विशेष रूप से जल संसाधनों से सम्बन्धित संघर्ष उभरे हैं। इसके अलावा, पेरू की क्षेत्रीय सरकार में बड़े पैमाने पर व्याप्त भ्रष्टाचार, इस क्षेत्र सहित, ने किसानों के विश्वास को कम किया है–आगामी दशक के लिए इन लोगों के जीने के अधिकार और इस भूमि पर काम करने के अधिकार की कोई भी गारंटी नहीं है। ■

सभी पत्राचार सेंड्रा पोर्टोकरेरो <svnp86@gmail.com> को प्रेषित करें।

> अंतर्राष्ट्रीयकरण एवं अंकेक्षण संस्कृति

चेक समाजशास्त्र का प्रकरण

मार्टिन हेजेक, चार्ल्स विश्वविद्यालय, चेक गणराज्य

जिरि मुसिल (1928–2012), अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त शहरी समाजशास्त्री टी.जी. मासारेक, चेकोस्लवाकिया के पहले प्रेसीडेन्ट के चित्र के सामने भाषण देते हुए।

अंकेक्षण संस्कृति और प्रतिस्पर्धा पर जोर चेक गणराज्य सहित कई देशों के विश्वविद्यालयों और वैज्ञानिक संस्थाओं को प्रभावित करता है। अकादमिक पेशे, वैज्ञानिक विषयों और प्रकाशन रणनीतियों पर इसके प्रभाव का कई बार विश्लेषण किया गया है।[1] तथापि स्थानीय राष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग करने वाले लघु समाजशास्त्रीय समुदायों पर अंकेक्षण संस्कृति के प्रभाव का बहुत कम अध्ययन हुआ है। यह सिर्फ इसलिए नहीं है कि वे व्यापक समाजशास्त्र की तुलना में हाशिये पर होते हैं, बल्कि इसलिए भी कि अंकेक्षण के परिणाम हमेशा सीधे और स्पष्ट नहीं होते। अंकेक्षण के सामर्थ्यकारी और असामर्थ्यकारी दोनों ही प्रभाव हो सकते हैं। इसका सकारात्मक परिणाम यह हो सकता है यह वैज्ञानिकों को स्थानीय सीमाओं से मुक्त कर अंतरराष्ट्रीय समुदाय में घुसने के लिए प्रोत्साहित करता है। नकारात्मक पहलू में यह प्रक्रिया सामान्य रूप से स्थानीय वैज्ञानिक समुदाय और स्थानीय समाजशास्त्र का अवमूल्यन कर सकती है। यही तनाव चेक गणराज्य सहित बौद्धिक जगत के अंतर्गत अंकेक्षण संस्कृति के प्रबल समर्थक और विरोधियों को पैदा करता है।

चेक गणराज्य जैसे छोटे देशों, जहां करीब एक करोड़ लोग निवास करते हैं, में सख्त अंकेक्षण और प्रतिस्पर्धा के समर्थक दावा करते हैं कि सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ही निष्पक्ष रूप से इस बात का निर्णय कर सकता है कि एक अच्छी समाजशास्त्रीय कृति कैसी होती है और कैसी नहीं। वे तर्क देते हैं कि लगभग सौ लोगों का एक स्थानीय वैज्ञानिक समुदाय निश्चय रूप से संकीर्ण होगा और उसकी द्वंद्वरत गुटों और सीमित संसाधनों को प्राप्त करने के लिए प्रतिद्वंद्व करते अस्थाई गठबंधनों में विभाजित होने की संभावना अधिक होगी। अंतरराष्ट्रीय मानकों की वकालत करने वाले दावा करते हैं कि ऐसी परिस्थितियां किसी भी प्रकार के राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षा की गुणवत्ता को जटिल बनाती है। वैज्ञानिक गुणवत्ता को समर्थन देने की बजाय ऐसे मूल्यांकन सिर्फ विषय स्थानीय क्षेत्र की शक्ति संरचना का पुर्ननिर्माण करते हैं।

इसकी तुलना में अंतरराष्ट्रीयकरण और मूल्यांकन कसौटी के मानकीकरण के विरोधी विषय के विकास में स्थानीय संदर्भों के महत्व पर जोर देते हैं। उनका तर्क है कि अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों और समीक्षकों की ओर स्थानांतरण से स्थानीय मुद्दों पर वैश्विक मुद्दों को बढ़त मिल जाती है। वे दावा करते हैं कि एक स्थानीय मुद्दे को वैश्विक मान्यता दिलाने के लिए मुद्दे के सूत्रण को वैश्विक रूप से बोधगम्य बनना होगा। इस क्रम में कई बार इसका सांस्कृतिक अर्थ बदल जाता है या कभी कभी मुद्दे पर से भी ध्यान हट जाता है। जो प्राकृतिक विज्ञानों के लिए सही हो सकता है, जो कुछ अपवादों सहित स्थानीय मुद्दों को रेखांकित नहीं करता है, उसे सामाजिक विद्वानों में लागू नहीं किया जा सकता है, जहां स्थानीय मुद्दे पहले से हावी होते हैं (या कम से कम हाल में हुए हों)।

जैसा कि कई गंभीर विवादों में होता है, दोनों ही पक्ष सही होते हैं और दोनों पहलू–राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय को शोध की गुणवत्ता के मूल्यांकन हेतु माना जाना चाहिए। वृहद विषयक समुदायों में, जो विश्व की किसी एक मुख्य भाषा में संवाद करते हैं, यह संतुलित प्रारूप काफी हद तक व्यावहारिक है, क्योंकि समाज शास्त्र के स्थानीय और वैश्विक आयाम एक दूसरे में गुंथे होते हैं। लेकिन अल्पसंख्यक भाषाई

> >

मिलोस्लाव पेट्रोसेक (1936–2012), प्रसिद्ध चेक समाजशास्त्री जो ''स्थानीय'' मुद्दों पर केन्द्रित थे।

अकादमिक संस्थाओं में, अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण के तरीकों को मुख्य या एकमात्र रूपक के रूप में प्रोत्साहित करना सम्पर्क की भाषा के रूप में देशी भाषा के प्रयोग को कमतर कर सकता है। क्यों? क्योंकि न केवल अंतरराष्ट्रीय दायरे में, अपितु स्थानीय समुदायों में भी (जैसे चेक गणराज्य) अपना योगदान देने के इच्छुक लेखकों को आलेखों को दो तरीकों से लिखना पड़ता है– क्रमशः अंग्रेजी और चेक भाषा। चेक के आलेख सिर्फ चेक भाषी साथियों के बीच ही पढ़े जाते हैं, इसलिए उनका प्रभाव स्थानीय बनकर रह जाता है। दूसरी ओर, अंग्रेजी में लिखे आलेख अंतरराष्ट्रीय पाठकों के लिए अनुकूल होते हैं, इससे चेक समाज वैज्ञानिक समुदाय में उनकी रूचि कम ही रहती है। इससे दो किस्म के लेखन की रचना होती है, जिसे स्थानीय और वैश्विक निर्देशित समाज शास्त्र के बतौर अंकित किया जा सकता है। हालांकि यह मुद्दा साधारण तौर पर महज एक भाषा या अनुवाद का हो सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। इसका महत्व बहुत गहन है, क्योंकि यह स्थानीय अकादेमिकों के शोध के विषयों के चुनाव के साथ–साथ प्रकाशन की नीतियों को भी प्रभावित करता है।

मुझे लगता है कि कुछ पाठक बुदबुदाते हुए अपना सिर हिलायेंगे और कहेंगे, ''यहां कुछ भी नया नहीं है। यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय की दोहरी राह हमेशा मौजूद रहती है। मैं इसे यह मानता हूं। तथापि हाल ही तक सवाल समाजशास्त्री समुदाय के एक हिस्से से ही जुड़ा रहा है और व्यक्तिगत तौर पर समाजशास्त्री अपना रास्ता चुन सकते हैं। उदाहरण के लिए हाल ही में दिवंगत प्रख्यात चेक समाज शास्त्री मिलोस्लाव पेत्रुसेक (1936–2012) स्थानीय निर्देशित समाज शास्त्र के एक आदर्श प्रतिनिधि थे। हालांकि वे वैश्विक समाज शास्त्र और इसके रूझानों से भली भांति परिचित थे (वे कई भाषाएं पढ़ और बोल सकते थे), उन्होंने ज्यादातर चेक भाषा (कभी कभार रूसी और पोलिश में) में लिखा। उनकी बौद्धिक गतिविधियों का गहन प्रभाव चेक बौद्धिक समाज पर पड़ा और चूंकि उनके आलेखों ने इस विषय में लोक धारणा को बदलने में अपनी भूमिका निभायी, उन्होंने व्यापक समाज में समाजशास्त्र की स्थिति को प्रभावित किया। दूसरी ओर, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शहरी समाज शास्त्री जिरी मुसिल (1928–2012) का यूरोपीय सोशलॉजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष (1998–2001) के रूप में स्थानीय की अपेक्षा अंतरराष्ट्रीय प्रभाव अपेक्षाकृत ज्यादा था।[2]

लेकिन जो एक समय में व्यक्तिगत अभिरूचि या फिर ईश्वरीय रूझान था, अब ऐसा नहीं नहीं हैं। अंकेक्षण और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति सिर्फ एक ही तरह के समाज शास्त्र को जानती है और वह है वैश्विक निर्देशित वाली। स्थानीय विवादों की ओर निर्देशित प्रत्येक चीज को औसत माना जाता है। स्थानीय निर्देशित समाज शास्त्र के प्रतिनिधियों को अपने शोध के लिए शायद ही फंड उपलब्ध हो पाता है और उन्हें अपर्याप्त अंतरराष्ट्रीय प्रभाव की गैर मौजूदगी में वे अकादमिक पद भी हासिल नहीं होते हैं। अतः तरह चेक गणराज्य के समाज शास्त्रियों के लिए यह अतार्किक है कि वे चेक भाषा में पाठ्य पुस्तके लिखें। इससे उनकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती अपितु ऐसा प्रयास इस संकेत के रूप में लिया जाता है कि शोधकर्ता ने अपने अंतरराष्ट्रीय कैरियर को छोड़ दिया है। इसका परिणाम यह होता है कि चेक विद्यार्थी गिडेन्स जैसे लेखकों की वैश्विक स्तर की किताबों से सीखते हैं, जो उन्हें बताती है कि अमेरिका और ब्रिटेन मे समाज कैसे काम करते हैं। ये समाज उन्हें सभी स्थानीय स्थितियों को समझने में मार्गदर्शक का काम करते हैं। स्थानीय समुदाय से नई समाजशास्त्रीय शब्दावली का परिचय, विषय के विद्वानों से नहीं अपितु अनुवादकों द्वारा होता है। स्थानीय लोग भी समाज शास्त्र की आज के समाज की समझ को वैश्विक लेखकों के अनुवादों द्वारा समझ पाते हैं, जिनमें स्थानीय स्थितियों की चर्चा हाशिये पर ही होती है।

अंकेक्षण की संस्कृति और प्रतिस्पर्धा स्थानीय निर्देशित समाज विज्ञान की बजाय वैश्विक निर्देशित समाज विज्ञान को ज्यादा महत्व देती है। यदि वैज्ञानिक श्रेष्ठता का अर्थ वैश्विक अकादमिकों द्वारा पहचाना जाना है तो ज्यादातर विद्वान अपने प्रकाशनों को अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशित कराना उचित समझेंगे और बिल्कुल ऐसा ही चेक गणराज्य के ज्यादातर युवा समाज वैज्ञानिक आज कर रहे हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ शोध वैश्विक पत्रिकाओं में अंग्रेजी में प्रकाशित होता है।

मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं कि स्थानीय निर्देशित या राष्ट्रीय समाज शास्त्र वैश्विक निर्देशित (या अंतरराष्ट्रीय) शोध से अधिक मूल्यवान है। कई मामलों में (क्या मुझमें अधिकांश कहने का साहस है?) स्थानीय निर्देशित शोध और प्रकाशन गुणवत्ता में औसत दर्जे के होते हैं। फिर भी वे एक माध्यम हैं, जिनसे भाषाई तौर पर लघु बौद्धिक समुदाय अपनी स्थानीय स्थितियों को प्रकट करता है और अपने विचार छात्रों और सामान्य लोगों के बीच बांटता है। वैश्विक रूप से प्रकाशित करने के दबाव के संदर्भ में अकादमिक समाजशास्त्र के स्थानीय लोगों से बातचीत करने के प्रयासों को 'महज परिणामों के निस्तारण' के रूप में अवमूल्यन किया जाता है। यह एक ऐसी गतिविधि है जिसे 'विज्ञान' कतई नहीं कहा जा सकता है। वैश्विक निर्देशित समाज विज्ञान इस विचार को पोषित करता है कि वैश्विक समाज अंततः स्थानीयता की ओर जाता है और स्थानीयता की ओर जाने का क्रम एक वैश्विक प्रक्रिया की ओर जाने से अलग और कुछ भी नहीं है। ■

सभी पत्राचार मार्टिन हेजेक <hajek@fsv.cuni.cz> को प्रेषित करें।

[1] **See, for example, Holmwood, J. (2010) "Sociology's misfortune: disciplines, interdisciplinarity and the impact of audit culture."** *The British Journal of Sociology*, **61(4), 639-658.**

[2] **Looking at Czech society from a more general perspective, the great scientific, artistic or political figures of the past were also often either locally or globally directed. A well known pair of Czech music composers, Bedřich Smetana (1824-1884) and Antonín Dvořák (1841-1904), come to mind; the former cherished mainly in the Czech lands, the latter appreciated globally.**

> समाजशास्त्र के खतरे

चेक भूमि से टिप्पणियां

फिलिप वोस्टल, चार्ल्स विश्वविद्यालय एवं अकादमी ऑफ साईंसेज, चेक रिपब्लिक

समाजशास्त्र का संतुलन का कार्य – बंधे हुए, लेकिन फिर भी चलने योग्य, खतरनाक।

प्रीकेरियस शब्द बहुधा 'मजबूत नहीं, सुरक्षित नहीं और अस्थिर' जैसी स्थितियों को वर्णित करता है। प्रीकेरियस में निहित ये तीनों ही स्थितियां समुचित रुप से समकालीन समाजशास्त्र के चरित्र को दर्शाती हैं। प्रथमतः समाजशास्त्र की अस्थिरता व्यापक सामाजिक–तकनीकी रुझानों द्वारा सामाजिक ज्ञान के उत्पाद को पुनर्रुपायित करने के तरीकों को दर्शाती है। दूसरा, नवउदारवादी नेतृत्व के मद्धेनजर बौद्धिक समाज के रुपांतरण को ध्यान में रखते हुए समाजशास्त्र एक बढ़ता हुआ अस्थिर विषय है। तीसरा, इस शब्द को समाजशास्त्र के विश्लेषण की इकाई की व्याख्या में प्रयोग में लाया जा सकता है; एक सामाजिक विश्व जो अस्थिर और असाधारण है। अंतरराष्ट्रीय वाद विवाद जहां में इस विषय के इन पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है, इसके स्थानिक, क्षेत्रीय और आंचलिक प्रकटीकरण और तनावों की अक्सर उपेक्षा कर दी जाती है। यह आलेख इस प्रकार चेक संदर्भ में कतिपय व्यापक वैश्विक विकास संबंधों की चर्चा करता है।

चलिए, समाजशास्त्र के आंतरिक आयामों से शुरुआत करते हैं। निःसंदेह इक्कीसवी सदी के समाजशास्त्र की आधारभूत चुनौतियों में से एक तथ्य संग्रहण की नई विधियाँ और नये कंप्यूटर, डिजिटल और सोफ्टवेयर संरचनाओं के प्रति इसकी प्रतिक्रिया है। परंपरिक अनुभवजन्य विधियों (जैसे सर्वेक्षण और साक्षात्कार) को कर्ताओं की क्षमता (बहुधा निजी), जैसे तुरंत योग करने, छांटने और बडे पैमाने पर लेनदेन के आंकडों को विश्लेषित करने आदि से चुनौती मिल रही है। अभूतपूर्व क्षेत्र और आकार के आंकडे, आंकडा संग्रहण की डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया और इससे सम्बन्धित तीव्रीकरण ने न सिर्फ प्राविधिक उपकरणें को चुनौती दी है, अपितु शायद ये समाजशास्त्र के तार्किक सिद्धांतीकरण को भी प्रभावित करेगी। क्या हम अभी भी ''सामाजिक'' को एक सर्व कारकीय व्याख्यात्मक संवर्ग के रुप में मान सकते है? क्या सिद्धांतीकरण को डिजिटल और मानवीय/जैवकीय दोनों ही के लिए स्थान मुहैया करवाना होगा? धार्मिक और धर्म निरपेक्षों के लिए? सार्वभौमिक और एकल/खास आयामों के लिए? अब समाजशास्त्र अपेक्षाकृत स्थिर सामाजिक सार्वभौमिक संरचनाओं और विभेदों के साथ ''अपवाद की अवस्थाओं'', प्रवाही मण्डल एवं परिवर्तनशील संजालों की भी जांच करता है। सामाजिक सैद्धान्तिकरण वर्तमान में वर्ग, लिंग, राष्ट्रीयता और नस्लीयता जैसे पारंपरिक संवर्गो के साथ आपातकालीन स्थितियाँ, दुर्घटना, जोखिम, जमघट एवं प्रभावों को भी जगह देता है। परंपरागत रुप में समाज को समझने के लिए समाजशास्त्र को उससे कालावधि और स्थानिक दूरियों की आवश्यकता होती है परन्तु कतिपय समकालीन सैद्धान्तिक धाराएँ शायद इक्कीसवीं सदी के सामाजिक जीवन के रुझान : व्यापक और अस्थिरता, उलझन और त्वरण/गतिशीलता को साकार एवं अंगीकार करती है और प्रतिबिंबित करती है।

समाजशास्त्र की अस्थिरता कभी कभी स्थानीय, बहुधा गैर–डिजिटल समाजशस्त्रीय आचार जो विभिन्न लय और रफ्तार में चलती रहती हैं, एवं डिजिटल चुनौतियों के मध्य संघर्ष के रुप में व्यक्त होती है। कुछ तरीके (अनुभवजन्य एवं सैद्धान्तिक) डिजिटल चुनौती का प्रतिरोध करते हैं; उदाहरण के लिए समाजशास्त्र की स्थानिक/क्षेत्रीय जडताऐं, एक ऐसी विशेषता जो अक्सर स्वभाव प्रकृति से एक विशिष्ट बौद्धिक पथ पर निर्भर और राष्ट्रीय समाजशास्त्र के स्थित इतिहास द्वारा निरुपित किये जाते हैं। माइक्ल सवार्ड सुझाते हैं कि ''धीमें'' सिद्धन्त में सूक्ष्म विचार और संस्कृति और व्यक्तिगतता के प्रति आग्रह मौजूद होता है जो स्थित और प्रथागत मूल्यों पर ठहर जाता है और कई विचारों और फैसलों को ध्यान में रखते हुए यह एक ''स्थापित ज्ञान के उत्पाद'' का दामन थाम लेता है। स्थित और तार्किक रुप से ''धीमें'' (क्योंकि वे समय अधिक लेते हैं), नृवंशीय और मानव वैज्ञानिक टिप्पणियाँ डिजिटलाइजेशन एवं त्वरित संबधों

> >

के सामने महत्ता खो देते हैं। अन्य कई स्थानीय समाजशास्त्रों की तरह चेक समाजशास्त्र भी एक तरफ आंतरिक ''स्थानिक विशिष्टता'' और इतिहासजनित विकास और दूसरी तरफ अन्यत्र से आते बौद्धिक प्रभाव के साथ डिजिटल विकास और पारदेशीय आकार के बुनियादी दावे के रुझान के मध्य संभवतः फंसा रहेगा।

लेकिन शायद सबसे ज्यादा जिस खतरे का समाजशास्त्र आज सामना कर रहा है, वह इसके पुनरुत्पादन को आकार देने वाली बाह्य स्थितियों से है। बाजार – वैचारिकी, वस्तुकरण और कार्पोरेट शासन ने पूरे विश्व में बौद्धिक जीवन को पंगु बना दिया है। इन वास्तविकताओं का वैयक्तिक बौद्धिकता पर उलझन वाला, यद्यपि असमान रूप से वितरित प्रभाव है; बढ़ता तनाव, अक्रियाशीलता, और मनोवैज्ञानिकत विकलता। हर जगह के पर्यवेक्षक अकादमिक समय – और इसक सांस्कृतिक, संरचनात्मक और अनुभवजन्य आयामों मे बदलाव के साथ समाजशास्त्र के अन्दर आलोचनात्मक वैचारिकी पर दबाव को महसूस कर रहे हैं। एग्लो–अमरीकी संदर्भ अकादमिक समाज की अस्थायी संरचना पर नव उदारवादी परिवर्तनों के प्रभाव का अन्वेषण करने वाली महत्वपूर्ण ''प्रयोगशाला'' बने रहते हैं परन्तु गतिशील प्रबन्धकीय ''ज्ञान फैक्ट्री''की तरफ क्रमिक बदलाव विश्व के अन्य भागों (चेक शैक्षिणिक जगत सहित) में भी स्पष्ट रुप से दिखाई देता हैं।

तथापि, उदाहरण के लिए जब मैं अपने ब्रितानी सहकर्मियों से बात करता हूँ – श्रम परिस्थितियों या फिर पढने, लिखने और शोध करने के लिए अपेक्षित समय दोनों ही अभी भी चेक बौद्धिक समाज से भिन्न दिखाई देते हैं। वास्तव में कुछ कुख्यात वाक्यपटुताऐं – श्रेष्ठता, नवाचार, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था यद्यपि चेक बौद्धिक समाज के नीतिगत स्थान को ग्रसित करती है, हमारी व्यवस्था अभी भी अमरीकी या ब्रितानी कैंपस उपन्यास जैसे फाईट फॉर योर लांग डे या क्रम्प में वर्णित अकादमिक यथार्थ से तुलनात्मक रुप से दूर है। चेक राजनीतिक वर्ग द्वारा नव उदारवादी मॉडल के अपनाये जाने और चेक अकादमिक जगत को वश में करने के लगातार प्रयासों और वस्तुकरण एवं बाजारीकरण के नियमों को लागू करने के बावजूद चेक अकादमिक जगत अन्यत्र से अपने सहयोगियों द्वारा अपनाये गये अनवरत प्रबन्धकीय और व्यापार आदर्शों का अभी भी प्रतिरोध करता है। आस्ट्रेलियाई दार्शनिक कोनारड़ पी लैसमैन द्वारा शैक्षणिक समाज एवं मानवीकी में होने वाले वर्तमान बदलावों की कठोर आलोचना चेक अकादमिक जगत एवं अकादमिक प्रबन्धकों द्वारा व्यापक रुप से उठाई गई है। जब इतिहासकार हावर्ड हॉटसन, जो ब्रिटिश विश्वविद्यालयो में सुधार के प्रखर आलोचक रहे हैं, ने चेक श्रोताओं से बात की तो उनके निष्कर्ष विज्ञान अकादमियों और चक विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियो द्वारा अनारक्षित रुप से समर्थित किये गये। एक बहादुर और नये वस्तुकृत – बाजारी बौद्धिक समाज को यहां मध्य यूरोप में चुनौतियों का सामना करना पड. सकता है।

हालांकि, स्थानीय प्रतिरोध के साथ भी विश्व भर मे शैक्षणिक जगत् को घेरने वाले नव उदारवादी रुझान स्थानीय और क्षेत्रिय समाजशास्त्र को नई आकृति दे सकते हैं। तथापि, ये दबाव ऐसे समय में आये हैं जब इक्कीसवीं सदी की सामाजिक दुनियां ने जटिलताओं, विखण्डन के ऐसे स्तरों को प्राप्त किया है जो नये सिद्धान्त के साथ – साथ वैश्विक पूँजीवादी ''आधुनिकता का उत्प्रेरण किस प्रकार स्थानीय स्तर पर होता है (और इसके विपरीत कैसे स्थानीय मुद्धे वैश्विक हो जाते हैं) के कठोर विश्लेषण की आवश्यकता पर बल देता है। वर्तमान परिस्थितियों में हमें एक ऐसे समाजशास्त्र की आवश्यकता है जो इस प्रकार की आधुनिकता का वर्णन, व्याख्या और इसके बारे में कुछ करे।

तीसरी प्रकार की अस्थिरता समाजशास्त्र को इस चुनौती का सामना करने में मदद कर सकती है। सामाजिक यथार्थ के बारे में लगातार प्रश्न एवं पूछताछ किसी भी व्याख्यात्मक और सकारात्मक पूछताछ में महत्वपूर्ण आवश्यकता बनी रहती है। इसके अलावा सामाजिक प्रघटना, प्रक्रियाएँ, विचारधाराएँ, संस्थाएँ और सम्बन्धों को व्याख्या और आलोचना की वस्तु के रुप में लगातार अप्राकृतिक माना जाना चाहिए। चेक समाजशास्त्री मिलास्लाव पेत्रसेक (1936–2012) ने साहित्य, कला और समाजशास्त्र के मध्य सम्बन्ध पर विशिष्ट ध्यान दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि साहित्य समाज के बारे में प्रमाण प्रदान कर सकता है। समाजशास्त्र स्वाभाविक रुप से मानविकी और साहित्य के साथ मिलकर एक अन्तः वैषयिक प्रतिष्ठान के तौर पर बना रह सकता है। और उसी समय समाजशास्त्र सामान्य पैराडाइम और संस्थागत आधार के साथ ''सामान्य विज्ञान'' भी है। इसी अन्तः मध्य अस्थिरता ने समाजशास्त्र को सामाजिक दुनियां में उपस्थित आश्चर्य और पहेलियों को प्रकाशित करने वाले अनूठे विषय के रुप में प्रस्तुत किया है। ■

सभी पत्राचार फिलिप वोस्ताल <filip.vostal@gmail.com> को प्रेषित करें।

> वैश्विक संवाद का अरबी दल

मुनीर सैयदानी, अल मनार विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया

फरवरी 2011 के अंत में सारी हनाफी ने मुझे एक ई–मेल की और पूछा कि क्या मैं वैश्विक संवाद के अरबी संस्करण के लिए कोई अनुवादक ढूंढ सकता हूँ। मैंनें इसे ट्यूनीशियन क्रान्ति के एक सुखद नतीजे के रूप में देखा जो कि ज़ेन अल–दिने बेन अली के पराभव के कुछ सप्ताह बाद ही हुआ है। हालाँकि मैं सोचता था कि क्या मेरी अंग्रेजी व्यक्तिगत रुप से यह काम करने के लिए पर्याप्त अच्छी है। अनुवादक खोजने के मेरे प्रयासों के असफल होने पर मैंनें खुद ही ऐसा करने का निश्चय किया यद्यपि इसके फ्रेंच संस्करण के द्वारा से जो आई.एस.ए. की वैबसाइट पर पहले से ही उपलब्ध था। तीन माह पश्चात अगले अंक के लिए मैंनें सीधे अंग्रेजी से अरबी में अनुवाद करने का तय किया जो कि मैं सारी की दोस्ताना मदद से अब तक कर रहा हूँ। मेरे फेसबुक पेज पर मैं प्रत्येक अंक की घोषणा करता हूँ ताकि अरब के समाजशास्त्री वैश्विक संवाद के अरबी संस्करण के बारे में जान सकें। मेरी अंग्रेजी अच्छी और अच्छी होती जा रही है, अनुवाद कार्य से दुनिया भर के पाठ्य पुस्तकों के संदर्भों तक व्यापक पहुंच समाजशास्त्रीय ज्ञान की प्यास बुझाता है। अनुवाद कार्य के क्षेत्र में विश्वभर के अनुभव, नई सैद्धान्तिक पद्धतियाँ तथा इसी प्रकार नवीनतम समाजशास्त्रीय शोध की जानकारी मिलती है, जो कि बहुत शिक्षाप्रद है। इस प्रकार जब मै वैश्विक संवाद को अरबी में अनुदित करता हूँ बहुत सीखता हूँ। अंकारा में समाजशास्त्र की राष्ट्रीय परिषदों की 2013 की बैठक दूसरे देशों के कुछ अनुवादकों से मिलने का एक अच्छा अवसर रहा। एक आश्चर्यजनक अनुभव का हिस्सेदार बनना अपने आप में एक महान गर्व का स्त्रोत है। अब यह मुझे मेरे कार्यों को अंग्रेजी मे छापने के लिए प्रेरित कर रहा है, अपनी पत्रिका द्वारा मेरे लिए एक दूसरा उपहार। ■

मुनीर सैयदानी 2012 से मुनीर ट्यूनीशिया के अल मनार विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के हाई ईन्सटीट्यूट आफ ह्यूमन साईन्सेज में सह–प्राध्यापक है। 2000 से 2012 तक उन्होंने सफैक्स विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र पढ़ाया। इससे पहले अट्ठारह वर्ष तक वह एक सैकेण्डरी स्कूल में फ्रेंच के अध्यापक रहे। उनकी शोध अभिरुचियां सामाजिक परिवर्तनों के मद्धेनजर सांस्कृति, कला एवं ज्ञान के समाजशास्त्र के इर्द–गिर्द रहती है। उनकी सात पुस्तकें इन्ही मसलों पर छप चुकी हैं (अरबी में)। वह हाई ईन्सटीट्यूट आफ ह्यूमन साईन्सेज के प्लुरी–डिसिप्लेनेरी प्रयोगशाला के सदस्य हैं तथा ऐनलाइटमेन्ट, आधुनिकता तथा सांस्कृतिक भिन्नता पर कार्यरत हैं।

सारी हनाफी वर्तमान में अमेरिकन विश्वविद्यालयए बेरुत में समाजशास्त्र के प्राध्यापक हैं तथा अरबी भाषा की पत्रिका, इदाफातः द अरब जरनल आफॅ सोशियोलॉजी के सम्पादक हैं। 2014 की योकोहामा में हुई आई.एस.ए. की विश्व कॉंग्रेस में वह राष्ट्रीय परिषदों के उपाध्यक्ष चुने गये हैं। वह अरब काउन्सिल आफॅ सोशल साईन्सेज के सदस्य भी हैं। फिलिस्तीनी प्रवासी तथा शरणार्थीयो; प्रवास का समाजशास्त्र; वैज्ञानिक अनुसंधान की राजनीति; नागरिक समाज और अभिजात वर्ग के गठन और संक्रमण ाकालीन न्याय पर उनके कई लेख जर्नल्स में तथा पुस्तकों के अध्याय प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी हाल ही की पुस्तकें हैं: यूएनआरडब्लूए तथा फिलिस्तीनी शरण ार्थीः फ्राम रिलीफ टू ह्यूमन डवलपमेंट (एल. टाक्केनबर्ग तथा एल. हिलाल के साथ सम्पादित, 2014); द पावर आफ इनक्लूजिव एक्सक्लूजनः अनाटोनी आफॅ इजराइली रुल इन द आक्यूपाइड फिलिस्तीनी टेरिटेरीज (ए. ओफिर तथा एम गिवोनी के साथ सम्पादित, 2009, अरबी तथा अंग्रेजी मे)। उनकी आनेवाली पुस्तक है – अरब रिसर्च एण्ड नॉलेज सोसाईटीः द इम्पासिबल प्रोमिज (रिगस अरवानितिज के साथ)।

सभी पत्राचार मुनीर सैयदानी <mounisai@yahoo.fr> और
सारी हनाफी <sh41@aub.edu.lb> को प्रेषित करें।